गुरुत्व कार्यालय द्वारा प्रस्तुत... 21 अक्टूबर से 27 अक्टूबर 2018

गुरुत्व ज्योतिष

साप्ताहिक ई-पत्रिका



- शरद पूर्णिमा का महत्व
- कोजागरी पूर्णिमा
- करवा चौथ व्रत
- कार्तिक स्नान का आध्यात्मिक
- कार्तिक स्नान
- रत्नों का अद्भुत रहस्य
- धार्मिक कार्यों में माला चयन
- अंक यन्त्रों की विशिष्टता
- यंत्र द्वारा वास्तु दोष निवारण
- प्रकृति की अलौकिक देन रुद्राक्ष
- स्वप्न फल विचार
- अंक ज्योतिष का रहस्य

NON PROFIT PUBLICATION

FREE
E CIRCULAR

गुरुत्व ज्योतिष
साप्ताहिक ई-पत्रिका
21 अक्टूबर से
27 अक्टूबर-2018

संपादक

चिंतन जोशी

संपर्क

गुरुत्व ज्योतिष विभाग

गुरुत्व कार्यालय

92/3. BANK COLONY,
BRAHMESHWAR PATNA,
BHUBNESWAR-751018,
(ODISHA) INDIA

फोन

91+9338213418,
91+9238328785,

ईमेल

gurutva.karyalay@gmail.com,
gurutva_karyalay@yahoo.in,

वेब

www.gurutvakaryalay.com

www.gurutvakaryalay.in

http://gk.yolasite.com/

www.shrigems.com

www.gurutvakaryalay.blogspot.com/

पत्रिका प्रस्तुति

चिंतन जोशी,

गुरुत्व कार्यालय

फोटो ग्राफिक्स

चिंतन जोशी,

गुरुत्व कार्यालय

गुरुत्व ज्योतिष साप्ताहिक ई-पत्रिका में लेखन हेतु फ्रीलांस (स्वतंत्र) लेखकों का स्वागत हैं...✍

गुरुत्व ज्योतिष साप्ताहिक ई-पत्रिका में आपके द्वारा लिखे गये मंत्र, यंत्र, तंत्र, ज्योतिष, अंक ज्योतिष, वास्तु, फेंगशुई, टैरों, रेकी एवं अन्य आध्यात्मिक ज्ञान वर्धक लेख को प्रकाशित करने हेतु भेज सकते हैं।

अधिक जानकारी हेतु संपर्क करें।

GURUTVA KARYALAY
BHUBNESWAR-751018, (ODISHA) INDIA
Call Us: 91 + 9338213418,
91 + 9238328785
Email Us:- gurutva_karyalay@yahoo.in,
gurutva.karyalay@gmail.com

अनुक्रम

स्थायी और अन्य लेख

प्रिय आत्मिय,

बंधु/ बहिन

जय गुरुदेव

संपादकीय

हिंदू पंचांग के अनुसार पूरे वर्ष में बारह पूर्णिमा आती हैं। पूर्णिमा के दिन चंद्रमा अपने पूर्ण आकार में होता है। पूर्णिमा पर चंद्रमा का अतुल्य सौंदर्य देखते ही बनता है। विद्वानो के अनुसार पूर्णिमा के दिन चंद्रमा पूर्ण आकार में होने के कारण वर्ष में आने वाली सभी पूर्णिमा पर्व के समान हैं। लेकिन इन सभी पूर्णिमा में आश्विन मास कि पूर्णिमा सबसे श्रेष्ठ मानी गई है।

यह पूर्णिमा शरद ऋतु में आने के कारण इसे शरद पूर्णिमा भी कहते हैं। शरद ऋतु की इस पूर्णिमा को पूर्ण चंद्र का अश्विनी नक्षत्र से संयोग होता है। अश्विनी जो नक्षत्र क्रम में प्रथम नक्षत्र हैं, जिसके स्वामी अश्विनीकुमार है मान्यता के अनुशार च्यवन ऋषि को आरोग्य का पाठ और औषधि का ज्ञान अश्विनीकुमारों ने ही दिया था। यही ज्ञान आज हजारों वर्ष बाद भी हमारे पास अनमोल धरोहर के रूप में संचित है। अश्विनीकुमार आरोग्य के स्वामी हैं और पूर्ण चंद्रमा अमृत का स्रोत। यही कारण है कि ऐसा माना जाता है कि इस पूर्णिमा को ब्रह्मांड से अमृत की वर्षा होती है।

शरद पूर्णिमा की रात में गाय के दूध से बनी खीर को चंद्रमा कि चांदनी में रखकर उसे प्रसाद-स्वरूप ग्रहण किया जाता है। पूर्णिमा की चांदनी में 'अमृत' का अंश होता है, इस लिये मान्यता यह है कि ऐसा करने से चंद्रमा की अमृत की बूंदें भोजन में आ जाती हैं जिसका सेवन करने से सभी प्रकार की बीमारियां आदि दूर हो जाती हैं। आयुर्वेद के ग्रंथों में भी शरद पूर्णिमा की चांदनी में औषधीय महत्व का वर्णन मिलता है। दूध से बनी खीर को चांदनी में रखकर के असाध्य रोगों की दवाएं खिलाई जाती है।

विद्वानों के मतानुसार शरद पूर्णिमा हेतु प्रदोष काल और निशीथ काल दोनों की पूर्णिमा मानी जाती है । यदि पूर्णिमा तिथि दों दिन की हो, लेकिन प्रथम दिन निशीथ व्यापिनी हो और दूसरे दिन प्रदोष व्यापिनी पूर्णिमा न हो तो पहले दिन की पूर्णिमा का व्रत करना चाहिये ।

इस दिन व्यक्ति विधिपूर्वक स्नान करके व्रत-उपवास रखने का विधान हैं। इस दिन श्रद्धा भाव से ताँबे या मिट्टी के कलश पर वस्त्र से ढँकी हुई स्वर्णमयी लक्ष्मी की प्रतिमा को स्थापित किया जाता हैं। फिर लक्ष्मी जी कि भिन्न-भिन्न उपचारों से पूज-अर्चना करने का विधान हैं। सायंकाल में चन्द्रोदय होने पर सोने, चाँदी अथवा मिट्टी के घी से भरे हुए दीपक जलाने कि परंपरा हैं।

इस साप्ताहिक ई-पत्रिका में संबंधित जानकारीयों के विषय में साधक एवं विद्वान पाठको से अनुरोध हैं, यदि दर्शाये गए मंत्र, श्लोक, यंत्र, साधना एवं उपायों या अन्य जानकारी के लाभ, प्रभाव इत्यादी के संकलन, प्रमाण पढ़ने, संपादन में, डिजाईन में, टाईपींग में, प्रिंटिंग में, प्रकाशन में कोई त्रुटि रह गई हो, तो उसे स्वयं सुधार लें या किसी योग्य ज्योतिषी, गुरु या विद्वान से सलाह विमर्श कर ले । क्योकि विद्वान ज्योतिषी, गुरुजनो एवं साधको के निजी अनुभव विभिन्न मंत्र, श्लोक, यंत्र, साधना, उपाय के प्रभावों का वर्णन करने में भेद होने पर कामना सिद्धि हेतु कि जाने वाली वाली पूजन विधि एवं उसके प्रभावों में भिन्नता संभव हैं।

आपका जीवन सुखमय, मंगलमय हो परमात्मा की कृपा
आपके परिवार पर बनी रहे। परमात्मा से यही प्राथना हैं…

चिंतन जोशी

***** साप्ताहिक ई-पत्रिका से संबंधित सूचना *****

- ई-पत्रिका में प्रकाशित सभी लेख गुरुत्व कार्यालय के अधिकारों के साथ ही आरक्षित हैं।
- ई-पत्रिका में वर्णित लेखों को नास्तिक/अविश्वासु व्यक्ति मात्र पठन सामग्री समझ सकते हैं।
- ई-पत्रिका के लेख आध्यात्म से संबंधित होने के कारण भारतिय धर्म शास्त्रों से प्रेरित होकर प्रस्तुत किया गया हैं।
- ई-पत्रिका में प्रकाशित लेख से संबंधित किसी भी विषयो कि सत्यता अथवा प्रामाणिकता पर किसी भी प्रकार की जिन्मेदारी कार्यालय या संपादक कि नहीं हैं।
- ई-पत्रिका में प्रकाशित जानकारीकी प्रामाणिकता एवं प्रभाव की जिन्मेदारी कार्यालय या संपादक की नहीं हैं और ना हीं प्रामाणिकता एवं प्रभाव की जिन्मेदारी के बारे में जानकारी देने हेतु कार्यालय या संपादक किसी भी प्रकार से बाध्य हैं।
- ई-पत्रिका से संबंधित लेखो में पाठक का अपना विश्वास होना आवश्यक हैं। किसी भी व्यक्ति विशेष को किसी भी प्रकार से इन विषयो में विश्वास करने ना करने का अंतिम निर्णय स्वयं का होगा।
- ई-पत्रिका से संबंधित किसी भी प्रकार की आपत्ती स्वीकार्य नहीं होगी।
- ई-पत्रिका से संबंधित लेख हमारे वर्षों के अनुभव एवं अनुशंधान के आधार पर दिए गये हैं। हम किसी भी व्यक्ति विशेष द्वारा प्रयोग किये जाने वाले धार्मिक, एवं मंत्र- यंत्र या अन्य प्रयोग या उपायोकी जिन्मेदारी नहिं लेते हैं। यह जिन्मेदारी मंत्र- यंत्र या अन्य उपायोको करने वाले व्यक्ति कि स्वयं कि होगी।
- क्योकि इन विषयो में नैतिक मानदंडों, सामाजिक, कानूनी नियमों के खिलाफ कोई व्यक्ति यदि नीजी स्वार्थ पूर्ति हेतु प्रयोग कर्ता हैं अथवा प्रयोग के करने मे त्रुटि होने पर प्रतिकूल परिणाम संभव हैं।
- ई-पत्रिका से संबंधित जानकारी को माननने से प्राप्त होने वाले लाभ, लाभ की हानी या हानी की जिन्मेदारी कार्यालय या संपादक की नहीं हैं।
- हमारे द्वारा पोस्ट किये गये सभी जानकारी एवं मंत्र-यंत्र या उपाय हमने सैकडोबार स्वयं पर एवं अन्य हमारे बंधुगण पर प्रयोग किये हैं जिस्से हमे हर प्रयोग या कवच, मंत्र-यंत्र या उपायो द्वारा निश्चित सफलता प्राप्त हुई हैं।
- ई-पत्रिका में गुरुत्व कार्यालय द्वारा प्रकाशित सभी उत्पादों को केवल पाठको की जानकारी हेतु दिया गया हैं, कार्यालय किसी भी पाठक को इन उत्पादों का क्रय करने हेतु किसी भी प्रकार से बाध्य नहीं करता हैं। पाठक इन उत्पादों को कहीं से भी क्रय करने हेतु पूर्णतः स्वतंत्र हैं।

अधिक जानकारी हेतु आप कार्यालय में संपर्क कर सकते हैं।

(सभी विवादो केलिये केवल भुवनेश्वर न्यायालय ही मान्य होगा।)

शरद पूर्णिमा 24-अक्टूबर-2018

संकलन गुरुत्व कार्यालय



हिंदू पंचांग के अनुसार पूरे वर्ष में बारह पूर्णिमा आती हैं। पूर्णिमा के दिन चंद्रमा अपने पूर्ण आकार में होता है। पूर्णिमा पर चंद्रमा का अतुल्य सौंदर्य देखते ही बनता है। विद्वानो के अनुसार पूर्णिमा के दिन चंद्रमा पूर्ण आकार में होने के कारण वर्ष में आने वाली सभी पूर्णिमा पर्व के समान हैं। लेकिन इन सभी पूर्णिमा में आश्विन मास कि पूर्णिमा सबसे श्रेष्ठ मानी गई है। यह पूर्णिमा शरद ऋतु में आने के कारण इसे शरद पूर्णिमा भी कहते हैं। शरद ऋतु की इस पूर्णिमा को पूर्ण चंद्र का अश्विनी नक्षत्र से संयोग होता है। अश्विनी जो नक्षत्र क्रम में प्रथम नक्षत्र हैं, जिसके स्वामी अश्विनीकुमार है।

कथा के अनुशार च्यवन ऋषि को आरोग्य का पाठ और औषधि का ज्ञान अश्विनीकुमारों ने ही दिया था। यही ज्ञान आज हजारों वर्ष बाद भी हमारे पास अनमोल धरोहर के रूप में संचित है। अश्विनीकुमार आरोग्य के स्वामी हैं और पूर्ण चंद्रमा अमृत का स्रोत। यही कारण है कि ऐसा माना जाता है कि इस पूर्णिमा को ब्रह्मांड से अमृत की वर्षा होती है।

खीर का भोग

शरद पूर्णिमा की रात में गाय के दूध से बनी खीर को चंद्रमा कि चांदनी में रखकर उसे प्रसाद-स्वरूप ग्रहण किया जाता है। पूर्णिमा की चांदनी में 'अमृत' का अंश होता है, इस लिये मान्यता यह है कि ऐसा करने से चंद्रमा की अमृत की बूंदें भोजन में आ जाती हैं जिसका सेवन करने से सभी प्रकार की बीमारियां आदि दूर हो जाती हैं। आयुर्वेद के ग्रंथों में भी शरद पूर्णिमा की चांदनी में औषधीय महत्व का वर्णन मिलता है। दूध से बनी खीर को चांदनी में रखकर के असाध्य रोगों की दवाएं खिलाई जाती है।

शरद पूर्णिमा की कथा:

एक साहुकार के दो पुत्रियाँ थी। दोनो पुत्रियाँ शरद पुर्णिमा का व्रत रखती थी। परन्तु बडी पुत्री पूरा व्रत करती थी और छोटी पुत्री अधुरा व्रत करती थी।

परिणाम यह हुआ कि छोटी पुत्री की सन्तान पैदा होते ही मर जाती थी। उसने पंडितो से इसका कारण पूछा तो उन्होने बताया की तुम पूर्णिमा का अधूरा व्रत करती थी जिसके कारण तुम्हारी सन्तान पैदा होते ही मर जाती हैं। पूर्णिमा का पुरा विधिपुर्वक करने से तुम्हारी सन्तान जीवित रह सकती हैं। उसने पंतिडतो कि सलाह पर पूर्णिमा का पूरा व्रत विधिपूर्वक किया। उसके लडका हुआ परन्तु शीघ्र ही मर गया । उसने लडके को लकडी के पट्टे पर लिटाकर ऊपर से कपडा ढक दिया। फिर बडी बहन को बुलाकर लाई और बैठने के लिए वही पट्टा दे दिया। बडी बहन जब पीढे पर बैठने लगी जो उसका घाघरा बच्चे का छू गया, बच्चा घाघरा छुते ही रोने लगा। बडी बहन बोली तुम मुझे कंलक लगाना चाहती थी। मेरे बैठने से यह मर जाता तब छोटी बहन बोली यह तो पहले से मरा हुआ था। तेरे ही भाग्य से यह पुनः जीवित हो गया हैं । तेरे पुण्य से ही यह अभी जीवित हुआ हैं। उसके बाद से शरद पुर्णिमा का पूरा व्रत करने का प्रचलन चल निकला।

शरद पूर्णिमा का महत्व

✍ संकलन गुरुत्व कार्यालय

शरद पूर्णिमा ऋतु-परिवर्तन का विशेष प्रतीक माना जाता है। शरद पूर्णिमा के दिन से वर्षाऋतु की समाप्ति और शरद का प्रारंभ माना जाता है। हिन्दू संस्कृति में प्राचीनकाल से की सूर्य व चंद्रमा को देवता के रूप में पूजन किया जाता है। नौ ग्रहों में सूर्य एवं चंद्र को हमारे विद्वान ऋषि-मुनियों ने उच्च स्थान दिया है। इन नौ ग्रहों में चंद्रमा को हमारे मन, शांति और शीतलता का प्रतीक माना गया है। इस कारण हैं की पुरातन काल से अबतक चंद्रमा पर अनेको साहित्य लिखे जाते रहे है। हजारों वर्ष पूर्व हमारें विद्वान ऋषि-मुनियों नें चंद्रमा का सूक्ष्म अध्ययन कर उसके हमारे जीवन पर पड़ने वाले विशेष प्रभावों को ज्ञात कर लिया था।

हिन्दू संस्कृति के अलावा विश्व के अन्य धर्मो की संस्कृति में भी चंद्रमा का विशेष महत्व माना गया हैं। हिन्दू में विभिन्न व्रत-पर्व मुख्यतः चंद्रमा पर ही आधारित हैं। विद्वानों के मतानुसार शरद पूर्णिमा की रात में चंद्रमा अपनी पूर्ण सोलह कलाओं से पूर्ण होता है।शरद पूर्णिमा के दिन चंद्रमा पृथ्वी के बेहद नज़दीक होता है। शरद पूर्णिमा रात में साफ आकाश में चंद्रमा अपनी अमृतवर्षा करता है। एसी मान्यता हैं की चंद्रमा अमृतवर्षा से अनेकों बीमारियों का शमन होता हैं। विद्वानों के मतानुसार हैं की चंद्रमा की अमृतवर्षा से खाने-पीने की चिजों में विशेष गुणात्मक परिवर्तन होते हैं। यही कारण हैं की हिन्दू संस्कृति में शरद पूर्णिमा के दिन चंद्रमा की रोशनी में रात्रि जागरण करने का, व चंद्रमा की चाँदनी में दूध से बनी खीर को रख कर उसे प्रसाद रूप में ग्रहण किया जाता रहा हैं।

जैसे हमारे विद्वानों ने सदियों पहले यह ज्ञात कर लिया था की दूध अमृत हैं, ओर शरद पूर्णिमा की रात चंद्रमा की किरणों में भी अमृत होता हैं, चावल में भी एक विशेष प्रकार के गुण होते हैं। अतः चंद्रमां की किरणों, दूध ओर चावल इस तीनो के संयोजन से यह अमृत तत्त्व की वृद्धि होती हैं। अतः हमें इसका विशेष लाभ अवश्य उठाना चाहिए।

कोजागरी पूर्णिमा 24-अक्टूबर-2018

✍ संकलन गुरुत्व कार्यालय

आश्विन मास की पूर्णिमा को 'कोजागर व्रत' रखा जाता हैं। इस लिये इस पूर्णिमा को कोजागरी पूर्णिमा भी कहा जाता है। इस दिन व्यक्ति विधिपूर्वक स्नान करके व्रत-उपवास रखने का विधान हैं। इस दिन श्रद्धा भाव से ताँबे या मिट्टी के कलश पर वस्त्र से ढँकी हुई स्वर्णमयी लक्ष्मी की प्रतिमा को स्थापित किया जाता हैं। फिर लक्ष्मी जी कि भिन्न-भिन्न उपचारों से पूज-अर्चना करने का विधान हैं। सायंकाल में चन्द्रोदय होने पर सोने, चाँदी अथवा मिट्टी के घी से भरे हुए दीपक जलाने कि परंपरा हैं।

इस दिन घी मिश्रित खीर को पात्रों में डालकर उसे चन्द्रमा की चाँदनी में रखा जाता हैं। एक प्रहर (३ घंटे) खीर को चाँदनी में रखनेके बाद में उसे लक्ष्मीजी को सारी खीर अर्पण कि जाती हैं। तत्पश्चात भक्तिपूर्वक सात्विक ब्राह्मणों को खीर का भोजन कराएँ और उनके साथ ही मांगलिक गीत गाकर तथा मंगलमय कार्य करते हुए रात्रि जागरण किया जाता हैं।

मान्यता हैं कि पूर्णिमा कि मध्यरात्रि में देवी महालक्ष्मी अपने हाथो में वर और अभय वरदान लिए भूलोक में विचरती हैं। इस दिन जो भक्तजन जाग रहा होता हैं उसे माता लक्ष्मी धन-संपत्ति प्रदान करती हैं।

करवा चौथ व्रत 27-अक्टूबर-2018

✍ संकलन गुरुत्व कार्यालय

कार्तिक मास कि चतुर्थी के दिन विवाहित महिलाओं द्वारा करवा चौथ का व्रत किया जाता है। करवा का अर्थात मिट्टी के जल-पात्र कि पूजा कर चंद्रमा को अर्ध्य देने का महत्व हैं। इसीलिए यह व्रत करवा चौथ नाम से जाना जाता हैं। इस दिन पत्नी अपने पति की दीर्घायु के लिये मंगलकामना और स्वयं के अखंड सौभाग्य रहने कि कामना करती हैं। करवा चौथ के पूरे दिन पत्नी द्वारा उपवास रखा जाता हैं। इस दिन रात्रि को जब आकाश में चंद्रय उदय से पूर्व सोलह सृंगार कर चंद्र निकलने कि प्रतिक्षा करती हैं। व्रत का समापन चंद्रमा को अर्ध्य देने के साथ ही उसे छलनी से देखा जाता हैं, उसके बाद पति के चरण स्पर्श कर उनसे आशीर्वाद प्राप्त करती हैं। ऐसी मान्यता है कि इस व्रत को करने से महिलाएं अखंड सौभाग्यवती होती हैं, उसका पति दीर्घायु होता हैं।

यदि इस व्रत को पालन करने वाली पत्नी अपने पति के प्रति मर्यादा से, विनम्रता से, समर्पण के भाव से रहे और पति भी अपने समस्त कर्तव्य एवं धर्म का पालन सुचारु रुप से पालन करें, तो एसे दंपत्ति के जीवन में सभी सुख-समृद्धि से भरा जाता हैं।

कथा : एसी मान्यता हैं, कि भगवान श्रीकृष्ण ने द्रोपदी को यह व्रत का महत्व बताया था। पांडवों के वनवास के दौरान अर्जुन तप करने के लिए इंद्रनील पर्वत पर चले गए। बहुत दिन बीत जाने के बाद भी जब अर्जुन नहीं लौटे तो द्रोपदी को चिंता होने लगी। जब श्रीकृष्ण ने द्रोपदी को चिंतित देखा तो फौरन चिंता का कारण समझ गए। फिर भी श्रीकृष्ण ने द्रोपदी से कारण पूछा तो उसने यह चिंता का कारण श्रीकृष्ण के सामने प्रकट कर दिया। तब श्रीकृष्ण ने द्रोपदी को करवाचौथ व्रत करने का विधान बताया। द्रोपदी ने श्रीकृष्ण से व्रत का विधि-विधान जान कर व्रत किय और उसे व्रत का फल मिला, अर्जुन सकुशल पर्वत पर तपस्या पूरी कर शीघ्र लौट आए।

पूजन-विधि: करवा चौथ के दिन ब्रह्म मुहूर्त में उठ कर स्नान के स्वच्छ कपडे पहन कर करवा की पूजा-आराधना कर उसके साथ शिव-पार्वती कि पूजा का विधान हैं। क्योकि माता पार्वती नें कठिन तपस्या कर के शिवजी को प्राप्त कर अखंड सौभाग्य प्राप्त किया था। इस लिये शिव-पार्वती कि पूजा कि जाती हैं।

करवा चौथ के दिन चंद्रमा कि पूजा का धार्मिक और ज्योतिष दोनों ही द्रष्टि से महत्व है।

छांदोग्य उपनिषद् के अनुशार जो चंद्रमा में पुरुषरूपी ब्रह्मा कि उपासना करता है, उसके सारे पाप नष्ट हो जाते हैं, उसे जीवन में किसी प्रकार का कष्ट नहीं होता। उसे लंबी और पूर्ण आयु कि प्राप्ति होती हैं।

ज्योतिष दृष्टि से चंद्रमा मन का कारक देवता हैं। अतः चंद्रमा चंद्रमा कि पूजा करने से मन की चंचलता पर नियंत्रित रहता हैं। चंद्रमा के शुभ होने पर से मन प्रसन्नता रहता हैं और मन से अशुद्ध विचार दूर होकर मन में शुभ विचार उत्पन्न होते हैं। क्योकि शुभ विचार ही मनुष्य को अच्छे कर्म करने हेतु प्रेरित करते हैं। स्वयं के द्वारा किये गई गलती या एवं अपने दोषों का स्मरण कर पति, सास-ससुर और बुजुर्गो के चरणस्पर्श इसी भाव के साथ करें कि इस साल ये गलतियां फिर नहीं हों।

सर्व कार्य सिद्धि कवच

जिस व्यक्ति को लाख प्रयत्न और परिश्रम करने के बादभी उसे मनोवांछित सफलताये एवं किये गये कार्य में सिद्धि (लाभ) प्राप्त नहीं होती, उस व्यक्ति को सर्व कार्य सिद्धि कवच अवश्य धारण करना चाहिये।

कवच के प्रमुख लाभ: सर्व कार्य सिद्धि कवच के द्वारा सुख समृद्धि और **नव ग्रहों** के नकारात्मक प्रभाव को शांत कर धारण करता व्यक्ति के जीवन से सर्व प्रकार के दु:ख-दारिद्र का नाश हो कर सुख-सौभाग्य एवं उन्नति प्राप्ति होकर जीवन मे सभि प्रकार के शुभ कार्य सिद्ध होते हैं। जिसे धारण करने से व्यक्ति यदि व्यवसाय करता होतो कारोबार मे वृद्धि होति हैं और यदि नौकरी करता होतो उसमे उन्नति होती हैं।

- सर्व कार्य सिद्धि कवच के साथ में **सर्वजन वशीकरण** कवच के मिले होने की वजह से धारण कर्ता की बात का दूसरे व्यक्तिओ पर प्रभाव बना रहता हैं।
- सर्व कार्य सिद्धि कवच के साथ में **अष्ट लक्ष्मी** कवच के मिले होने की वजह से व्यक्ति पर सदा मां महा लक्ष्मी की कृपा एवं आशीर्वाद बना रहता हैं। जिस्से मां लक्ष्मी के अष्ट रुप (१)-आदि लक्ष्मी, (२)-धान्य लक्ष्मी, (३)- धैर्य लक्ष्मी, (४)-गज लक्ष्मी, (५)-संतान लक्ष्मी, (६)-विजय लक्ष्मी, (७)-विद्या लक्ष्मी और (८)-धन लक्ष्मी इन सभी रुपो का अशीर्वाद प्राप्त होता हैं।
- सर्व कार्य सिद्धि कवच के साथ में **तंत्र रक्षा** कवच के मिले होने की वजह से तांत्रिक बाधाए दूर होती हैं, साथ ही नकारात्मक शक्तियो का कोइ कुप्रभाव धारण कर्ता व्यक्ति पर नहीं होता। इस कवच के प्रभाव से इर्षा-द्वेष रखने वाले व्यक्तिओ द्वारा होने वाले दुष्ट प्रभावो से रक्षा होती हैं।
- सर्व कार्य सिद्धि कवच के साथ में **शत्रु विजय** कवच के मिले होने की वजह से शत्रु से संबंधित समस्त परेशानिओ से स्वतः ही छुटकारा मिल जाता हैं। कवच के प्रभाव से शत्रु धारण कर्ता व्यक्ति का चाहकर कुछ नही बिगाड़ सकते।

अन्य कवच के बारे मे अधिक जानकारी के लिये कार्यालय में संपर्क करे:

किसी व्यक्ति विशेष को सर्व कार्य सिद्धि कवच देने नही देना का अंतिम निर्णय हमारे पास सुरक्षित हैं।

जब लक्ष्मीजी एक माली की बेटी बनी !

संकलन गुरुत्व कार्यालय

एक बार भगवान विष्णु धरती पर घूमने की योजना बनाई, भगवान विष्णु के यात्रा की योजना की तैयारी देख माता लक्ष्मी ने पूछा ! कहां जाने कि तैयारी हो रही है? विष्णु जी ने उत्तर दिया हे लक्ष्मी मैं भूलोक पर जा रहा हुं। थोडा चिंतन कर देवी लक्ष्मी ने कहा ! क्या मै भी आप के साथ चल सकती हुं?

भगवान विष्णु कहां तुम एक शर्त पर, मेरे साथ चल सकती हो, तुम धरती पर पहुँच कर उत्तर दिशा की तरफ मत देखना, इस के साथ ही माता लक्ष्मी ने वचन देते हुवे हां कहाँ। फिर लक्ष्मी जी ओर भगवान विष्णु धरती पर पहुच गये, उनके आगमन के समय सुर्य देवता का उदय हो रहा था, बीती रात बरसात हुई थी, जिस्से धरती पर चारो ओर हरियाली थी, धरती पर चारो ओर बहुत शान्ति फैली थी, ओर धरती अत्यंत ही सुन्दर दिख रही थी।

धरती का रमणीय दृश्य देख कर माता लक्ष्मी मन्त्र मुग्ध हो कर चारो ओर देख रही थी, ओर भूल गई कि पति को उत्तर दिशा की तरफ न देख ने का वचन दे कर आई है? देखते-देखते कब माता लक्ष्मी उत्तर दिशा की ओर देखने लगी यह पता ही नही चला। उत्तर दिशा मैं उन्हें एक अत्यंत ही सुन्दर बगीचा नजर आया, बगीचे की तरफ़ से भीनी-भीनी खुशबु आ रही थी, बगीचे में अत्यंत ही सुन्दर-सुन्दर फ़ूल खिले थे, यह एक फ़ूलो का बगीचा था, ओर मां लक्ष्मी बिना सोचे समझे उस बगीचे मे गई ओर एक सुंदर फूल तोड़ लाई।

लेकिन जब मां लक्ष्मी फूल तोड़ भगवान विष्णु के पास वापिस आई तो भगवान विष्णु की आंखो मै आंसू थे, ओर भगवान विष्णु ने देवी लक्ष्मी को कहा कि कभी भी किसी से बिना पूछे उस का कुछ भी नही लेना चाहिये, ओर साथ ही देख ने वाला वचन भी याद दिलाया।

मां लक्ष्मी को अपनी भूल का समझ आगई तो उन्होने भगवान विष्णु से इस भूल के लिये माफ़ी मागी, तो भगवान विष्णु ने कहा कि तुम ने जो भूल की है उस की सजा तो तुम्हे मिलेगी? जिस माली के बगीचे से तुमने बिना पूछे फ़ूल तोडा है, यह एक प्रकार की चोरी है, इस लिये अब तुम्हें तीन साल तक माली के घर नोकर बन कर रहना होगा, उस के बाद मै तुम्हे बैकुण्ठ मे वपिस ले जाऊंगा, माता लक्ष्मी ने चुप-चाप सर झुका कर हां कर, एक गरीब ओरत का रुप धारण करके माता

लक्ष्मी उस बगीचे के मालिक के घर गई।

मालिक घर एक झोपडा था, ओर मालिक का नाम माधव था, माधव की बीबी, दो बेटे ओर तीन बेटिया थी, सभी उस छोटे से बगीचे मैं काम करके किसी तरह से अपना गुजारा करते थे, माता लक्ष्मी जब एक साधारण व गरीब ओरत बन कर जब माधव के झोपड़े पर गई तो माधव ने पूछा बहिन आप कोन हो? ओर इस समय आपको क्या चाहिये?

तब माता लक्ष्मी ने कहा, मै एक गरीब ओरत हू, मेरी देख भाल करने वाला कोई नही है, मेने कई दिनो से खाना भी नही खाया मुझे कोई भी काम दे दो, साथ मे, मैं तुम्हारे घर का काम भी कर दिया करुगी, बस मुझे अपने घर मै एक कोने मै आसरा दे दो?

माधव बहुत ही अच्छे स्वभाव का था, उसे दया आ गई, लेकिन उस ने कहा, बहिन मै तो बहुत ही गरीब हुं, मेरी कमाई से मेरे घर का खर्च मुस्किल से चलता है, लेकिन अगर मेरी तीन की जगह चार बेटिया होती तो भी मुझे गुजारा करना था, अगर आप मेरी बेटी बन कर, जैसा हम रुखा सुखा खाते है उस में आप खुश रह सकती हो, तो मेरी बेटी बनकर अन्दर आ जाओ।

माधव ने माता लक्ष्मी को अपने झोपड़े में आश्रय दे दिया, ओर माता लक्ष्मी तीन साल तक उस माधव के घर व बगीचे पर बेटी बन कर रही।

जिस दिन माता उसके बाद उसके दिन बदल गये, माधव को अधिक आमदनी होने लगी जल्द ही उसने एक गाय खरीद ली, फ़िर धीरे-धीरे माधव ने दूसरी जमीने खरीद ली अपना घर भी बड़ा बना लिया, माधव का घर सभी तरह से संपन्नता से परिपूर्ण हो गया। माधव हमेशा यह स्मरण करता था कि मेरी अच्छी किस्मत ओर मेरे घर में यह संपन्नता इस बेटी के आने के बाद ही मिली है।

लक्ष्मीजी को माधव के घर रेहते हुए 3 साल बीत गये थे, लेकिन माता लक्ष्मी अब भी माधव के घर में रहती थी, एक दिन माधव खेतो का काम खत्म करके घर आया तो उस ने द्वार पर एक देवी स्री को गहनो को धारण किये देखा, गौर से देखने पर उस ने पाया यह तो वहीं स्त्री हैं जिसे मेने मुहं बोली बेटी बनाया है, ओर पहचान गया कि यह तो साक्षात माता लक्ष्मी है, तब तक माधव के परिवार के अन्य सदस्य बाहर आ गये, ओर सब हेरान हो कर माता लक्ष्मी को चकित होकर देखते रहे थे, माधव बोला हे मां हमे माफ़ करना हम ने अंजाने मै आपसे घर ओर खेत मे काम करवाये हैं, मेरे से यह कैसा अपराध हो गया, मां हम सब को माफ़ कर दो, तब माता लक्ष्मी ने मुस्कुराते हुए बोली, माधव तुमने एक अच्छे ओर दयालू व्यक्ति हो, तुम ने मुझे अपने परिवार के सदस्य की तरह अपनी बेटी बना कर रखा, इस लिए मै तुम्हे वरदान देती हुं कि तुम्हारे पास कभी भी खुशियों की एवं धन की कमी नहीं होगी, तुम्हे अपनी जीवन में सभी प्रकार के सुख प्राप्त होगें। माधव को आशिर्वाद देकर माता लक्ष्मी विष्णुजी द्वारा भेजे रथ पर सवार होकर बेकुण्ठ लोक में चली गई।

अतः इस कथा के अनुसार जैसे मां लक्ष्मी अच्छे ओर दयालू व्यक्ति के यहां निवार करती हैं, हमें भी अन्य लोगों के प्रति अपना व्यवहार अच्छा ओर दयालू रख कर अपने सामर्थ्य के अनुशार दूसरों की सहायता अवश्य करनी चाहिए।

कार्तिक स्नान का आध्यात्मिक महत्व

संकलन गुरुत्व कार्यालय

हेमाद्रि के अनुसार

किसी भी शुभकर्म या धार्मिक कार्य इत्यादि करने से पूर्व स्नान का विशेष महत्व होता है । इसके अलावा आरोग्य को बढाने और उसके रक्षण के लिये भी नित्य स्नान करना लाभदायक सिद्ध होता है ।

विशेष रूप से माघ, वैशाख और कार्तिक माह का नित्य स्नान अधिक महत्वपूर्ण होता है ।

मदन पारिजात के अनुसार

कार्तिकं सकलं मासं नित्यस्नायी जितेंद्रिय:।

जपन् हविष्यभुक्छान्त: सर्वपापै: प्रमुच्यते॥

अर्थात् : कार्तिक मास में जितेन्द्रिय रहकर नित्य स्नान कर एवं हविष्य (जौ, गेहूँ, मूँग, तथा दूध-दही और घी इत्यादि) का एकबार भोजन करे तो सब पाप दूर हो जाते हैं।

इस व्रत को आश्विन मास की पूर्णिमा से प्रारंभ करके 31 वें दिन कार्तिक शुक्ल पूर्णिमा के दिन समाप्त करे। स्नान के लिये घरके बर्तनों मे रखे पानी की अपेक्षा कुँआ, बावली या तालाब आदि उत्तम होते हैं और कुँए आदि के पानी की अपेक्षा पवित्र तीर्थों का स्नान अति उत्तम हैं ।

पवित्र तीर्थ स्नान पर स्नान से पूर्व पानी में प्रवेश करने से पूर्व अपने हाथ - पाँव जलाशय के बाहार स्वच्छ करलें। तत्पश्चात शिखा बंधक कर जल एवं कुश से संकल्प करने के पश्चात ही स्नान हेतु प्रवेश करें।

अंगिरा के अनुसार संकल्प हेतु कुश

विना दर्भेश्च यत् स्नानं यच्च दानं विनोदकम्।

असंख्यातं च यज्जप्तं तत् सर्वं निष्फलं भवेत्॥

अर्थात् : स्नानमें कुश, दानमें संकल्प का और जप में संख्या न हो तो ये सब फलदायक नहीं होते ।

पुरातन काल से ही हिन्दू धर्म की परंपरा रही हैं की हमारे यहाँ प्रातः धार्मिक तिर्थ की पवित्र नदि, तालाव इत्यादि के जल से स्नान किया जाता हैं। विभिन्न प्रकार के व्रत-स्नान-दानादि धार्मिक कार्य किये जाते हैं। कार्तिक मास में संध्या काल दीपक जलानें की परंपरा हैं।

ज्योतिष में ग्रहों की अवस्थाएं

✍ संकलन गुरुत्व कार्यालय

ज्योतिष शास्त्र के अनुसार नौ ग्रहों की अवस्था का मनुष्य के जीवन पर विशेष प्रभाव पड़ता है। जिसके विषय में विभिन्न ग्रंथकारों ने विभिन्न प्रभाव बताये हैं।

सारावली में उल्लेख हैं-

दीप्तः स्वस्थो मुदितः शांत शक्तो निपीडितो भीतः।
विकलः खलश्च कथितो नवप्रकारो ग्रहो हरिणा॥

अर्थात: १ दीप्त, २ स्वस्थ, ३ मुदित, ४ शान्त, ५ शक्त, ६ निपीडित, ७ भीत, ८ विकल, ९ खल यह ९ प्रकार की ग्रहों की अवस्था हरि ने कहीं हैं।

प्रभाव क्रमशः १ उच्च राशि में स्थित ग्रह दीप्त, २ सपनी राशि में स्थित ग्रह स्वस्थ, ३ मित्र की राशि में स्थित ग्रह मुदित, ४ शुभ वर्गों में स्थित ग्रह शान्त, ५ स्फुटित रश्मि (प्रकाशित किरण) वाला ग्रह शक्त, ६ ग्रहाभिभूत (ग्रह युद्ध में पराजित) पीडित, ७ नीच राशि में स्थित ग्रह भीत, ८ अस्त ग्रह विकल, ९ पाप वर्गों में स्थित ग्रह खल की स्थिती में होते हैं।

बृहत्पाराशर में उल्लेख हैं-

१ उच्च राशि में स्थित ग्रह दीप्त, २ अपनी राशि में स्थित ग्रह स्वस्थ, ३ अपने अधिमित्र की राशि में स्थित ग्रह मुदित, ४ मित्र की राशि में स्थित ग्रह शान्त, ५ सम ग्रह की राशि में स्थित ग्रह दीन, ६ शत्रु ग्रह की राशि में स्थित ग्रह दु:खित, ७ पाप ग्रह से युक्त होने से विकल, ८ पाप ग्रह की राशि में स्थित ग्रह खल, ९ सूर्य के साथ (अर्थात अस्त) होने से कोपी होते हैं।

स्वोच्चे भवति च दीप्तः स्वस्थः स्वगृहे सुहृदगृहे मुदितः।
शान्तः शुभवर्गस्थः शक्तः स्फुटकिरणजालश्च॥
विकलो रविलुप्तकरो ग्रहोभिभूतो निपीडिततश्चैवम।
पापगणस्थश्च खलो नीचे भीतः समाख्यातः॥

अर्थात: ग्रह अपनी उच्च राशि में दीप्त, अपनी राशि में स्वस्थ, मित्र की राशि में मुदित, शुभग्रह के वर्ग में शान्त, **अनस्तंगत शक्त**, सूर्य की किरणों से अस्त ग्रह विकल, युद्ध में पराजित निपीडित, पापग्रह के वर्ग में खल और अपनी नीच राशि में ग्रह भीत अवस्था प्राप्त करता हैं।

लेकिन आधुनिक ज्योतिष शास्त्र के अनुसार नौ ग्रहों की निम्नलिखित दस अवस्था मानी गई हैं। यदि यह नौ ग्रह में से कोई ग्रह पीड़ित और विकल हो तो यह ग्रह निष्फल एवं प्रभावहीन हो जाते हैं।

1. दीप्त ग्रह

जब कोई ग्रह उच्च राशि में स्थित होता है, तो वह ग्रह दीप्त अवस्था में कहलाता है। ऐसी अवस्था में जातक को पूर्ण धन लाभ, वाहन सुख, मान-सम्मान, यश-प्रतिष्ठा, संतान सुख मिलता है और जातक शत्रुओं पर विजय प्राप्त करता है।

2. स्वस्थ ग्रह

जब कोई ग्रह स्वराशि में स्थित होता है, स्वस्थ होता

है। ऐसी स्थिती में जातक को धन लाभ सामाजिक प्रतिष्ठा मिलती है। वंश की वृद्धि होती है।

3. मुदित ग्रह

जब कोई ग्रह मित्र राशि में स्थित होता है, तो मुदित कहलाता है। शुभ व लाभकारी होता हैं। ऐसी स्थिती में जातक को जीवन में आनन्द व संतोष मिलता है और शत्रु विजयी व भोग पूर्ण जीवन व्यतित करता है।

4. शान्त ग्रह

जब कोई ग्रह वर्ग विशेष कर (होरा, द्रेष्काण, नवमांश, द्वादशांश, त्रिशांश आदि) में शुभ स्थान पर होता है, तो वह शान्त अवस्था में मंगलकारी होता है। यह स्थिती जातक को कार्य सिद्ध दिलाती है। जातक धर्मात्मा, विद्वान और मंत्री बने सकता है।

5. शक्त ग्रह

जब कोई ग्रह वक्री स्थिती में होता है, तो वह शक्त कहलाता है। अशुभ भाव में हो तो जातक को स्वास्थ्य हानि व धनहानि होती है। यदि स्थिती शुभ भाव में हो तो जातक लोकप्रिय, कीर्तिवान एवं धनवान होता है।

6. पीड़ित ग्रह

जैसे के ज्योतिष के अनुशार हर राशि 30 अंश की होती है। जब कोई ग्रह राशि के प्रथम 3 अंश या अंतिम 3 अंश तक अर्थात् 0 अंश से 3 अंश और 28 अंश से 30 अंश पर होता है, तो वह ग्रह पीड़ित होता है। एसी स्थिती में ग्रह निष्फल व प्रभावहीन होता है। जो शत्रुपीड़ा, बन्धु वियोग लाता है। जातक को अत्याधिक घुमने वाला बनाता है।

7. दीन ग्रह

जब कोई ग्रह शत्रु राशि में होता है, तो वह दीन कहलाता है। ऐसा ग्रह धनहानि कराता है। जातक को पाप कर्म करने को प्रेरित करता है। मान-सम्मान व प्रतिष्ठा को ठेस पहुंचती है।

8. खल ग्रह

जब कोई ग्रह नीच राशि में होता है, तो वह खल (दुष्ट) कहलाता है। यह स्थिती कष्टकारी होती है। यह स्थिती लोगों से झगड़ा, मुकदमा, जेल, धनहानि कराता है जातक की चिन्ताओं में वृद्धि करता है और मानसिक तनाव लाता है।

9. विकल ग्रह

जब कोई ग्रह जल जाता है अर्थात् अस्त हो जाता है, तो वह विकल होता है। ऐसी स्थिति ग्रह के सूर्य के साथ स्थित होने पर आती है। सूर्य की उष्णता से ग्रह जल जाते हैं। क्रमश: चन्द्र 12 अंश, मंगल 17 अंश, बुध 13 अंश, गुरु 11 अंश, शुक्र 9 अंश, शनि 15 अंश का अन्तर होने पर जल जाते हैं। सामान्यत: 3 अंश अन्तर होने पर ग्रह प्रभावहीन व निष्फल हो जाते हैं। व्यक्ति को आचरणहीन, दरिद्री व घुमक्कड़ बनाते है।

10. भयभीत ग्रह

जब कोई ग्रह तीव्र गति से चल रहा हो और दूसरों से आगे निकलने की कोशिश में हो, तो यह भयभीत स्थिति होती है। यह दुष्परिणाम लाता हैं। यह स्थिती व्यक्ति को पराजित और बलहीन करती हैं। ऐसा ग्रह धनहानि कराता है और पीड़ा दायक होता है।

द्रोपदी ने भी किया था करवा चौथ का व्रत !

संकलन गुरुत्व कार्यालय

पौराणिक कथा के अनुसार जब पांडव पुत्र अर्जुन नीलगिरी पर्वत पर तपस्या करने गए। तब किसी कारणसे अर्जुन को वहीं रूकना पड़ा। उस समय पांडवों पर अत्याधिक संकट आ पड़ा। तब चिंतित होकर द्रौपदी ने भगवान श्रीकृष्ण का ध्यान किया। श्रीकृष्ण प्रकट होने पर द्रौपदी ने पांडवों के कष्टों के निवारण का उपाय पूछा।

तब कृष्ण ने द्रौपदी को आश्वस्त करते हुए कहा मैं तुम्हारी चिंता एवं संकट का कारण जानता हूं। तुम्हें इन कष्टों के निवारण के लिए एक उपाय करना होगा। शीघ्र ही कार्तिक माह की कृष्ण चतुर्थी आने वाली है, उस दिन तुम पूर्ण विधि-विधान से इस करवा चतुर्थी का व्रत रखना। तुम भगवान शिव-पार्वती एवं गणेशजी की उपासना करना, तुम्हारे सारे कष्ट शीघ्र दूर हो जाएंगे। श्रीकृष्ण से व्रत का विधि-विधान जानकर द्रोपदी ने उसी प्रकार ही करवा चौथ का व्रत किया। जिस के फलस्वरुप शीघ्र ही द्रोपदी को अर्जुन के दर्शन हुए और द्रोपदी की सारी चिंताएं दूर हो गईं।

माता पार्वती नें भगवान शिव से पति की दीर्घायु एवं सुख-संपत्ति की कामना की विधि पूछी तब शिवजी ने माँ पार्वती को करवा चौथ व्रत की कथा सुनाई थी। जो करवा चौथ व्रत की कथा भगवान श्रीकृष्ण ने दौपदी को सुनाई थी वह इस प्रकार हैं...

करवा नाम की एक पतिव्रता धोबिन अपने पति के साथ तुंग भद्रा नदी के किनारे स्थित गांव में रहती थी। उसका पति बूढ़ा और निर्बल था। एक दिन जब धोबी नदी के किनारे कपड़े धो रहा था तभी वहां अचानक एक मगरमच्छ आया, और धोबी के पैर को अपने दांतों में दबाकर खींचने लगा। धोबी यह देख घबराया और जब उससे कुछ कहते नहीं बना तो वह अपनी पत्नी को करवा..! करवा..! कहकर पुकारने लगा।

पति की पुकार सुनकर उसकी पत्नी करवा वहां पहुंची, तो मगरमच्छ उसके पति को यमलोक पहुंचाने ही वाला था। तब करवा ने मगर को एक धागे से बांध दिया और मगरमच्छ को लेकर यमराज के द्वार पहुंची। वहाँ करवा ने यमराज से अपने पति की रक्षा करने की गुहार लगाई और साथ ही मगरमच्छ को उसके इस कार्य के लिए कठिन से कठिन दंड देने का आग्रह कर बोली- हे भगवन्! मगरमच्छ ने मेरे पति के पैर पकड़ लिए है। आप मगरमच्छ को इस अपराध का दंड दें। करवा की विनती सुन यमराज ने कहा अभी मगर की आयु शेष नहीं हुई है, मैं उसे अभी यमलोक नहीं भेज सकता। इस पर करवा ने यमराज से कहा यदि आपने मेरे पति को बचाने में मेरी सहायता नहीं कि तो मैं आपको श्राप दे दूंगी और नष्ट कर दूँगी।

करवा का साहस देख यमराज डर गए और मगर को यमलोक में भेज दिया। साथ ही करवा के पति को दीर्घायु होने का वरदान दिया। तब से कार्तिक कृष्ण की चतुर्थी को करवा चौथ व्रत का प्रचलित हैं। यह करवा चौथ का व्रत आज भी विवाहित स्त्रीयां विधि-विधान के साथ करती है, और भगवान से अपने पति की लंबी उम्र की कामना करती हैं।

रत्नों का अद्भुत रहस्य

✍ संकलन गुरुत्व कार्यालय

माणिक्य

सूर्य का रत्न माणिक्य सूर्य ग्रह के शुभ फलों की प्राप्ति हेतु धारण किया जाता हैं।

माणिक्य विभिन्न भाषाओ मे निम्न लिखित नामो से जाना जात है।

हिन्दी मे :- चुन्नि, माणिक्य, लाल मणि,

सस्कृत मे :- पद्मराग मणि, माणिक्यम, सोणमल, कुरविंद, वसुरत्न, सोगोधक, स्त्रोण्रत्न, रत्ननायक, लक्ष्मी पुष्प,

फ़ारसी मे :- याकूत,

अरबी मे :- लाल बदपशकनि

लेटिन मे :- रुबी, नर्स,

माणिक्य में लाल रंग की आभा होती हैं। माणिक्य लाल रंग के अलावा अन्य रंग गुलाबी, काला और नीले रंग की आभा वाले भी पाये जाते हैं। माणिक्य खनिज रत्नो में से एक रत्न हैं।

रक्त के समान लाल रंग की आभा बिखेरने वाला माणिक्य अति मूल्यवान एवं उत्तम होता हैं। बाजार में बर्मा माणिक्य की मांग सबसे अधिक होती हैं। अलग-अलग स्थानों से प्राप्त माणिक्य के रंगों में भिन्नता होती हैं।

जानकारो के मत से बर्मा में माणिक्य की खदानें सबसे पुरातन हैं। अभी तक प्राप्त माणिक्य में सबसे उत्तम माणिक्य बर्मा से ही प्राप्त हुए हैं। यहि कारण हैं की बर्मा के माणिक्य की कीमत और मांग अंतराष्ट्रिय बाजारो में सबसे अधिक होती है।

माणिक्य के लाभ:

माणिक्य धारण करने से व्यक्ति का मन प्रसन्न रहाता हैं एवं उत्साह और उमंग में वृद्धि होती हैं।

कुछ विद्वानो के मत से माणिक्य प्रेम बढाने वाला रत्न मानते हैं।

- माणिक्य निराशा और उदासीनता को दूर करता हैं।
- माणिक्य भूत-प्रेत आदि शुद्र बाधाओं से मुक्ति दिलाता हैं।
- माणिक्य संतान सुख की प्राप्ति हेतु उत्तम माना गया हैं।
- माणिक्य धारण करने से आर्थिक स्थिति में सुधार होता हैं और विभिन्न स्तोत्र से धन प्राप्त होता हैं।
- माणिक्य धारण करने व्यक्ति की समाज में मान-सम्मन एवं प्रतिष्ठित में निरंतर वृद्धि होती हैं।
- माणिक्य जहर के प्रभाव को कम करता हैं एवं जहरीली वस्तु पास होने पर इसक रंग फीका दिखने लगता हैं।
- पश्चिमि देशों में ऎसी मान्यता हैं की माणिक्य विष को दूर करता हैं, माणिक्य महामारी जैसे प्लेग आदि से रक्षा करता हैं।
- माणिक्य धारण करने से व्यक्ति के दुख को दूर करता हैं।
- मन में नकारात्मक विचारों को आने से रोकता हैं।
- एसा माना जाता हैं की यदि किसी व्यक्ति ने माणिक्य धारण किया हो, तो उस पर विपत्ति आने पर, उसका रंग बदल जाता हैं (फीका हो जाता हैं) अर्थात माणिक्य विपत्तियों के आने से पूर्व संकेत देता हैं और संकट टल जाने पर पुन: माणिक्य की आभा पूर्ववत हो जाती हैं।

मान्यता:

- जो माणिक्य सूर्य की किरण पड़ने से लाल रंग बिखेरता है वह सर्वोत्तम होता हैं।

- उच्च कोटि के माणिक्य की पहचान है कि माणिक्य को दूध में बार-बार डुबोने से दूध मे माणिक्य की आभा दिखने लगती हैं।
- अंधेरे कमरे में रखने पर यह सूर्य के समान प्रकाशमान होता हैं।
- माणिक्य को कमाल की कली पर रखे तो कली तुरंत ही खिल उठती हैं।
- माणिक्य को यदि सफ़ेद मोतियों के बीच रखे तो मोती माणिक्य के रंग के हो जाते हैं।

माणिक्य और आध्यात्म:

- माणिक्य पहन कर सूर्य उपासना करने से सूर्य पूजा का फल में वृद्धि हो जाती है।
- रंग चिकित्सा का मूल आधार हैं की रंगों की रश्मियां घनीभूत होती हैं।

हृदय और रत्न: सूर्य व्यय का प्रतिनिधि है। रत्नों में वह माणिक्य का प्रतिनिधि है। इसलिए व्यक्ति को सूर्य को बल देने के लिए माणिक्य धारण करना चाहिए। माणिक्य हृदय के सभी प्रकार के कष्टों अथवा रोगों को दूर करता हैं। माणिक्य की पिष्टी और भस्म दोनों औषधि के रूप में उपयोग में आते हैं।

माणिक्य के दोष

1. जिस माणिक्य में दो रंगों आभा हो उसे धारण करने से पिता को कष्ट प्राप्त होता हैं। अत: दो रंगों से युक्त माणिक्य धारण नहीं करना चाहिए
2. जिस माणिक्य में मकड़ी के समान जाले नजर आते हो इस प्रकार के माणिक्य को धारण करने से धारणकर्ता कई प्रकार के कष्टों से पीड़ित हो जाता है
3. गाय के दूध के समान रंग वाले माणिक्य को धारण करने से धन का नाश होता हैं और हृदय में उद्वविग्नता रहती है
4. जिस माणिक्य का रंग धुऐं के समान हो ऐसे माणिक्य को धारण करने से विभिन्न प्रकार काष्ट और संकटो का सामना करना पड़ता हैं।
5. काले रंग का माणिक्य धन नाश और अपयश देने वाला होता हैं।
6. जिस माणिक्य में दोष हो ऐसे माणिक्य को धारण करने से विभिन्न प्रकार के रोग, व्याधि और आकस्मिक दुर्घटनाओं की सम्भावना अधिक रहती हैं।

अत: माणिक्य धारण करने से पहले इसके दोषों को परख लेना चाहिए।

माणिक्य के गुण:

- माणिक्य रक्तवर्धक, वायुनाशक और उदर रोग में लाभकारी होता हैं।
- माणिक्य नेत्र ज्योति को बढ़ाने वाला हैं तथा अग्नि, कफ, वायु तथा पित्त दोष का शमन करता है।
- माणिक्य के भस्म के सेवन से आयु की वृद्धि होती हैं।
- माणिक्य में वात, पित्त, कफ जनित रोग को शांत करने की शक्ति होती हैं।
- माणिक्य क्षय रोग, बदन दर्द, उदर शूल, चक्षु रोग, कब्ज आदि रोग को दूर करता हैं।
- माणिक्य की भस्म शरीर में उत्पन्न होने वाली उष्णता और जलन को दूर करती हैं।

बृहत्संहिता के अलावा आयुर्वेद के प्रसिद्ध ग्रंथ भाव प्रकाश, आयुर्वेद प्रकाश एवं रस रत्न समुच्चय के अनुसार माणिक्य कसैले स्वाद का और मीठा रस प्रधान रत्न हैं।

>> क्रमश: अगले अंक में ...

धार्मिक कार्यों में माला चयन

✍ संकलन गुरुत्व कार्यालय

साधाना मे मंत्र जप के लिये माला का विशेष महत्व होता है। विभिन्न प्रकार के कार्य की सिद्धि हेतु माला का चयन अपने कार्य उद्देश्य के अनुशार करने से साधक को अपने कार्य की सिद्धि जल्द प्राप्त होती हैं, क्योकी माला का चयन जिस इष्ट की साधना करनी हो, उस देवता से संबंधित पदार्थ से निर्मित माला का प्रयोग अत्याधिक प्रभाव शाली माना गया हैं।

देवी- देवता कि विषेश कृपा प्राप्ति के लिए उपयुक्त माला का चयन करना चाहिए-

लाल चंदन- (रक्त चंदन माला) गणेश, पुष्टि कर्म, दूर्गा, मंगल ग्रह कि शांति के लिए उत्तम है।

श्वेत चंदन- (सफेद चंदन माला) - लक्ष्मी एवं शुक्र ग्रह कि प्रसन्नता हेतु।

तुलसी- विष्णु, राम व कृष्ण कि पूजा अर्चना हेत॥

मूंग- लक्ष्मी, गणेश, हनुमान, मंगल ग्रह कि शांति के लिए उत्तम है।

मोती- लक्ष्मी, चंद्रदेव कि प्रसन्नता हेतु।

कमल गटटा- लक्ष्मी कि प्रसन्नता हेतु।

हल्दी - बगलामुखी एवं बृहस्पति (गुरु) कि प्रसन्नता हेतु।

काली हल्दी- दुर्भाग्य नाश, मां काली कि प्रसन्नता हेतु।

स्फटिक - लक्ष्मी, सरस्वती, भैरवी की आराधना के लिए श्रेष्ठ होती है।

चाँदी - लक्ष्मी, चंद्रदेव कि प्रसन्नता हेतु।

रुद्राक्ष - शिव, हनुमान कि प्रसन्नता हेतु।

नवरत्न - नवग्रहो कि शांति हेतु।

सुवर्ण- लक्ष्मी कि प्रसन्नता हेतु।

अकीक - (हकीक) कि माला का प्रयोग उसके रंगो के अनुरुप किया जाता हैं।

रुद्राक्ष एवं स्फटिक की माला सभी देवी- देता की पूजा उपासना में प्रयोग कियाजा सकता हैं।

विद्वानो ने मतानुशार रुद्राक्ष की माला सर्वश्रेष्ठ होती हैं। रुद्राक्ष की माला से मन्त्र जाप करने से नवग्रहों के प्रभाव भी स्वतः शांत होने लगते हैं और मनुष्य के अनंत कोटी पातको का शमन होता हैं।

ग्रह शान्ति हेतु माला चयन:

1) सूर्य के लिए माणिक्य की माला, गारनेट, माला रुद्राक्ष, बिल्व की लकड़ी से बनी की माला का प्रयोग करना लाभप्रद होता हैं।

2) चन्द्र के लिए मोती, शंख, सीप की माला का प्रयोग करना लाभप्रद होता हैं।

3) मंगल के लिए मूंगे या लाल चंदन की माला का प्रयोग करना लाभप्रद होता हैं।

4) बुध के लिए पन्ना या कुशामूल की माला का प्रयोग करना लाभप्रद होता हैं।

5) बृहस्पति के लिए हल्दी की माला का प्रयोग करना लाभप्रद होता हैं।

6) शुक्र के लिए स्फटिक की माला का प्रयोग करना लाभप्रद होता हैं।

7) शनि के लिए काले हकीक या वैजयन्ती की माला का प्रयोग करना लाभप्रद होता हैं।

8) राहु के लिए गोमेद या चन्द की माला का प्रयोग करना लाभप्रद होता हैं।

9) केतु के लिए हसुनिया या लाजवर्त की माला का प्रयोग करना लाभप्रद होता हैं।

माला से संबंधित शास्त्रोक्त मत

संकलन गुरुत्व कार्यालय

काली तंत्र में उल्लेख हैं,

शंख की माल से मन्त्र जप करने से सौगुना फल मिलता हैं। प्रवाल(मूंगे) की माला से सहस्त्र गुना, स्फटिक की माला से दस सहस्त्र गुना, मुक्तक से लाख गुना, कमल गट्टेकी माला से दशलाख गुना, कुशमूल की माला से सौ करोड़ गुना तथा रुद्राक्ष की माला से अनन्त कोटि फल की प्राप्ति होती हैं।

अन्य मत के अनुशार:

स्फाटिकी मौक्तिकी वापि प्रोतव्या सितत्रकैः।
सर्वकर्मसमृद्धयर्थं जपे रुद्राक्षमालयाः॥
स्फाटिकैलक्षसाहस्त्रं मैक्तिकैर्लक्षमेव च।
दशालक्षं राजताक्षैः सौवर्णैः कोटिरुच्यते॥

अर्थातः स्फटिक और मोतियों की माला धागे में पिरोकर धारण की जा सकती हैं लेकिन रुद्राक्ष को चांदि के तार में पिरोकर माला रुप में धारण करने पर तथा जप करने से कई कार्य सफल होते हैं। स्फटिक माला का हजारो लाखो गुना फल मिलता हैं मोतियों की माला लाख गुना फल देती हैं, और चांदि की माला लाख गुना व सुवर्ण की माला करोड़ो गुना फल देती हैं।

काली तंत्र के अनुसार श्मसान में स्थित धतूरे की माला श्रेष्ठ होती हैं। शत्रुनाश के लिए कमलगट्टे की माला, पापनाश के लिए कुशमूल की माला, संतान प्राप्ति हेतु पुत्रजीवा के बीज की माला, ऐश्वर्य की प्राप्ति के लिए मूंगे की माला का प्रयोग करना चाहिए।

गौतमीय तंत्र में उल्लेख हैं, की अर्थ प्राप्ति के लिए तीस मनकों की माला, सर्व कामना सिद्धि के लिए सत्ताईस मनकों की माला, मारण कार्य के लिए पन्द्रह मनकों की माला का प्रयोग करना चाहिए।

हेरण्ड तंत्र के अनुसार स्तम्भन, वशीकरन आदि कार्यों में अंगूठे के अग्रभाव से माला का जप करना चाहिए। आकर्षण के लिए अंगूठा व तर्जनी का प्रयोग करना चाहिए, मारण के लिए अंगूठा और कनिष्ठा का प्रयोग करना चाहिए।

मन्त्र जप हेतु दिशा चयन

- वशीकरण कार्यो के लिए पूर्व दिशा की ओर मुंह करके जप करना चाहिए।
- मारण कार्यों के लिए दक्षिण दिशा की ओर मुंह करके जप करना चाहिए।
- धन प्राप्ति के लिए पश्चिम दिशा की ओर मुंह करके जप करना चाहिए।
- समस्त शुभकार्यों एवं शांति कर्म में उत्तर दिशा की ओर मुंह करके जप करना चाहिए।
- आकर्षण कार्यो के लिए अग्नि कोण की ओर मुंह करके जप करना चाहिए।
- शत्रु नाश के लिए वायव्य कोण की ओर मुंह करके जप करना चाहिए।
- इष्ट दर्शन के लिए नैऋत्य कोण की ओर मुंह करके जप करना चाहिए।
- ज्ञान की प्राप्ति के लिए ईशान कोण की ओर मुंह करके जप करना चाहिए।

जप के नियम

विशेष मन्त्र साधना में जप का विशेष महत्व होता हैं।

जप के महत्व को बतात हुए स्वयं भगवान ने कहां हैं:-

यज्ञाना जप यज्ञो स्मि

पाठको के मार्गदर्शन के उद्देश्य से यहां कुछ विशेष नियम दिए जा रहे हैं। क्योकि मन्त्र जप के लिए कुछ विशेष नियमो का ध्यान रखना आवश्यक माना गया हैं।

- जप करने से पूर्व ब्राह्मण को शिखा बन्धन अवश्य करना चाहिए। क्योकि बिना शिखा में गांठ दिये जो मन्त जप किया जाता हैं, वह निष्फल होता हैं।



इस लिए शास्त्रों में उल्लेख हैं की...

सदो पवीतिना भाव्यं सदा बद्ध शिखेन च।
विशिखो व्युपवीततश्च् यत् करोति न तत कृतम्॥

ब्रह्माण्ड पुराण के अनुशार:

- मन्त्र जप करते समय आसन बिछा होना चाहिए। आसन यदि फटा हो, टूटा-कटा हो, जीर्ण या छिद्र होगए हो तो उसका त्याग करना चाहिए।
- बिना आसन के केवल भूमि पर बैठकर जप करने से दुख की प्राप्ति होती हैं।
- बांस के आसन पर बैठकर मन्त्र जप करने से दरिद्रता आती हैं।
- पत्थर के आसन पर बैठकर मन्त्र जप करने से रोग होते हैं।
- काष्ठ अर्थात लकडी के आसन पर बैठकर मन्त्र जप करने से दुर्भाग्य की प्राप्ति होती हैं।
- तृणासन के आसन पर बैठकर मन्त्र जप करने से यश-कीर्ति नष्ट होती हैं।
- पत्तों के आसन पर बैठकर मन्त्र जप करने से चित्त की उद्विग्नता बढ़ती हैं।

शास्त्रों में उल्लेख हैं:-

काम्यार्थ कम्बलं चैव श्रेष्ठं च रक्त कम्बलम्।
कुशासने मन्त्रसिद्धिर्नात्र कार्य विचारणा।

बिना संख्या अर्थात गिनती के जप करने से फल का नाश होता हैं, अंगिरा स्मृति में उल्लेख हैं की- बिना दंभ के धार्मिक कार्य, बिना जल के दान एवं बिना गणना के जप निष्फल होते हैं।

बिना दमभेंश्च यत्कृत्यं यच्चदानं विनोदकम्।
असंख्यया तु यज्जप्तं त्तसर्व निष्फलं भवत्॥

जप का फल:-

गृहे चैकगुणः प्रोक्तः गोष्ठे शतगुणः स्मृतः ।
पुण्यारण्ये तथा तीर्थे सहस्त्रगुणमुच्यते ॥
अयुतः पर्वते पुण्यं नद्यां लक्षगुणो जपः ।
कोटिर्देवलये प्राप्ते अनन्तं शिवसंनिधौ ॥

- घर में बैठ कर मन्त्र जप करने से एक गुना फल मिलता हैं।
- गौशाला में मन्त्र जप करने से सौगुना फल प्राप्त हैं।
- पुण्य स्थान वन-वाटिका या तीर्थ स्थान पर मन्त्र जप करने से हजार गुना फल प्राप्त हैं।
- पर्वत पर मन्त्र जप करने से दस हजार गुना फल प्राप्त हैं।
- नदी तट पर मन्त्र जप करने से लाख गुना फल प्राप्त हैं।
- देवालय में मन्त्र जप करने से करोड़ गुना फल प्राप्त हैं।
- शिवलिङ्गके निकट मन्त्र जप करने से अनंत कोटि फल की प्राप्ति होती हैं।

विशेष नोट:

- मन्त्र जप में प्रयोग की जाने वाली या धारण कि गई माला को कभी खूंटी आदि पर लटकाना नहीं चाहिए।
- धारण कि हुई माल जब उतारे तो उसे देवस्थान पर रखना चाहिए।
- माला को रजस्वला स्त्री का स्पर्श या परछाई से दूर रखनी चाहिए।
- श्मसान जात समय या मृतक को छुते समय माला को निकाल देना चाहिए।

अंक यन्त्रों की विशिष्टता एवं लाभ

संकलन गुरुत्व कार्यालय

अंक यन्त्र अपने आपमें विशेष रहस्य समाये होते हैं। यन्त्र के जानकारों का अनुभव हैं की विशेष अंकों के माध्य से कठिन कार्यों को भी सरलता से सिद्ध किये जा सकते हैं। अब तक अंक यन्त्रों में प्रायः पन्द्रह से लेकर दस लाख तक की संख्याओं वालें अंकों का प्रयोग होते देखा गया हैं। पौराणिक गंथों में विभिन्न कार्यों की सिद्धि के लिए अंकों का महत्व विशेष रुप से दर्शाया गया हैं।

1) पंदरीया (15) यन्त्र सभी प्रकार की सिद्धियों को प्रदान करने वाला माना गया हैं।
2) सोडष यन्त्र (16) अर्थात सोलह अंक वाले यन्त्र को चोर आदि बाधाओं को दूर करने हेतु प्रयोग किया जाता हैं।
3) उन्नीसां यन्त्र (19) खेत एवं धान को कीड़ों से बचाने हेतु प्रयोग किया जाता हैं।
4) बीसा यन्त्र (20) को सोलह कोष्टक में लिखकर पास में रखने से सभी तरह के भय का नाश होता हैं।
5) चौबीसा यन्त्र (24) सर्व प्रकार से ऋद्धि-सिद्धि प्रदाता हैं।
6) अठाईसा यन्त्र (28) से रोग अभय नष्ट होता हैं।
7) तीस यन्त्र (30) से शाकिनी भय का नाश होता हैं।
8) बत्तीसा यन्त्र (32) को गर्भिणी को सुकपूर्वक प्रसव हेतु प्रयोग किया जाता हैं। (बत्तीसा यन्त्र के अनेक प्रयोग एवं लाभ विभिन्न ग्रंथोंमें देखनेको मिलते हैं।
9) चौतीसा यन्त्र (34) को मुख्य रुप से देव ध्वजा पर लिखने से शुभ फल प्राप्त होते हैं। चौतीसा यन्त्र परकर्म अर्थात किसी के द्वारा भय की प्राप्ति होने से पूर्व उसे दूर करता हैं। भवन की मुख्य दीवार पर इसे लेखने पर पराभाव नहीं होता, शत्रुद्वारा किये गये कामण-टुमण आदि का प्रभाव नष्ट हो जाता हैं।
10) छत्तीसा यन्त्र (36) को आर्थिक लाभ हेतु प्रयोग किया जाता हैं।
11) चालीसा यन्त्र (40) को मान-सम्मान की वृद्धि, शत्रु को नतमस्तक करने एवं सिरदर्द दूर करने हेतु प्रयोग किया जाता हैं।
12) पच्चासवां यन्त्र (40) को छोटे बालकों का रोना बन्द कराने हेतु प्रयोग किया जाता हैं।
13) छप्पनवा यन्त्र (56) को मोहन आदि कार्यो के लिए प्रयोग किया जाता हैं।
14) बासठियां यन्त्र (62) को बंध्या स्त्री को गर्भ ठहरवाने हेतु प्रयोग किया जाता हैं।
15) चौसठियां यन्त्र (62) को सर्व प्रकार के भयों के निवारण के लिए विशेष रुप से प्रयोग किया जाता हैं। चौसठियां यन्त्र का प्रयोग भूत-प्रेत, शाकिनी-

डाकिनी आदि पीडाओं से रक्षा हेतु किया जाता हैं।

16) सत्तरीयां यन्त्र (70) के प्रयोग से मान-सम्मान की वृद्धि होती हैं।

17) बहत्तरीयां यन्त्र (72) को भूत-प्रेत आदि भयों को नष्ट करने और जंग में विजय प्राप्ति हेतु प्रयोग किया जाता हैं।

18) अठोत्तरीयां यन्त्र (78) को सर्व प्रकारके कष्ट से मुक्ति हेतु हेतु प्रयोग किया जाता हैं।

19) अस्सीयां यन्त्र (80) को अपने द्वारा किये गये कर्म फलों की प्राप्ति हेतु प्रयोग किया जाता हैं।

20) पिच्चासियां यन्त्र (85) को मार्ग अर्थात यात्रा भय के निवारण हेतु प्रयोग किया जाता हैं।

21) नब्बेयां यन्त्र (90) को चोर से रक्षा हेतु प्रयोग किया जाता हैं।

22) सौवां यन्त्र (100) को सर्व कार्य सिद्धि हेतु प्रयोग किया जाता हैं।

23) एक सौ बीस यन्त्र (120) को गर्भिणी की प्रसव पीड़ा-कष्ट को कम करने हेतु प्रयोग किया जाता हैं।

24) एक सौ छब्बीसां यन्त्र (126) को बंधे हुवे गर्भ को खोने हेतु प्रयोग किया जाता हैं।

25) एक सौ बावनयां यन्त्र (152) को भाई-बहन मे आपसी प्रेम की वृद्धि हेतु प्रयोग किया जाता हैं।

26) एक सौ सत्तरीयां यन्त्र (170) ज्ञान वृद्धि हेतु विशेष प्रभावकारी माना गया हैं।

27) एक सौ बहत्तरीयां यन्त्र (172) को संतान लाभ एवं भय निवारण हेतु प्रयोग किया जाता हैं।

28) दौ सौ का यन्त्र (200) को व्यवसाय वृद्धि हेतु प्रयोग किया जाता हैं।

29) तीन सौ का यन्त्र (300) को पति-पत्नी में आपसी स्नेह बढ़ाने हेतु प्रयोग किया जाता हैं।

30) चार सौ का यन्त्र (400) को भवन में लिखने से भय से रक्षा हेतु एवं खेतों में लिखने से धान्य की उपज अच्छि हो इस लिए किया जाता हैं।

31) पांच सौ का यन्त्र (500) स्त्री को गर्भ धारण हेतु एवं पुरुष को उत्तम संतान की प्राप्ति हेतु प्रयोग किया जाता हैं।

32) छः सौ का यन्त्र (600) को सुख-सम्पत्ति की प्राप्ति के लिए प्रयोग किया जाता हैं।

33) सात सौ का यन्त्र (700) को वाद-विवाद में विजप प्राप्ति के लिए प्रयोग किया जाता हैं।

34) नौ सौ का यन्त्र (900) को मार्ग भय एवं यात्रा भय से रक्षा हेतु प्रयोग किया जाता हैं।

35) एक हजार का यन्त्र (1000) को विजय प्राप्ति हेतु प्रयोग किया जाता हैं।

36) ग्यारह सौ का यन्त्र (1100) को दुष्टात्माओं, भय एवं क्लेश से से रक्षा हेतु प्रयोग किया जाता हैं।

37) बारह सों का यन्त्र (1200) को बंधन मुक्ति हेतु प्रयोग किया जाता हैं।

38) पचास हजार का यन्त्र (50000) को राज सम्मान की प्राप्ति एवं सभी प्रकार के कष्टों से मुक्ति हेतु प्रयोग किया जाता हैं।

39) दस लाख दस हजार का यन्त्र (1010000) को मार्ग में चोर भय से रक्षा हेतु प्रयोग किया जाता हैं।

इस प्रकार से किसी भी यन्त्र का प्रयोग करने से पूर्व उसके पूर्ण प्रभावों को जान लेना अति आवश्यक हैं उपर दर्शाये गये अंक यन्त्रों की सूचि यहां मात्र मार्गदर्शन के उद्देश्य से दी गई हैं। विद्वजनों एवं साधको के अनुभवों में अंतर होने से उपर में जो फल दर्शाये गये हैं उसमें अंतर संभव हैं, अतः इस विषय में किसी योग्य गुरु या साधक से परामर्श कर लेना अति आवश्यक हैं।

यंत्र द्वारा वास्तु दोष निवारण

संकलन गुरुत्व कार्यालय

हर भवन के निर्माण से उसमें शुभ एवं अशुभ दोनों प्रकार के तत्त्व व्याप्त होते हैं। केवल शुभ तत्त्व हो या केवल अशुभ तत्त्व हो यह संभव नहीं हैं। दोनों तत्त्वों का मिश्रीत प्रभाव उस भवन पर होता हैं। उसमें फर्क इतना ही होता हैं की कहीं शुभ तत्त्व की अधिक होती हैं तो कहीं अशुभ तत्त्व की अधिकता रहती हैं। इस लिए कोई भी भवन नातो पूर्ण रुप से शुभ तत्त्व से युक्त हो ता हैं नाहीं अशुभ तत्त्व से युक्त होता हैं। शुभ तत्त्व की अधिकता से उसे शुभ संकेत समझा जाता हैं एवं अशुभ तत्त्व की अधिकता को दोष के रुप में जाना जाता हैं। अशुभ तत्त्व की अधिकता से ही वास्तु दोष उत्पन्न होता हैं।

इस लिए वास्तु यन्त्र एवं अन्य उपायों का सहायता से भवन के शुभ तत्त्वों की वृद्धि एवं अशुभ तत्त्वों अर्थात दोषों को कम किया जा सकता हैं।

वास्तु दोष दूर करने के उपाय यदि भवन में संबंधित दिशा में वास्तु दोष हो तो उस दिशा में वास्तु यंत्र लगाना चाहिए।

घर में वास्तु दोषनाशक यंत्र को विधि-विधान से स्थापित करना चाहिए।

गणेश प्रतिमा

मुख्य द्वार के उपरी हिस्से में अंदर-बाहर मंत्र सिद्ध प्राण-प्रतिष्ठित श्रीयंत्र, कनक धारा यंत्र और दक्षिणावर्ती स्फटिक गणेश जी (दाहिनी सूंढ) को स्थापित करने से उस भवन के द्वार दोष और वास्तु दोष दूर होते हैं।

भवन के मुख्य द्वार के उपर मध्य भाग में श्रीगणेश की प्रतिमा परशु और अंकुश लिए बुद्धिमत्ता और समृद्धि के दाता के रुप में शुभदाय है। मुख्य द्वार पर बैठे हुए गणेशजी की प्रतिमा द्वार के उपर शुभ मानी जाती है। भगवान गणेश हमारे जीवन की सफलता के प्रतीक है। गणेश जी का विशाल उदर में पूरा ब्रह्मांड विद्यमान है। गणेशजी की सूंड विघ्नों को दूर करने के लिए मुड़ी हुई रहती है। हमारी संस्कृति में किसी भी शुभ कार्यों को प्रारंभ करने से पहले इनका प्रथम स्मरण करने का विधान हैं।

श्रीयंत्र

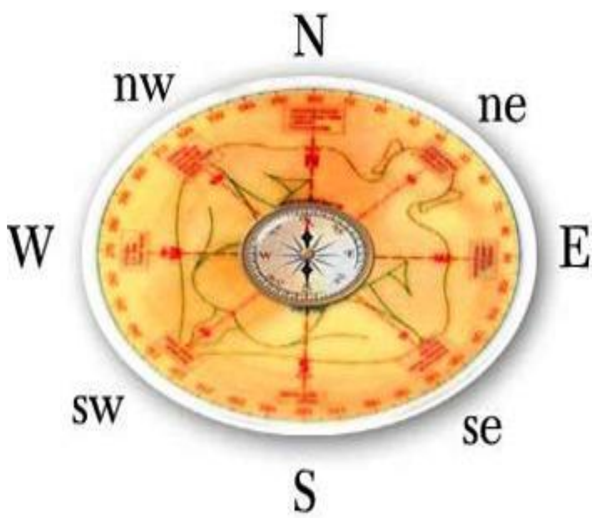
भवन के सभी प्रकार के दोष दूर करने के लिए मंत्र सिद्ध प्राण-प्रतिष्ठित स्पफटिक श्रीयंत्र की स्थापना करने से एवं उसका प्रतिदिन पूजन-अर्चन करनी चाहिए।

मांगलिक चिह्न

भवन के मुख्यद्वार पर ॐ, स्वस्तिक शुभ-लाभ, ऋद्धि-सिद्धि आदि मंगलदायक प्रतिक चिह्न लगाने चाहिए। भवन के मुख्यद्वार पर प्रतिदिन गंगाजल का छिड़काव घर में करना चाहिए।

नवग्रह शांति यंत्र

नवग्रह ग्रहों के यंत्रों को उनकी संबंधित दिशाओं में इस प्रकार से लगाने चाहिए जहां ये आसानी से दिखाई देते हो। नवग्रह शांति यंत्र के पूजन एवं स्थापना से भी वास्तुदोषों का शमन होता है। उत्तर, पूर्व, दक्षिण, पश्चिम, ईशान, आग्नेय, नैऋत्य, वायव्य या ब्रह्म स्थान में जहां भी वास्तु दोष हो उस दिशा में संबंधित देव का यंत्र स्थपित करे या उसे पूजा स्थान में स्थपित करे।



- भवन के उत्तर में बृहस्पति, कुबेर या वरुण यंत्र लगाना चाहिए।

- घर के आग्नेय कोण में वास्तु दोष हो तो आग्नेय कोण में मंत्र सिद्ध प्राण-प्रतिष्ठित चंद्र यंत्र को स्थापित करना चाहिए।
- यदि भवन में निवास करने वाले सदस्यों को मन नहीं लगने, इन्पफेक्शन, अंतड़ियों की समस्या, भय, आर्थिक हानि आदि समस्या ये रहती हो तो भवन का नैऋत्य कोण में दोष होता हैं। एसी स्थिती में भवन के नैऋत्य कोण में मंत्र सिद्ध प्राण-प्रतिष्ठित राहु यंत्र और मृत्यंजय यंत्र को स्थापित करना चाहिए। नैऋत्य कोण में 7 इंच का गड्ढा खोदकर उसमें सवा 5 से 7 रत्ती का अभिमंत्रित गोमेद दबा देना चाहिए।
- यदि भवन के दक्षिण भाग में दोष हो तो प्रायः समय उस भवन में निवासकर्ता चिंता-तनाव आदि से ग्रस्त रहते हैं। मंत्र सिद्ध प्राण-प्रतिष्ठित त्रिकोण मंगल यंत्र को स्थापित करना चाहिए।
- यदि भवन के वायव्य कोण में दोष हो तो प्रायः निवास कर्ता को कार्य क्षेत्र में समस्याओं का सामना करना पड़ता हैं। मंत्र सिद्ध प्राण-प्रतिष्ठित केतु यंत्र को स्थापित करना चाहिए।
- यदि भवन के पश्चिम भाग में दोष हो तो मंत्र सिद्ध प्राण-प्रतिष्ठित शनि यंत्र को स्थापित करना चाहिए। भवन के मुख्य द्वार पर घोड़े की नाल को U आकार में लगाना चाहिए। उल्टा लगाने से विपरित परिणामों से सम्मुखिन होना पड़ता हैं।
- यदि भवन पूर्व भाग में दोष हो तो मंत्र सिद्ध प्राण-प्रतिष्ठित सूर्य यंत्र को स्थापित करना चाहिए।
- भवन के ईशान कोण में दोष हो तो वास्तुदोषों को दूर करने हेतु मंत्र सिद्ध प्राण-प्रतिष्ठित बृहस्पति यंत्र को स्थापित करना चाहिए।
- इससे इन दोनों दिशाओं जनित वास्तुदोष दूर होते हैं।

प्रकृति की अलौकिक देन रुद्राक्ष

✍ संकलन गुरुत्व कार्यालय

रुद्राक्ष की उत्पत्ति कैसे हुई

रुद्रस्य अक्षि रुद्राक्ष:, अक्ष्युपलक्षितम्
अश्रु, तज्जन्य: वृक्ष:।
पुटाभ्यां चारुचक्षुर्भ्यां पतिता जलबिंदव:।
तत्राश्रुबिन्दवो जाता वृक्षा रुद्राक्षसंज्ञका:॥

रुद्राक्ष को भगवान शिव का प्रतिक माना जाता है। रुद्राक्ष की उत्पत्ति भगवान शिव के अश्रु से हुइथी इस लिये इसे रुद्राक्ष कह जाता है। रुद्र का अर्थ है शिव और अक्ष का अर्थ है आँख। दोनो को मिलाकर रुद्राक्ष बना।

रूद्र+अक्ष शब्द का संयोग रूद्राक्ष कहलाता है । रुद्र का अर्थ है । भगवान शिव का रौद्र रूप और अक्ष का अर्थ है आँख । दोनो को मिलाकर रुद्राक्ष बना ।

रुद्राक्ष भगवान शिव को प्रसन्न करने के लिए विशेष रुप से फलदायी सिद्ध होता हैं।

धर्मग्रंथों, शास्त्रों व पुराणों में रुद्राक्ष की महिमा का विस्तार से वर्णन किया गया है। यहां पाठको के मार्गदर्शन के लिए कुछ प्रमुख ग्रंथो में उल्लेखित रुद्राक्ष से संबंधित जानकारीयां दी जा रही हैं।

रुद्राक्ष भगवान शिव को प्रसन्न करने के लिए विशेष रुप से फलदायी सिद्ध होता हैं। पुराणों में रुद्राक्ष की महिमा का विस्तार से वर्णन किया गया है। रुद्राक्ष धारण करने से सौभाग्य प्राप्त होता है।

रुद्राक्ष के गुणो का विस्तृत वर्णन लिंगपुराण, मत्स्यपुराण, स्कंदपुराण, शिवमहापुराण, पदमपुराण, महाकाल संहिता मन्त्र, महार्णव निर्णय सिन्धु, बृहज्जाबालोपनिषद्, कालिकापुराण, रूद्राक्ष जबलोपनिषद, वाराह पुराण, विष्णुधर्मोत्तर पुराण, शिवतत्त्व रत्नाकार, बालोपनिषद, रुद्रपुराण, काठक संहिता, कात्यायनी तंत्र, श्रीमदभागवत, देवी भागवत, मुण्डकोपनिषद, भगवत कर्मपुराण, ऋग्वेद, यजुर्वेद, अथर्ववेद, पारस्कर ग्रहसूत्र, विष्णुधर्म सूत्र, समरांगण सूत्रधार, याज्ञवलक्य स्मृति, नित्याचार प्रदीप, वैदिक देवता कल्याण आदि उपनिषदो एवं तन्त्र मन्त्र आदि ग्रन्थो मे मिलता है। विद्वानो के मत से

रुद्राक्ष की उत्पत्ति के संबंध में विभिन्न ग्रंथो में विभिन्न पौराणिक कथाएं प्रचलित हैं।

एक कथा के अनुसार:

एक बार भगवान शिव ने सैकडों हजार वर्षो तक अंतर्ध्यान रहे। जब भगवान शिव ने ध्यान पूर्ण होने के बाद जब शिवजी ने अपने नेत्र खोले, तो उनके नेत्र से आंसुओं की धारा निकलने लगी। शिवजी के नेत्रों से निकली यहं दिव्य अश्रु-बूंद भूलोक पर गिरी, भूलोक पर जहां-जहां भी अश्रु बुंदे गिरे, उनसे अंकुरण फूट पडा! बाद में यही रुद्राक्ष के वृक्ष बन गए। कालांतर में यही रुद्राक्ष शिव भक्तो के प्रिय बन कर समग्र विश्व में व्याप्त हो गए।

दूसरी कथा के अनुशार:

एक बार सती के पिता दक्ष प्रजापति ने अपने यहां यज्ञ का आयोजन किया। हवन करते समय दक्षने भगवान शिव का अपमान कर दिया। शिवजी के अपमान पर क्रोधित होकर शिव की पत्नी सती ने स्वयं को

अग्निकुंड में समाहित करलिया। सती का जला शरीर देख कर शिव अत्यंत क्रोधित हो गए।

भगवान शिव ने उन्मत कि भांति सती के जले हुए शरीर को कंधे पर रख वे सभी दिशाओं में भ्रमण करने लगे। सृष्टि व्याकुल हो उठी भयानक संकट उपस्थित देखकर सृष्टि के पालक भगवान विष्णु आगे बढ़े। उन्हों ने भगवान शिव कि बेसुधी में अपने चक्र से सती के एक-एक अंग को काट-काट कर गिराने लगे। धरती पर इक्यावन स्थानों में सती के अंग कट-कटकर गिरे। जब सती के सारे अंग कट कर गिर गए, तो भगवान शिव पुनः अपने आप में वापस आए। तब शिवजी के नेत्रों से आंसू निकले और उससे रुद्राक्ष के वृक्ष उत्पन्न हो गए।

कुछ विद्वानो का मानना हैं शिवजी ने सती का पार्थिव शरीर अपने कंधे लेकर संपूर्ण ब्रह्मांड को भस्म कर देने के उद्देश्य से तांडव नृत्य करने लगे। सती का जला शरीर धीरे-धीरे पूरे ब्रह्मांड में बिखर ने लगा। अंत में सिर्फ उनके देह की भस्म ही शिवजी के शरीर पर रह गई, जिसे देख कर शिवजी रो पडे उस समय जो आंसू उनकी आंखों से गिरे, वही पृथ्वी पर रुद्राक्ष के वृक्ष बने।

स्कंद पुराण की कथा:

एक बार भगवान कार्तिक ने अपने पिता भगवान शिवजी से पूछा:- हे पिता श्री ! यह रुद्राक्ष कया हैं?

रुद्राक्ष को धाराण करना इस लोक और परलोक में श्रेष्ठ क्यों माना जाता हैं?

रुद्राक्ष के कितने मुख होते हैं? उसके कौन से मंत्र हैं? मनुष्य रुद्राक्ष को किस प्रकार धारण करें? कृपा कर यह सब आप मुझे विस्तार से समझाए?

शिव जी बोले हे षडानन रुद्राक्ष की उत्पत्ति का वर्णन मैं तुम्हें संक्षिप्त में बता रहा हूं।

शंकर उवाच:

श्रृणु षण्मुख तत्त्वेन कथयामि समासतः।
त्रिपुरो नाम दैत्येन्द्रः पूर्वमासीत्सुदुर्जयः॥

अर्थात: हे षडानन (छह वाला) स्कंदजी ! तुम सुनो, पूर्वकाल में त्रिपुर नामक एक महान शक्तिशाली व पराक्रमी दैत्यों का राजा हुआ था। त्रिपुर को जीतने में देव-दानव में से कोई भी समर्थ नहीं था।

उसने अपने पराक्रम से संपूर्ण देवलोक को जील लिया। तब ब्रह्मा, विष्णुअ, इन्द्रादि सभी देव एवं मुनि गण मेरे पास आए और दैत्यराज त्रिपुर को मारने की प्राथना की। तब मैने त्रिपुर को मारने का निश्चितय किया। लेकिन त्रिपुर को हम त्रिदेवों से अनेक वर प्राप्त थे, इसलिए युद्ध में एक हजार दिव्य वर्षों तक का लम्बा समय लगा।

तब मैंने बिजली के समान चमकदार एवं दिव्य तेजयुक्त कालाग्नि नामक अमोद्य शस्त्र से त्रिपुर पर तीव्र प्रकार कियी। उस दिव्य शस्त्र की दिव्य विस्फोटक चमक को देखने में किसी के भी नेत्र देख ने में समर्थता नहीं थी उसी समय कुछ क्षण के लिए मेरे नेत्र बंद रहे। योगमाया की अद्भुत लीलासे जब मैने अपने दोनों नेत्रो को खोला तब नेत्रों से स्वतः ही अश्रु की कुछ बुंदे गिरी।

तेनाश्रुबिंदुभिर्जाता मर्त्ये रुद्राक्षभूरुहाः।

उस नेत्र से निकले अश्रृ बिंदु से भूलोक में रुद्राक्ष के वृक्ष उत्पन्न हो गए।

भक्तों पर कृपा करने के लिए एवं संसारका कल्याण हो इस लक्ष्य से मेरे ये अश्रुबिंदु रुद्राक्ष के रुप में व्याप्त हो गये और रुद्राक्ष के नाम से विख्यात हो गए, ये षडानन रुद्राक्ष को धारण करने से महापुण्य प्राप्त होता हैं। इसमें तनिक भी संदेह नहीं है।

फिर मैंने रुद्राक्ष को विष्णु भक्तों तथा चारों वर्गों के लोगो को बांट दिए। शिवजी बोले भूलोक पर अपने भक्तो के कल्याणार्थ मैंने रुद्राक्ष को भिन्न स्थानो में रुद्राक्ष के अंकुर उगा कर उन्हें उत्पन्न किया।

>> क्रमशः अगले अंक में ...

***

वर्णमाला के अनुशार स्वप्न फल विचार

स्वस्तिक.ऐन.जोशी, श्रेया.ऐस.जोशी, निधि व्यास



- स्वप्न में अखरोट देखना धन प्राप्ति एवं उत्तम प्रकार का भोजन मिलने का संकेत है।
- स्वप्न में अनाज देखना मानसिक चिंता में वृद्धि का संकेत है।
- स्वप्न में स्वयं को मीठा अनार खाते देखना धन प्राप्ति का संकेत है।
- स्वप्न में स्वयं को अनार के पत्ते खाते देखना शीघ्र विवाह एवं दांपत्य सुख में वृद्धि का संकेत है।
- स्वप्न में किसी अजनबी से भेट होते देखना किसी अनिष्ट फल के मिलने का संकेत है।
- स्वप्न में स्वयं को अजवायन खाते देखना स्वास्थ लाभ का संकेत है।
- स्वप्न में स्वयं को अमरुद खाते देखना धन प्राप्ति का संकेत है।
- स्वप्न में स्वयं को अनानास खाते देखना परेशानी के बाद राहत मिलने का संकेत है।
- स्वप्न में स्वयं को अदरक खाते देखना मान सम्मान में वृद्धि का संकेत है।
- स्वप्न में स्वयं को अरहर खाते देखना पेट दर्द या पेट के रोग होने का संकेत है।
- स्वप्न में स्वयं को अंगूर खाते देखना स्वस्थ्य लाभ मिलने का संकेत है।
- स्वप्न में स्वयंको अचार खाते या बनाते देखना सिर दर्द अथवा पेट दर्द होने का संकेत है।
- स्वप्न में किसे अध्यापक देखना किसी कार्य में सफलता मिलने का संकेत है।
- स्वप्न में अँधेरा दिखे तो यह विपत्तियों के आने का संकेत है।
- स्वप्न में अन्ध व्यक्ति को देखना किसी महत्वपूर्ण कार्य में रुकावट का संकेत है।
- स्वप्न में अप्सरा को देखना धन प्राप्ति एवं सामाजिक मान सम्मान में वृद्धि का संकेत है।
- स्वप्न में अंतिम संस्कार या अर्थी देखना धन लाभ का संकेत है।
- स्वप्न में अमलतास के फूल देखना पीलिया या कोढ़ रोग के होने का संकेत है।
- स्वप्न में अरहर की दाल देखना शुभ संकेत है।
- स्वप्न में अरबी देखना सिर में या पेट में दर्द होने का संकेत है।
- स्वप्न में अलमारी बंद देखना धन प्राप्ति का संकेत है।
- स्वप्न में अलमारी खुली देखना धन हानि का संकेत है।
- स्वप्न में अंग रक्षक का दिखना शरीर पर चोट लगने का संकेत है।
- स्वप्न में स्वयं पर अन्य द्वारा हमला देखना होते देखना दिर्धायु का संकेत है।
- स्वप्न में किसी के अंग कटे देखना स्वास्थ लाभ का संकेत है।
- स्वप्न में अंग दान करते देखना किसी पुरस्कार की प्राप्ति या सुनहरे भविष्य का संकेत है।
- स्वप्न में अंगुली कटते देखना पारिवारीक झगडे एवं कलेश का संकेत है।
- स्वप्न में अंगूठा चूसते देखना पारिवारीक संपत्ति के वाद-विवाद होने का संकेत है।
- स्वप्न में अंत्येष्ठी देखना पारिवार में किसी मांगलिक कार्य के संपन्न होने का संकेत है।
- स्वप्न में अस्थि देखना किसी संकट के टलने का संकेत है।

- स्वप्न में अंजन (सुरमा) देखना नेत्र रोग होने का संकेत है।
- स्वप्न में स्वयंको अकेले देखना दूरस्थ यात्रा पर जाने का संकेत है।
- स्वप्न में अख़बार देखना किसी से वाद-विवाद होने का संकेत है।
- स्वप्न में स्वयं को अट्हास करते देखना अशुभ समाचार मिलने का संकेत है।
- स्वप्न में स्वयं को अध्यक्ष बनते देखना सामाजिक मान-सम्मान की हानि होने का संकेत है।
- स्वप्न में स्वयं को अध्यन करते देखना असफलता मिलने का संकेत है।
- स्वप्न में अपहरण देखना दिर्धायु का संकेत है।
- स्वप्न में स्वयं को अभिमान करते देखना किसी प्रियजन से अपमानित होने का संकेत है।
- स्वप्न में अर्धचन्द्रमा देखना किसी स्त्री से सहयोग मिलने का संकेत है।
- स्वप्न में अमावस्या होते देखना दुःख एवं संकटों से छुटकाराका मिलने का संकेत है।
- स्वप्न में अगरबत्ती देखना किसी धार्मिक अनुष्ठान में शामिल होने का संकेत है।
- स्वप्न में अग्नि युक्त अगरबत्ती देखना दुर्घटना का संकेत है।
- स्वप्न में स्वयं को अगरबत्ती अर्पित करते देखना शुभ संकेत है।
- स्वप्न में अस्पष्ट अक्षर पढ़ते देखना दुखद समाचार मिलने का संकेत है।
- स्वप्न में बुझी हुई अंगीठी देखना शुभ संकेत है।
- स्वप्न में अंगीठी जलती देखना अशुभ संकेत है।
- स्वप्न में अंगारों पर चलते देखना शारीरिक पीड़ा का संकेत है।
- स्वप्न में अनोखी या अजीब वस्तु देखना प्रियजन से मिलाप का संकेत है।
- स्वप्न में अजगर देखना शुभ संकेत है।
- स्वप्न में अस्त्र देखना किसी संकट से रक्षा का संकेत है।
- स्वप्न में स्वयं को अस्त्र से कटा हुवा देखना किसी बड़ि विपत्ति के आने का संकेत है।
- स्वप्न में सम संख्या वाले अंक देखना अशुभ संकेत है।
- स्वप्न में विषम संख्या वाले अंक देखना शुभ संकेत है।

>> क्रमशः अगले अंक में ...

अंक ज्योतिष का रहस्य

संकलन गुरुत्व कार्यालय

मूलांक 1 स्वामी सूर्य

मूलांक:- 1
स्वामी ग्रह:- सूय
मित्र अंक:- 2,3,9
शत्रु अंक:- 6,8
सम-5-
स्व अंक-1
तत्व:- अग्नि

यदि किसी व्यक्ति का जन्म किसी भी मास की 1, 10, 19 व 28 तारीख को हुवा हैं तो उनका मूलांक 1 होता है।

मूलांक 1 अंक के व्यक्ति मेहनती, उद्यमी और स्थिर विचार धारा वाले दृढ़ निश्चयी होते हैं। व्यक्ति की प्रकृति कार्य क्षेत्र में अधिक स्थिरता युक्त होती हैं।



मूलांक 1 का स्वामी ग्रह सूर्य हैं, इस लिए मूलांक 1 में जन्म लेने वाले व्यक्ति के उपर सूर्य का विशेष प्रभाव देखने को मिलता हैं, क्योकि 1 मूलांक में जन्म लेने के कारण व्यक्ति के भितर सूर्य ग्रह की अनुकूलता के कारण सूर्य ग्रह के गुणों का समावेश अन्य ग्रहों की अपेक्षा भरपूर मात्रा में हो जाता हैं। सूर्य ग्रह के इस विशेष प्रभावि गुणों के कारण ही व्यक्ति में नेतृत्व की भावना भी प्रबल होती हैं। एसे व्यक्ति जिस कार्य को भी अपने हाथ में लेते हैं, उस कार्य को अच्छी तरह निभाते हैं व्यक्ति के भितर उस कार्य को संपन्न करने का सामर्थ्य विशेष रुप से होता हैं। व्यक्ति अत्याधिक सहनशील, सहिष्णु एवं गंभीर होते हैं। व्यक्ति के जीवन में निरंतर उत्थान-पतन होत रहते हैं तथा संघर्ष इनके जीवन का मुख्य अंश होता हैं। व्यक्ति का आर्थिक पक्ष मजबुत होता हैं। व्यक्ति निरंतर धन अर्जित करने वाला होता हैं।

मूलांक 1 वाले व्यक्ति यदि नौकरी करते हैं तो वह शीध्र उच्च पद पर आसीन होने का प्रयास करते हैं तथा यदि वह व्यापारी हैं तो दिन-रात परिश्रम कर अपने व्यापारी वर्ग में प्रमुख स्थान बनाने में समर्थ होते हैं। व्यक्ति चाहे व्यापार के क्षेत्र में हो या नौकरी के उसके नेतृत्व करने में कोई कमी नहीं आएगी।

एसे व्यक्ति निर्णय लेने में चतुर होते हैं, स्वतंत्र एवं स्वस्थ चिंतन इनकी प्रमुख विशेषता होती हैं। इनका व्यक्तित्व स्वतः ही दूसरों से अलग दिखाई देगा, किसी के दबाव में ये व्यक्ति कार्य नहीं कर सकते हैं।

व्यक्ति अपने जीवन का अधिकतर समय प्रत्येक क्षेत्र में परिवर्तन करने में खर्च कर देते हैं परिवर्तन इनका स्वाभाव होता हैं, पूरानी जीवन शैली पर चलने के अभ्यस्त नहीं होते हैं। सुंदर, सुरूचिपूर्ण जीवन में ये विश्वास रखते हैं। व्यक्ति जीवन को जीना अच्छी तरह जानते हैं।

मूलांक 1 में जन्में व्यक्ति अत्याधिक अनुशासन प्रिय होते हैं। व्यक्ति को किसी के दबाव में या किसी के दबाव में अंदर रहकर कार्य करना पसंद नहीं होता व्यक्ति स्वतंत्रता प्रिय होते हैं इस लिए व्यक्ति को अपने उच्चाधिकारी या किसी और का हस्तक्षेप पसंद नहीं होता हैं। जिस प्रकार ज्योतिष ग्रंथों में उल्लेख हैं की सूर्य ग्रह की प्रधानता वाले व्यक्ति जीवन में राजयोग का सुख भोगते हैं (अर्थात राजा के समान सुख प्राप्त करने वाले होते हैं) ठीक उसी प्रकार अंक शास्त्र के

अनुशार भी मूलांक एक वाले व्यक्ति भी जीवन में अपने कर्म से राजा के समान सुख को शीघ्र प्राप्त करने में सक्षम होते हैं।

मूलांक 1 वाले व्यक्ति सूर्य के प्रभाव से स्थिर विचारधारा वाले अपने निश्चय पर दृढ़ रहने वाले होते हैं। इस लिए व्यक्ति जीवन में जब भी किसी को अपना वचन देते हैं, तो व्यक्ति उस वचन को निभाने का पूर्ण प्रयत्न करता हैं। व्यक्ति थोडे ज़िद्दी स्वभाव के होते हैं जिस कारण व्यक्तिकिसी महत्वपूर्ण निर्णय लेने में लापरचाही बरते हैं और अपने जीवन के किसी मोड़ पर उसका खामियाजा भुगतते हैं। व्यक्ति अपनी ज़िद्द के कारण कभी कभी अनुचित कर्मों में सलग्न हो जाते हैं और पारिवारीक लोगों एवं प्रियजनो से अपमानित होते हैं। क्योकि एसे व्यक्ति के दिमाग में एक बार जो बात बैठ जाती हैं वह अधिक समय तक निकलती नहीं। फिर चाहें वह बात सही हो या गलत व्यक्ति उसी बात पर अडे रहते हैं।

मूलांक 1 वाले व्यक्ति जिससे मित्रता करते हैं उसे पूर्णतः वफादारी से निभाते हैं, और यदि किसी से शत्रुता करते हैं तो उसे जल्द भुलाते नहीं और उस शत्रुताको लम्बे समय तक खिचने का प्रयत्न करने से पीछे नहीं हटते। व्यक्ति निरंतर अपने शत्रु पक्ष पर हावि होने का प्रयत्न करते रहते हैं और अधिकतर मामलों में व्यक्ति शत्रु को परेशान करके या पराजित करके ही दम लेते हैं। व्यक्ति को गुप्त शत्रुओं का हमेशां खतरा रहता हैं, व्यक्ति के अधिकतर शत्रु उससे सीधे भिड़ने से कतराते हैं लेकिन उसके शत्रु पीछेसे वार करने की ताकमें रहते हैं, इस लिए व्यक्ति को शत्रु पक्ष से हमेशा सावधान रहना चाहिए, शत्रु के विषय में व्यक्ति को किसी भी प्रकार की गलतफ़हमी, अफवाह या उसे कमजो़र समझ ने की भूल नहीं करनी चाहिए क्योकि जरूरत से अधिक आत्मविश्वास हानीकारक होता हैं। इस लिए व्यक्ति को अपनी रक्षा हेतु हमेशा सचेत और सजग रहना चाहिए।

मूलांक 1 वाले व्यक्ति न्याय प्रिय एवं उदार हृदय के होते हैं, इस लिए व्यक्ति दूसरों की सहायता करने में भी तत्पर होते हैं। व्यक्ति में समाज के लिए कुछ कर गुज़रने की भावना भी प्रबल होती हैं, इस कारण व्यक्ति निरंतर अपने कार्य से ज्यादा दूसरों की कार्यों में उलझा रहता हैं। एसे व्यक्ति सामाजिक कार्यों से खुब नाम और यश प्राप्त करते हैं। मूलांक 1 वाले कुछ व्यक्तियों में कुछ मात्रा में अहं भी पाया जाता हैं। व्यक्ति के कर्मक्षेत्र के अनुशार उसकी प्रशंसा करने वाले अधिक होते हैं जिस कारण व्यक्ति को कभी किसी चिज और पैसों की कमी महसूस नहीं होती। आवश्यक्ता पड़ने पर व्यक्ति को विभिन्न स्त्रोत से पैसे की मदद भी मिल जाती है।

प्रेम संबंधित मामलों में व्यक्ति अधिक भावुक होते हैं, यदि किसी से एक बार प्रेम करले तो उसके लिए कुछ भी करने को तैयार हो जाते हैं, प्रेम के मामलों में एसे व्यक्ति उचित अनुचित कार्य करने से भी पीछे नहीं हटते।

मूलांक 1 वाले व्यक्ति सुंदर, स्वरुपवान और अच्छे देहधारी होते हैं। इन लोगों की आखें तेजस्वी होती हैं जिसमें अद्भुत तेज होता है। मूलांक 1 वाले व्यक्ति थोडे खर्चीले होते हैं। मूलांक 1 वाले व्यक्ति का अध्यात्म की ओर विशेष रुझान रहता है।

शुभ दिन:

मूलांक 1 वाले व्यक्ति के लिए शुभ वर्ष 19, 28, 37, 46, 55, 64, 73 वां वर्ष हैं, हर महिने की 1, 10, 19, 28 तिथियां शुभ दायक होती हैं, व्यक्ति के लिए रविवार, सोमवार व गुरुवार का दिन शुभ होता है। यदि सम्बन्धित तारीखों में सम्बन्धित दिन का योग हो तो वह दिन उसके लिए अमृत सिद्ध योग बन जाता है। व्यक्ति के लिए जनवरी, अप्रैल, जुलाई एवं अक्टूबर, माह शुभ होता है। मार्च, जून, सितम्बर के महीने में सावधान रहें।

स्वास्थ्य:

मूलांक 1 वाले व्यक्ति को तीव्र ज्वर, हृदय रोग, आँख का दुखना, चर्म रोग, चोट, कोढ़, मस्तिश्क संबंधि परेषानि, अपच, गठिआ, स्नायुविकार, आंतों के रोग

तथा घुटने आदि की षिकायते होती हैं। जिन व्यक्तियों का मूलांक-1 हैं वे किसी ना किसी रूप में हृदय से संबंधि रोगों से पीड़ित होते हैं। दिल की धड़कने और रक्त प्रवाह अनियमित हो जाता हैं। आँख का दुखना एवं दृश्टि दोश जैसे रोग होते हैं। उचित हैं आप समय-समय पर आँखों का परिक्षण करवाते रहें।

उपयुक्त आहारः

किशमिश, सौंफ, केसर, लौंग, जायफल, संतरे, नींबू, मोसंबी, खजूर, अदरक, जौ, पालक, गाजर आदि उपयोगी हैं। हृदय रोग के नमक कम खना चाहिये।

अनुकूल व्यवसाय:

व्यक्ति बिजली, चिकित्सा, राजदूत, विज्ञान, आभूषण, नेतृत्व, समृद्री व्यवसाय, प्रधान पद, हुकुमत, श्रमशील कार्य, सैन्य विभाग, सरकारी कार्यो की ठेकेदारी, प्रशासनिक सेवा, खोज कार्य, जहाजों से संबंध रखने वाले कल-पुर्जे तथा जवाहरात आदि व्यवसाय में अधिक सफल होते हैं।

शुभ दिशा:

मूलांक 1 के व्यक्ति के लिए ईशान, वायव्य एवं दक्षिण दिशा शुभ होती है व्यक्ति के लिए माणिक्य, मूँगा, मोती एवं पोखराज रत्न अनुकूल फलादायी होंगे। पीला हीरा भी धारण करना अनुकूल होगा। व्यक्ति के लिए श्वेत, गुलाबी, ताम्रवर्ण एवं पीला रंग अनुकूल हैं।

मूलांक 1 के व्यक्ति के लिए कष्ट निवारक उपाय

- आपका **मूलांक** के स्वामी ग्रह सूर्य के शुभ प्रभावो की वृद्धि हेतु आप अपनी अनामिका उंगली में माणिक धारण कर सकते हैं। अपने पूजा स्थान में प्राण-प्रतिष्ठित मंगल गणेश, सूर्य यंत्र को स्थापित कर सकते हैं।
- यदि आर्थिक समस्या हो तो प्राण-प्रतिष्ठित श्रीयंत्र का नियमित पूजन करना लाभप्रद रहेगा।

ग्रह शांति के लिए व्रत उपवास:

रविवार का व्रत: सूर्य ग्रह को प्रसन्न करने हेतु रविवार का व्रत किया जाता हैं। सूर्य का व्रत करने से हडीया मजबूत होती हैं, पेट संबंधी सभी रोगो का विनाश होता हैं, आंखो कि रोशनी बढती हैं, व्यक्ति का साहर एवं क्षमता में वृद्धि होकर उसका यश चारों और बढता हैं। रविवार का व्रत करने से सूर्य के प्रभाव में आने वाले सभी व्यवसाय एवं वस्तुओ से लाभ प्राप्त होता हैं।

ग्रह शांति के लिए उपयुक्त रुद्राक्ष:

आपका **मूलांक** स्वामी सूर्य हैं अतः सूर्य ग्रह के अशुभ प्रभाव को दूर करने और शुभफलों की प्राप्ति के लिए 1 मुखी या 12 मुखी रुद्राक्ष धारण करना आपके लिए उपयुक्त रहेगा। आप 1 मुखी या 12 मुखी रुद्राक्ष के साथ में 5 मुखी और 3 मुखी रुद्राक्ष भी धारण करने से आपको विशेष शुभ परिणामो की प्राप्ति होगी।

शांति के लिए दान

ग्रह:- सूर्य

वार:- रविवार

सूर्य ग्रह कि शांति हेतु गेहूँ, ताँबा, घी, गुड़, माणिक्य, लाल कपड़ा, मसूरकी दाल, कनेर या कमल के फूल, गौ दान करने से शुभ फल कि प्राप्ति होती हैं

ग्रह शांति के अन्य सरल उपाय:

- स्वास्थ्य संबंधित समस्या दूर करने हेतु शुक्रवार के दिन बहते पानी में सात बादाम और एक नारियल प्रवाहित करें।
- कार्य सिद्धि हेतु सात शुक्रवार कुएं में फिटकरी का टुकड़ा डालें।
- शिक्षा से संबंधित समस्या दूर करने के लिए कुत्ते को रोटी खिलाएं।
- भाग्योदय हेतु लाल रंग का रुमाल अपने पास रखें।
- सौभाग्य वृद्धि हेतु गणेश जी को सुखा मेवा चढाएं।
- अपने मान-सम्मान एवं प्रतिष्ठा बढाने हेतु नियमित सूर्य को अध्य दें और लाल चंदन का टीका लगाएं।

>> क्रमश: अगले अंक में ...

मंत्र सिद्ध दुर्लभ सामग्री

काली हल्दी:- 370, 550, 730, 1450, 1900	कमल गट्टे की माला - Rs- 370
माया जाल- Rs- 251, 551, 751	हल्दी माला - Rs- 280
धन वृद्धि हकीक सेट Rs-280 (काली हल्दी के साथ Rs-550)	तुलसी माला - Rs- 190, 280, 370, 460
घोडे की नाल- Rs.351, 551, 751	नवरत्न माला- Rs- 1050, 1900, 2800, 3700 & Above
हकीक: 11 नंग-Rs-190, 21 नंग Rs-370	नवरंगी हकीक माला Rs- 280, 460, 730
लघु श्रीफल: 1 नंग-Rs-21, 11 नंग-Rs-190	हकीक माला (सात रंग) Rs- 280, 460, 730, 910
नाग केशर: 11 ग्राम, Rs-145	मूंगे की माला Rs- 190, 280, Real -1050, 1900 & Above
स्फटिक माला- Rs- 235, 280, 460, 730, DC 1050, 1250	पारद माला Rs- 1450, 1900, 2800 & Above
सफेद चंदन माला - Rs- 460, 640, 910	वैजयंती माला Rs- 190, 280, 460
रक्त (लाल) चंदन - Rs- 370, 550,	रुद्राक्ष माला: 190, 280, 460, 730, 1050, 1450
मोती माला- Rs- 460, 730, 1250, 1450 & Above	विधुत माला - Rs- 190, 280
कामिया सिंदूर- Rs- 460, 730, 1050, 1450, & Above	मूल्य में अंतर छोटे से बड़े आकार के कारण हैं। >> Shop Online | Order Now

मंत्र सिद्ध स्फटिक श्री यंत्र

"श्री यंत्र" सबसे महत्वपूर्ण एवं शक्तिशाली यंत्र है। "श्री यंत्र" को यंत्र राज कहा जाता है क्योकि यह अत्यन्त शुभ फ़लदयी यंत्र है। जो न केवल दूसरे यन्त्रो से अधिक से अधिक लाभ देने मे समर्थ है एवं संसार के हर व्यक्ति के लिए फायदेमंद साबित होता है। पूर्ण प्राण-प्रतिष्ठित एवं पूर्ण चैतन्य युक्त "श्री यंत्र" जिस व्यक्ति के घर मे होता है उसके लिये "श्री यंत्र" अत्यन्त फ़लदायी सिद्ध होता है उसके दर्शन मात्र से अन-गिनत लाभ एवं सुख की प्राप्ति होति है। "श्री यंत्र" मे समाई अद्रितिय एवं अद्रश्य शक्ति मनुष्य की समस्त शुभ इच्छाओं को पूरा करने मे समर्थ होति है। जिस्से उसका जीवन से हताशा और निराशा दूर होकर वह मनुष्य असफ़लता से सफ़लता कि और निरन्तर गति करने लगता है एवं उसे जीवन मे समस्त भौतिक सुखो कि प्राप्ति होति है। "श्री यंत्र" मनुष्य जीवन में उत्पन्न होने वाली समस्या-बाधा एवं नकारात्मक उर्जा को दूर कर सकारत्मक उर्जा का निर्माण करने मे समर्थ है। "श्री यंत्र" की स्थापन से घर या व्यापार के स्थान पर स्थापित करने से वास्तु दोष य वास्तु से सम्बन्धित परेशानि मे न्युनता आति है व सुख-समृद्धि, शांति एवं ऐश्वर्य कि प्रप्ति होती है। >> Shop Online | Order Now

गुरुत्व कार्यालय मे विभिन्न आकार के "श्री यंत्र" उप्लब्ध है

मूल्य:- प्रति ग्राम Rs. 28.00 से Rs.100.00

सर्व कार्य सिद्धि कवच

जिस व्यक्ति को लाख प्रयत्न और परिश्रम करने के बादभी उसे मनोवांछित सफलताये एवं किये गये कार्य में सिद्धि (लाभ) प्राप्त नहीं होती, उस व्यक्ति को सर्व कार्य सिद्धि कवच अवश्य धारण करना चाहिये।

कवच के प्रमुख लाभ: सर्व कार्य सिद्धि कवच के द्वारा सुख समृद्धि और **नव ग्रहों** के नकारात्मक प्रभाव को शांत कर धारण करता व्यक्ति के जीवन से सर्व प्रकार के दु:ख-दारिद्र का नाश हो कर सुख-सौभाग्य एवं उन्नति प्राप्ति होकर जीवन मे सभि प्रकार के शुभ कार्य सिद्ध होते हैं। जिसे धारण करने से व्यक्ति यदि व्यवसाय करता होतो कारोबार मे वृद्धि होति हैं और यदि नौकरी करता होतो उसमे उन्नति होती हैं।

- सर्व कार्य सिद्धि कवच के साथ में **सर्वजन वशीकरण** कवच के मिले होने की वजह से धारण कर्ता की बात का दूसरे व्यक्तिओ पर प्रभाव बना रहता हैं।
- सर्व कार्य सिद्धि कवच के साथ में **अष्ट लक्ष्मी** कवच के मिले होने की वजह से व्यक्ति पर सदा मां महा लक्ष्मी की कृपा एवं आशीर्वाद बना रहता हैं। जिस्से मां लक्ष्मी के अष्ट रुप (१)-आदि लक्ष्मी, (२)-धान्य लक्ष्मी, (३)- धैर्य लक्ष्मी, (४)-गज लक्ष्मी, (५)-संतान लक्ष्मी, (६)-विजय लक्ष्मी, (७)-विद्या लक्ष्मी और (८)-धन लक्ष्मी इन सभी रुपो का अशीर्वाद प्राप्त होता हैं।
- सर्व कार्य सिद्धि कवच के साथ में **तंत्र रक्षा** कवच के मिले होने की वजह से तांत्रिक बाधाए दूर होती हैं, साथ ही नकारात्मक शक्तियो का कोइ कुप्रभाव धारण कर्ता व्यक्ति पर नहीं होता। इस कवच के प्रभाव से इर्षा-द्वेष रखने वाले व्यक्तिओ द्वारा होने वाले दुष्ट प्रभावो से रक्षा होती हैं।
- सर्व कार्य सिद्धि कवच के साथ में **शत्रु विजय** कवच के मिले होने की वजह से शत्रु से संबंधित समस्त परेशानिओ से स्वतः ही छुटकारा मिल जाता हैं। कवच के प्रभाव से शत्रु धारण कर्ता व्यक्ति का चाहकर कुछ नही बिगाड़ सकते।

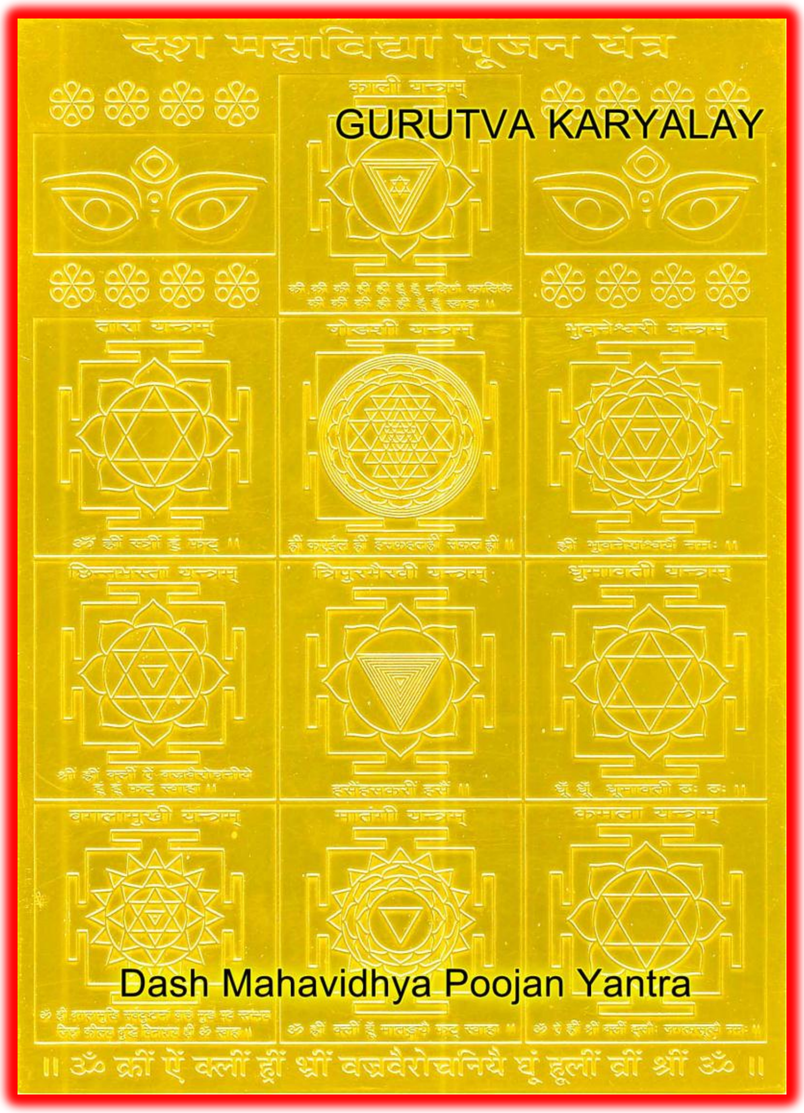
अन्य कवच के बारे मे अधिक जानकारी के लिये कार्यालय में संपर्क करे:

किसी व्यक्ति विशेष को सर्व कार्य सिद्धि कवच देने नही देना का अंतिम निर्णय हमारे पास सुरक्षित हैं।

>> Shop Online | Order Now

GURUTVA KARYALAY
92/3. BANK COLONY, BRAHMESHWAR PATNA, BHUBNESWAR-751018, (ODISHA)
Call Us - 9338213418, 9238328785
Our Website:- www.gurutvakaryalay.com and http://gurutvakaryalay.blogspot.com/
Email Us:- gurutva_karyalay@yahoo.in, gurutva.karyalay@gmail.com

दस महाविद्या पूजन यंत्र



दस महाविद्या पूजन यंत्र को देवी दस महाविद्या की शक्तियों से युक्त अत्यंत प्रभावशाली और दुर्लभ यंत्र माना गया हैं।

इस यंत्र के माध्यम से साधक के परिवार पर दसो महाविद्याओं का आशिर्वाद प्राप्त होता हैं। दस महाविद्या यंत्र के नियमित पूजन-दर्शन से मनुष्य की सभी मनोकामनाओं की पूर्ति होती हैं। दस महाविद्या यंत्र साधक की समस्त इच्छाओं को पूर्ण करने में समर्थ हैं। दस महाविद्या यंत्र मनुष्य को शक्तिसंपन्न एवं भूमिवान बनाने में समर्थ हैं।

दस महाविद्या यंत्र के श्रद्धापूर्वक पूजन से शीघ्र देवी कृपा प्राप्त होती हैं और साधक को दस महाविद्या देवीयों की कृपा से संसार की समस्त सिद्धियों की प्राप्ति संभव हैं। देवी दस महाविद्या की कृपा से साधक को धर्म, अर्थ, काम व् मोक्ष चतुर्विध पुरुषार्थों की प्राप्ति हो सकती हैं। दस महाविद्या यंत्र में माँ दुर्गा के दस अवतारों का आशीर्वाद समाहित हैं, इस लिए दस महाविद्या यंत्र को के पूजन एवं दर्शन मात्र से व्यक्ति अपने जीवन को निरंतर अधिक से अधिक सार्थक एवं सफल बनाने में समर्थ हो सकता हैं।

देवी के आशिर्वाद से व्यक्ति को ज्ञान, सुख, धन-संपदा, ऐश्वर्य, रूप-सौंदर्य की प्राप्ति संभव हैं। व्यक्ति को वाद-विवाद में शत्रुओं पर विजय की प्राप्ति होती हैं।

दश महाविद्या को शास्त्रों में आद्या भगवती के दस भेद कहे गये हैं, जो क्रमशः (1) काली, (2) तारा, (3) षोडशी, (4) भुवनेश्वरी, (5) भैरवी, (6) छिन्नमस्ता, (7) धूमावती, (8) बगला, (9) मातंगी एवं (10) कमात्मिका। इस सभी देवी स्वरुपों को, सम्मिलित रुप में दश महाविद्या के नाम से जाना जाता हैं।

>> **Shop Online**

मंत्र सिद्ध पारद प्रतिमा

पारद श्री यंत्र	पारद लक्ष्मी गणेश	पारद लक्ष्मी नारायण	पारद लक्ष्मी नारायण
			
21 Gram से 5.250 Kg तक उपलब्ध	100 Gram	121 Gram	100 Gram
पारद शिवलिंग	पारद शिवलिंग+नंदि	पारद शिवजी	पारद काली
			
21 Gram से 5.250 Kg तक उपलब्ध	101 Gram से 5.250 Kg तक उपलब्ध	75 Gram	37 Gram
पारद दुर्गा	पारद दुर्गा	पारद सरस्वती	पारद सरस्वती
			
82 Gram	100 Gram	50 Gram	225 Gram
पारद हनुमान 2	पारद हनुमान 3	पारद हनुमान 1	पारद कुबेर
			
100 Gram	125 Gram	100 Gram	100 Gram

हमारें यहां सभी प्रकार की मंत्र सिद्ध पारद प्रतिमाएं, शिवलिंग, पिरामिड, माला एवं गुटिका शुद्ध पारद में उपलब्ध हैं।
बिना मंत्र सिद्ध की हुई पारद प्रतिमाएं थोक व्यापारी मूल्य पर उपलब्ध हैं।
ज्योतिष, रत्न व्यवसाय, पूजा-पाठ इत्यादि क्षेत्र से जुडे बंधु/बहन के लिये हमारें विशेष यंत्र, कवच, रत्न, रुद्राक्ष व अन्य दुलभ सामग्रीयों पर विशेष सुबिधाएं उपलब्ध हैं। अधिक जानकारी हेतु संपर्क करें।

GURUTVA KARYALAY

Call us: 91 + 9338213418, 91+ 9238328785

Visit Us: www.gurutvakaryalay.com

हमारे विशेष यंत्र

व्यापार वृद्धि यंत्र: हमारे अनुभवों के अनुसार यह यंत्र व्यापार वृद्धि एवं परिवार में सुख समृद्धि हेतु विशेष प्रभावशाली हैं।

भूमिलाभ यंत्र: भूमि, भवन, खेती से संबंधित व्यवसाय से जुड़े लोगों के लिए भूमिलाभ यंत्र विशेष लाभकारी सिद्ध हुवा हैं।

तंत्र रक्षा यंत्र: किसी शत्रु द्वारा किये गये मंत्र-तंत्र आदि के प्रभाव को दूर करने एवं भूत, प्रेत नज़र आदि बुरी शक्तियों से रक्षा हेतु विशेष प्रभावशाली हैं।

आकस्मिक धन प्राप्ति यंत्र: अपने नाम के अनुसार ही मनुष्य को आकस्मिक धन प्राप्ति हेतु फलप्रद हैं इस यंत्र के पूजन से साधक को अप्रत्याशित धन लाभ प्राप्त होता हैं। चाहे वह धन लाभ व्यवसाय से हो, नौकरी से हो, धन-संपत्ति इत्यादि किसी भी माध्यम से यह लाभ प्राप्त हो सकता हैं। हमारे वर्षों के अनुसंधान एवं अनुभवों से हमने आकस्मिक धन प्राप्ति यंत्र से शेयर ट्रेडिंग, सोने-चांदी के व्यापार इत्यादि संबंधित क्षेत्र से जुडे लोगो को विशेष रुप से आकस्मिक धन लाभ प्राप्त होते देखा हैं। आकस्मिक धन प्राप्ति यंत्र से विभिन्न स्रोत से धनलाभ भी मिल सकता हैं।

पदौन्नति यंत्र: पदौन्नति यंत्र नौकरी पैसा लोगो के लिए लाभप्रद हैं। जिन लोगों को अत्याधिक परिश्रम एवं श्रेष्ठ कार्य करने पर भी नौकरी में उन्नति अर्थात प्रमोशन नहीं मिल रहा हो उनके लिए यह विशेष लाभप्रद हो सकता हैं।

रत्नेश्वरी यंत्र: रत्नेश्वरी यंत्र हीरे-जवाहरात, रत्न पत्थर, सोना-चांदी, ज्वैलरी से संबंधित व्यवसाय से जुडे लोगों के लिए अधिक प्रभावी हैं। शेर बाजार में सोने-चांदी जैसी बहुमूल्य धातुओं में निवेश करने वाले लोगों के लिए भी विशेष लाभदाय हैं।

भूमि प्राप्ति यंत्र: जो लोग खेती, व्यवसाय या निवास स्थान हेतु उत्तम भूमि आदि प्राप्त करना चाहते हैं, लेकिन उस कार्य में कोई ना कोई अड़चन या बाधा-विघ्न आते रहते हो जिस कारण कार्य पूर्ण नहीं हो रहा हो, तो उनके लिए भूमि प्राप्ति यंत्र उत्तम फलप्रद हो सकता हैं।

गृह प्राप्ति यंत्र: जो लोग स्वयं का घर, दुकान, ओफिस, फैक्टरी आदि के लिए भवन प्राप्त करना चाहते हैं। यथार्थ प्रयासो के उपरांत भी उनकी अभिलाषा पूर्ण नहीं हो पारही हो उनके लिए गृह प्राप्ति यंत्र विशेष उपयोगी सिद्ध हो सकता हैं।

कैलास धन रक्षा यंत्र: कैलास धन रक्षा यंत्र धन वृद्धि एवं सुख समृद्धि हेतु विशेष फलदाय हैं।

आर्थिक लाभ एवं सुख समृद्धि हेतु 19 दुर्लभ लक्ष्मी यंत्र >> Shop Online | Order Now

विभिन्न लक्ष्मी यंत्र

श्री यंत्र (लक्ष्मी यंत्र)	महालक्ष्मयै बीज यंत्र	कनक धारा यंत्र
श्री यंत्र (मंत्र रहित)	महालक्ष्मी बीसा यंत्र	वैभव लक्ष्मी यंत्र (महान सिद्धि दायक श्री महालक्ष्मी यंत्र)
श्री यंत्र (संपूर्ण मंत्र सहित)	लक्ष्मी दायक सिद्ध बीसा यंत्र	श्री श्री यंत्र (ललिता महात्रिपुर सुन्दर्यै श्री महालक्ष्मयैं श्री महायंत्र)
श्री यंत्र (बीसा यंत्र)	लक्ष्मी दाता बीसा यंत्र	अंकात्मक बीसा यंत्र
श्री यंत्र श्री सूक्त यंत्र	लक्ष्मी बीसा यंत्र	ज्येष्ठा लक्ष्मी मंत्र पूजन यंत्र
श्री यंत्र (कुर्म पृष्ठीय)	लक्ष्मी गणेश यंत्र	धनदा यंत्र > Shop Online | Order Now

सर्वसिद्धिदायक मुद्रिका

इस मुद्रिका में मूंगे को शुभ मुहूर्त में त्रिधातु (सुवर्ण+रजत+तांबें) में जड़वा कर उसे शास्त्रोक्त विधि-विधान से विशिष्ट तेजस्वी मंत्रो द्वारा सर्वसिद्धिदायक बनाने हेतु प्राण-प्रतिष्ठित एवं पूर्ण चैतन्य युक्त किया जाता हैं। इस मुद्रिका को किसी भी वर्ग के व्यक्ति हाथ की किसी भी उंगली में धारण कर सकते हैं। यहं मुद्रिका कभी किसी भी स्थिती में अपवित्र नहीं होती। इस लिए कभी मुद्रिका को उतारने की आवश्यक्ता नहीं हैं। इसे धारण करने से व्यक्ति की समस्याओं का समाधान होने लगता हैं। धारणकर्ता को जीवन में सफलता प्राप्ति एवं उन्नति के नये मार्ग प्रसस्त होते रहते हैं और जीवन में सभी प्रकार की सिद्धियां भी शीध्र प्राप्त होती हैं। **मूल्य मात्र- 6400/-**

>> Shop Online | Order Now

(**नोट:** इस मुद्रिका को धारण करने से मंगल ग्रह का कोई बुरा प्रभाव साधक पर नहीं होता हैं।)

सर्वसिद्धिदायक मुद्रिका के विषय में अधिक जानकारी के लिये हेतु सम्पर्क करें।

पति-पत्नी में कलह निवारण हेतु

यदि परिवारों में सुख-सुविधा के समस्त साधान होते हुए भी छोटी-छोटी बातो में पति-पत्नी के बिच मे कलह होता रहता हैं, तो घर के जितने सदस्य हो उन सबके नाम से गुरुत्व कार्यालत द्वारा शास्त्रोक्त विधि-विधान से मंत्र सिद्ध प्राण-प्रतिष्ठित पूर्ण चैतन्य युक्त वशीकरण कवच एवं गृह कलह नाशक डिब्बी बनवाले एवं उसे अपने घर में बिना किसी पूजा, विधि-विधान से आप विशेष लाभ प्राप्त कर सकते हैं। यदि आप मंत्र सिद्ध पति वशीकरण या पत्नी वशीकरण एवं गृह कलह नाशक डिब्बी बनवाना चाहते हैं, तो संपर्क आप कर सकते हैं।

100 से अधिक जैन यंत्र

हमारे यहां जैन धर्म के सभी प्रमुख, दुर्लभ एवं शीघ्र प्रभावशाली यंत्र ताम्र पत्र, सिलवर (चांदी) ओर गोल्ड (सोने) मे उपलब्ध हैं।

हमारे यहां सभी प्रकार के यंत्र कोपर ताम्र पत्र, सिलवर (चांदी) ओर गोल्ड (सोने) मे बनवाए जाते है। इसके अलावा आपकी आवश्यकता अनुसार आपके द्वारा प्राप्त (चित्र, यंत्र, ड़िज़ाईन) के अनुरुप यंत्र भी बनवाए जाते है. गुरुत्व कार्यालय द्वारा उपलब्ध कराये गये सभी यंत्र अखंडित एवं 22 गेज शुद्ध कोपर(ताम्र पत्र)- 99.99 टच शुद्ध सिलवर (चांदी) एवं 22 केरेट गोल्ड (सोने) मे बनवाए जाते है। यंत्र के विषय मे अधिक जानकारी के लिये हेतु सम्पर्क करें।

द्वादश महा यंत्र

यंत्र को अति प्राचिन एवं दुर्लभ यंत्रो के संकलन से हमारे वर्षो के अनुसंधान द्वारा बनाया गया हैं।

- ❖ परम दुर्लभ वशीकरण यंत्र,
- ❖ भाग्योदय यंत्र
- ❖ मनोवांछित कार्य सिद्धि यंत्र
- ❖ राज्य बाधा निवृत्ति यंत्र
- ❖ गृहस्थ सुख यंत्र
- ❖ शीघ्र विवाह संपन्न गौरी अनंग यंत्र
- ❖ सहस्त्राक्षी लक्ष्मी आबद्ध यंत्र
- ❖ आकस्मिक धन प्राप्ति यंत्र
- ❖ पूर्ण पौरुष प्राप्ति कामदेव यंत्र
- ❖ रोग निवृत्ति यंत्र
- ❖ साधना सिद्धि यंत्र
- ❖ शत्रु दमन यंत्र

उपरोक्त सभी यंत्रो को द्वादश महा यंत्र के रुप में शास्त्रोक्त विधि-विधान से मंत्र सिद्ध पूर्ण प्राणप्रतिष्ठित एवं चैतन्य युक्त किये जाते हैं। जिसे स्थापीत कर बिना किसी पूजा अर्चना-विधि विधान विशेष लाभ प्राप्त कर सकते हैं।

- ❖ क्या आपके बच्चे कुसंगती के शिकार हैं?
- ❖ क्या आपके बच्चे आपका कहना नहीं मान रहे हैं?
- ❖ क्या आपके बच्चे घर में अशांति पैदा कर रहे हैं?

घर परिवार में शांति एवं बच्चे को कुसंगती से छुडाने हेतु बच्चे के नाम से गुरुत्व कार्यालत द्वारा शास्त्रोक्त विधि-विधान से मंत्र सिद्ध प्राण-प्रतिष्ठित पूर्ण चैतन्य युक्त वशीकरण कवच एवं एस.एन.डिब्बी बनवाले एवं उसे अपने घर में स्थापित कर अल्प पूजा, विधि-विधान से आप विशेष लाभ प्राप्त कर सकते हैं। यदि आप तो आप मंत्र सिद्ध वशीकरण कवच एवं एस.एन.डिब्बी बनवाना चाहते हैं, तो संपर्क इस कर सकते हैं।

GURUTVA KARYALAY
92/3. BANK COLONY, BRAHMESHWAR PATNA,
BHUBNESWAR-751018, (ODISHA), Call us: 91 + 9338213418, 91+ 9238328785
Mail Us: gurutva.karyalay@gmail.com, gurutva_karyalay@yahoo.in,
Visit Us: www.gurutvakaryalay.com | www.gurutvajyotish.com |
www.gurutvakaryalay.blogspot.com

GURUTVA KARYALAY

92/3. BANK COLONY, BRAHMESHWAR PATNA, BHUBNESWAR-751018, (ODISHA)

Call us: 91 + 9338213418, 91+ 9238328785

Mail Us: gurutva.karyalay@gmail.com, gurutva_karyalay@yahoo.in,

Visit Us: www.gurutvakaryalay.com | www.gurutvajyotish.com | www.gurutvakaryalay.blogspot.com

नवरत्न जड़ित श्री यंत्र



शास्त्र वचन के अनुसार शुद्ध सुवर्ण या रजत में निर्मित श्री यंत्र के चारों और यदि नवरत्न जड़वा ने पर यह नवरत्न जड़ित श्री यंत्र कहलाता हैं। सभी रत्नो को उसके निश्चित स्थान पर जड़ कर लॉकेट के रूप में धारण करने से व्यक्ति को अनंत एश्वर्य एवं लक्ष्मी की प्राप्ति होती हैं। व्यक्ति को एसा आभास होता हैं जैसे मां लक्ष्मी उसके साथ हैं। नवग्रह को श्री यंत्र के साथ लगाने से ग्रहों की अशुभ दशा का धारणकरने वाले व्यक्ति पर प्रभाव नहीं होता हैं।

गले में होने के कारण यंत्र पवित्र रहता हैं एवं स्नान करते समय इस यंत्र पर स्पर्श कर जो जल बिंदु शरीर को लगते हैं, वह गंगा जल के समान पवित्र होता हैं। इस लिये इसे सबसे तेजस्वी एवं फलदायि कहजाता हैं। जैसे अमृत से उत्तम कोई औषधि नहीं, उसी प्रकार लक्ष्मी प्राप्ति के लिये श्री यंत्र से उत्तम कोई यंत्र संसार में नहीं हैं एसा शास्त्रोक्त वचन हैं। इस प्रकार के नवरत्न जड़ित श्री यंत्र गुरूत्व कार्यालय द्वारा शुभ मुहूर्त में प्राण प्रतिष्ठित करके बनावाए जाते हैं। Rs: 4600, 5500, 6400 से 10,900 से अधिक

>> **Shop Online** | **Order Now**

अधिक जानकारी हेतु संपर्क करें।

GURUTVA KARYALAY
92/3BANK COLONY, BRAHMESHWAR PATNA, BHUBNESWAR-751018, (ODISHA)
Call us: 91 + 9338213418, 91+ 9238328785
Mail Us: gurutva.karyalay@gmail.com, gurutva_karyalay@yahoo.in,
Visit Us: www.gurutvakaryalay.com | www.gurutvajyotish.com

मंत्र सिद्ध वाहन दुर्घटना नाशक मारुति यंत्र

पौराणिक ग्रंथो में उल्लेख हैं की महाभारत के युद्ध के समय अर्जुन के रथ के अग्रभाग पर मारुति ध्वज एवं मारुति यन्त्र लगा हुआ था। इसी यंत्र के प्रभाव के कारण संपूर्ण युद्ध के दौरान हज़ारों-लाखों प्रकार के आग्नेय अस्त्र-शस्त्रों का प्रहार होने के बाद भी अर्जुन का रथ जरा भी क्षतिग्रस्त नहीं हुआ। भगवान श्री कृष्ण मारुति यंत्र के इस अद्भुत रहस्य को जानते थे कि जिस रथ या वाहन की रक्षा स्वयं श्री मारुति नंदन करते हों, वह दुर्घटनाग्रस्त कैसे हो सकता हैं। वह रथ या वाहन तो वायुवेग से, निर्बाधित रुप से अपने लक्ष्य पर विजय पतका लहराता हुआ पहुंचेगा। इसी लिये श्री कृष्ण नें अर्जुन के रथ पर श्री मारुति यंत्र को अंकित करवाया था।

जिन लोगों के स्कूटर, कार, बस, ट्रक इत्यादि वाहन बार-बार दुर्घटना ग्रस्त हो रहे हो!, अनावश्यक वाहन को नुक्षान हो रहा हों! उन्हें हानी एवं दुर्घटना से रक्षा के उद्देश्य से अपने वाहन पर मंत्र सिद्ध श्री मारुति यंत्र अवश्य लगाना चाहिए। जो लोग ट्रान्स्पोर्टिंग (परिवहन) के व्यवसाय से जुडे हैं उनको श्रीमारुति यंत्र को अपने वाहन में अवश्य स्थापित करना चाहिए, क्योकि, इसी व्यवसाय से जुडे सैकडों लोगों का अनुभव रहा हैं की श्री मारुति यंत्र को स्थापित करने से उनके वाहन अधिक दिन तक अनावश्यक खर्चो से एवं दुर्घटनाओं से सुरक्षित रहे हैं। हमारा स्वयंका एवं अन्य विद्वानो का अनुभव रहा हैं, की जिन लोगों ने श्री मारुति यंत्र अपने वाहन पर लगाया हैं, उन लोगों के वाहन बडी से बडी दुर्घटनाओं से सुरक्षित रहते हैं। उनके वाहनो को कोई विशेष नुक्शान इत्यादि नहीं होता हैं और नाहीं अनावश्यक रुप से उसमें खराबी आति हैं।

वास्तु प्रयोग में मारुति यंत्र: यह मारुति नंदन श्री हनुमान जी का यंत्र है। यदि कोई जमीन बिक नहीं रही हो, या उस पर कोई वाद-विवाद हो, तो इच्छा के अनुरूप वहँ जमीन उचित मूल्य पर बिक जाये इस लिये इस मारुति यंत्र का प्रयोग किया जा सकता हैं। इस मारुति यंत्र के प्रयोग से जमीन शीघ्र बिक जाएगी या विवादमुक्त हो जाएगी। इस लिये यह यंत्र दोहरी शक्ति से युक्त है।

मारुति यंत्र के विषय में अधिक जानकारी के लिये गुरुत्व कार्यालय में संपर्क करें।

मूल्य Rs- 325 से 12700 तक

श्री हनुमान यंत्र शास्त्रों में उल्लेख हैं की श्री हनुमान जी को भगवान सूर्यदेव ने ब्रह्मा जी के आदेश पर हनुमान जी को अपने तेज का सौवाँ भाग प्रदान करते हुए आशीर्वाद प्रदान किया था, कि मैं हनुमान को सभी शास्त्र का पूर्ण ज्ञान दूँगा। जिससे यह तीनोलोक में सर्व श्रेष्ठ वक्ता होंगे तथा शास्त्र विद्या में इन्हें महारत हासिल होगी और इनके समन बलशाली और कोई नहीं होगा। जानकारो ने मतानुसार हनुमान यंत्र की आराधना से पुरुषों की विभिन्न बीमारियों दूर होती हैं, इस यंत्र में अद्भुत शक्ति समाहित होने के कारण व्यक्ति की स्वप्न दोष, धातु रोग, रक्त दोष, वीर्य दोष, मूर्छा, नपुंसकता इत्यादि अनेक प्रकार के दोषो को दूर करने में अत्यन्त लाभकारी हैं। अर्थात यह यंत्र पौरुष को पुष्ट करता हैं। श्री हनुमान यंत्र व्यक्ति को संकट, वाद-विवाद, भूत-प्रेत, द्यूत क्रिया, विषभय, चोर भय, राज्य भय, मारण, सम्मोहन स्तंभन इत्यादि से संकटो से रक्षा करता हैं और सिद्धि प्रदान करने में सक्षम हैं।

श्री हनुमान यंत्र के विषय में अधिक जानकारी के लिये गुरुत्व कार्यालय में संपर्क करें।

मूल्य Rs- 910 से 12700 तक

विभिन्न देवताओं के यंत्र		
गणेश यंत्र	महामृत्युंजय यंत्र	राम रक्षा यंत्र राज
गणेश यंत्र (संपूर्ण बीज मंत्र सहित)	महामृत्युंजय कवच यंत्र	राम यंत्र
गणेश सिद्ध यंत्र	महामृत्युंजय पूजन यंत्र	द्वादशाक्षर विष्णु मंत्र पूजन यंत्र
एकाक्षर गणपति यंत्र	महामृत्युंजय युक्त शिव खप्पर माहा शिव यंत्र	विष्णु बीसा यंत्र
हरिद्रा गणेश यंत्र	शिव पंचाक्षरी यंत्र	गरुड पूजन यंत्र
कुबेर यंत्र	शिव यंत्र	चिंतामणी यंत्र राज
श्री द्वादशाक्षरी रुद्र पूजन यंत्र	अद्वितीय सर्वकाम्य सिद्धि शिव यंत्र	चिंतामणी यंत्र
दत्तात्रय यंत्र	नृसिंह पूजन यंत्र	स्वर्णाकर्षणा भैरव यंत्र
दत्त यंत्र	पंचदेव यंत्र	हनुमान पूजन यंत्र
आपदुद्धारण बटुक भैरव यंत्र	संतान गोपाल यंत्र	हनुमान यंत्र
बटुक यंत्र	श्री कृष्ण अष्टाक्षरी मंत्र पूजन यंत्र	संकट मोचन यंत्र
व्यंकटेश यंत्र	कृष्ण बीसा यंत्र	वीर साधन पूजन यंत्र
कार्तवीर्यार्जुन पूजन यंत्र	सर्व काम प्रद भैरव यंत्र	दक्षिणामूर्ति ध्यानम् यंत्र

मनोकामना पूर्ति एवं कष्ट निवारण हेतु विशेष यंत्र		
व्यापार वृद्धि कारक यंत्र	अमृत तत्व संजीवनी काया कल्प यंत्र	त्रय तापोंसे मुक्ति दाता बीसा यंत्र
व्यापार वृद्धि यंत्र	विजयराज पंचदशी यंत्र	मधुमेह निवारक यंत्र
व्यापार वर्धक यंत्र	विद्यायश विभूति राज सम्मान प्रद सिद्ध बीसा यंत्र	ज्वर निवारण यंत्र
व्यापारोन्नति कारी सिद्ध यंत्र	सम्मान दायक यंत्र	रोग कष्ट दरिद्रता नाशक यंत्र
भाग्य वर्धक यंत्र	सुख शांति दायक यंत्र	रोग निवारक यंत्र
स्वस्तिक यंत्र	बाला यंत्र	तनाव मुक्त बीसा यंत्र
सर्व कार्य बीसा यंत्र	बाला रक्षा यंत्र	विद्युत मानस यंत्र
कार्य सिद्धि यंत्र	गर्भ स्तम्भन यंत्र	गृह कलह नाशक यंत्र
सुख समृद्धि यंत्र	संतान प्राप्ति यंत्र	कलेश हरण बत्तिसा यंत्र
सर्व रिद्धि सिद्धि प्रद यंत्र	प्रसूता भय नाशक यंत्र	वशीकरण यंत्र
सर्व सुख दायक पैंसठिया यंत्र	प्रसव-कष्टनाशक पंचदशी यंत्र	मोहिनि वशीकरण यंत्र
ऋद्धि सिद्धि दाता यंत्र	शांति गोपाल यंत्र	कर्ण पिशाचनी वशीकरण यंत्र
सर्व सिद्धि यंत्र	त्रिशूल बीशा यंत्र	वार्ताली स्तम्भन यंत्र
साबर सिद्धि यंत्र	पंचदशी यंत्र (बीसा यंत्र युक्त चारों प्रकारके)	वास्तु यंत्र
शाबरी यंत्र	बेकारी निवारण यंत्र	श्री मत्स्य यंत्र
सिद्धाश्रम यंत्र	षोडशी यंत्र	वाहन दुर्घटना नाशक यंत्र
ज्योतिष तंत्र ज्ञान विज्ञान प्रद सिद्ध बीसा यंत्र	अडसठिया यंत्र	प्रेत-बाधा नाशक यंत्र
ब्रहमाण्ड साबर सिद्धि यंत्र	अस्सीया यंत्र	भूतादी व्याधिहरण यंत्र
कुण्डलिनी सिद्धि यंत्र	ऋद्धि कारक यंत्र	कष्ट निवारक सिद्धि बीसा यंत्र
क्रान्ति और श्रीवर्धक चौंतीसा यंत्र	मन वांछित कन्या प्राप्ति यंत्र	भय नाशक यंत्र
श्री क्षेम कल्याणी सिद्धि महा यंत्र	विवाहकर यंत्र	स्वप्न भय निवारक यंत्र

ज्ञान दाता महा यंत्र	लग्न विघ्न निवारक यंत्र	कुदृष्टि नाशक यंत्र
काया कल्प यंत्र	लग्न योग यंत्र	श्री शत्रु पराभव यंत्र
दीर्धायु अमृत तत्व संजीवनी यंत्र	दरिद्रता विनाशक यंत्र	शत्रु दमनार्णव पूजन यंत्र

मंत्र सिद्ध विशेष दैवी यंत्र सूचि

आद्य शक्ति दुर्गा बीसा यंत्र (अंबाजी बीसा यंत्र)	सरस्वती यंत्र
महान शक्ति दुर्गा यंत्र (अंबाजी यंत्र)	सप्तसती महायंत्र(संपूर्ण बीज मंत्र सहित)
नव दुर्गा यंत्र	काली यंत्र
नवार्ण यंत्र (चामुंडा यंत्र)	श्मशान काली पूजन यंत्र
नवार्ण बीसा यंत्र	दक्षिण काली पूजन यंत्र
चामुंडा बीसा यंत्र (नवग्रह युक्त)	संकट मोचिनी कालिका सिद्धि यंत्र
त्रिशूल बीसा यंत्र	खोडियार यंत्र
बगला मुखी यंत्र	खोडियार बीसा यंत्र
बगला मुखी पूजन यंत्र	अन्नपूर्णा पूजा यंत्र
राज राजेश्वरी वांछा कल्पलता यंत्र	एकांक्षी श्रीफल यंत्र

मंत्र सिद्ध विशेष लक्ष्मी यंत्र सूचि

श्री यंत्र (लक्ष्मी यंत्र)	महालक्ष्मयै बीज यंत्र
श्री यंत्र (मंत्र रहित)	महालक्ष्मी बीसा यंत्र
श्री यंत्र (संपूर्ण मंत्र सहित)	लक्ष्मी दायक सिद्ध बीसा यंत्र
श्री यंत्र (बीसा यंत्र)	लक्ष्मी दाता बीसा यंत्र
श्री यंत्र श्री सूक्त यंत्र	लक्ष्मी गणेश यंत्र
श्री यंत्र (कुर्म पृष्ठीय)	ज्येष्ठा लक्ष्मी मंत्र पूजन यंत्र
लक्ष्मी बीसा यंत्र	कनक धारा यंत्र
श्री श्री यंत्र (श्रीश्री ललिता महात्रिपुर सुन्दर्यै श्री महालक्ष्मयैं श्री महायंत्र)	वैभव लक्ष्मी यंत्र (महान सिद्धि दायक श्री महालक्ष्मी यंत्र)
अंकात्मक बीसा यंत्र	

ताम्र पत्र पर सुवर्ण पोलीस (Gold Plated)		ताम्र पत्र पर रजत पोलीस (Silver Plated)		ताम्र पत्र पर (Copper)	
साईज	मूल्य	साईज	मूल्य	साईज	मूल्य
1" X 1"	550	1" X 1"	370	1" X 1"	325
2" X 2"	910	2" X 2"	640	2" X 2"	550
3" X 3"	1450	3" X 3"	1050	3" X 3"	910
4" X 4"	2350	4" X 4"	1450	4" X 4"	1225
6" X 6"	3700	6" X 6"	2800	6" X 6"	2350
9" X 9"	9100	9" X 9"	4600	9" X 9"	4150
12" X12"	12700	12" X12"	9100	12" X12"	9100

यंत्र के विषय में अधिक जानकारी हेतु संपर्क करें। **>> Shop Online | Order Now**

GURUTVA KARYALAY
Call us: 91 + 9338213418, 91+ 9238328785
Mail Us: gurutva.karyalay@gmail.com, gurutva_karyalay@yahoo.in,
Visit Us: www.gurutvakaryalay.com | www.gurutvajyotish.com | www.gurutvakaryalay.blogspot.com

21 अक्टूबर से 27 अक्टूबर 2018 साप्ताहिक पंचांग

दि	वार	माह	पक्ष	तिथि	समाप्ति	नक्षत्र	समाप्ति	योग	समाप्ति	करण	समाप्ति	चंद्र राशि	समाप्ति
21	रवि	आश्विन	शुक्ल	द्वादशी	21:42	पूर्वाभाद्रपद	11:26	वृद्धि	11:26	बव	09:03	कुंभ	-
22	सोम	आश्विन	शुक्ल	त्रयोदशी	22:30	पूर्वाभाद्रपद	11:17	ध्रुव	11:17	कौलव	10:11	कुंभ	01:13
23	मंगल	आश्विन	शुक्ल	चतुर्दशी	22:40	उत्तराभाद्रपद	10:38	व्याघात	10:38	गर	10:39	मीन	-
24	बुध	आश्विन	शुक्ल	पूर्णिमा	22:15	रेवति	09:30	हर्षण	09:30	विष्टि	10:31	मीन	09:23
25	गुरु	कार्तिक	कृष्ण	एकम	21:20	अश्विनी	09:25	वज्र	07:57	बालव	09:51	मेष	-
26	शुक्र	कार्तिक	कृष्ण	द्वितीया	20:03	भरणी	09:02	व्यतिपात	27:49	तैतिल	08:44	मेष	14:54
27	शनि	कार्तिक	कृष्ण	तृतीया	18:28	कृतिका	08:20	वरियान	25:24	वणिज	07:17	वृष	-

21 अक्टूबर से 27 अक्टूबर 2018 साप्ताहिक व्रत-पर्व-त्यौहार

दि	वार	माह	पक्ष	तिथि	समाप्ति	प्रमुख व्रत-त्योहार
21	रवि	आश्विन	शुक्ल	द्वादशी	21:42	पद्मनाभ द्वादशी व्रत, श्यामबाबा द्वादशी,
22	सोम	आश्विन	शुक्ल	त्रयोदशी	22:30	प्रदोष व्रत, प्रदोष व्रत, कार्तिक मास में द्विदल त्याग व्रतारम्भ,
23	मंगल	आश्विन	शुक्ल	चतुर्दशी	22:40	वाराह चतुर्दशी, श्रीसत्यनारायण पूजा-कथा, मध्यरात्रि अमृत-सेवन,
24	बुध	आश्विन	शुक्ल	पूर्णिमा	22:15	स्नान-दानादि हेतु उत्तम अश्विनी नक्षत्र युता परम पुण्यदायिनी आश्विनी पूर्णिमा, व्रत की पूर्णिमा, शरदपूर्णिमा व्रत उत्सव, कोजागरी पूर्णिमा, रात्रि में लक्ष्मी कुबेरादि पूजा, लक्ष्मी पूजा, महारास पूर्णिमा (ब्रज), कुमार पूर्णिमा (ओडी.), महर्षि बाल्मीकि जयन्ती, आश्विन मास के स्नान-व्रत-यम-नियमादि समाप्त, कार्तिक मासीय व्रत-यम नियमादि प्रारम्भ, आज से कार्तिक मास पर्यन्त आकाश में दीपदान करने का विधान, मीराबाई जयन्ती,
25	गुरु	कार्तिक	कृष्ण	एकम	21:20	दामोदर मास प्रारम्भ, कार्तिक मास व्रत प्रारंभ, व्रती का कार्तिक में दाल (द्विदल) त्याग व्रतारम्भ, कार्तिक मास में तुलसीदल से श्रीहरि की पूजा एवं तुलसी को दीपदान उत्तम फलदायी, अशून्यशयन व्रत,
26	शुक्र	कार्तिक	कृष्ण	द्वितीया	20:03	
27	शनि	कार्तिक	कृष्ण	तृतीया	18:28	संकष्टी गणेश चतुर्थी व्रत (चंद्रोदय रात 7:55 पर), करक चतुर्थी, करवा चौथ व्रत, दशरथ चतुर्थी,

राशि रत्न

मेष राशि:	वृषभ राशि:	मिथुन राशि:	कर्क राशि:	सिंह राशि:	कन्या राशि:
मूंगा	हीरा	पन्ना	मोती	माणेक	पन्ना
					
Red Coral (Special)	**Diamond (Special)**	**Green Emerald (Special)**	**Naturel Pearl (Special)**	**Ruby (Old Berma) (Special)**	**Green Emerald (Special)**
5.25" Rs. 1050 6.25" Rs. 1250 7.25" Rs. 1450 8.25" Rs. 1800 9.25" Rs. 2100 10.25" Rs. 2800	10 cent Rs. 4100 20 cent Rs. 8200 30 cent Rs. 12500 40 cent Rs. 18500 50 cent Rs. 23500	5.25" Rs. 9100 6.25" Rs. 12500 7.25" Rs. 14500 8.25" Rs. 19000 9.25" Rs. 23000 10.25" Rs. 28000	5.25" Rs. 910 6.25" Rs. 1250 7.25" Rs. 1450 8.25" Rs. 1900 9.25" Rs. 2300 10.25" Rs. 2800	2.25" Rs. 12500 3.25" Rs. 15500 4.25" Rs. 28000 5.25" Rs. 46000 6.25" Rs. 82000	5.25" Rs. 9100 6.25" Rs. 12500 7.25" Rs. 14500 8.25" Rs. 19000 9.25" Rs. 23000 10.25" Rs. 28000
** All Weight In Rati	All Diamond are Full White Colour.	** All Weight In Rati	** All Weight In Rati	** All Weight In Rati	** All Weight In Rati

तुला राशि:	वृश्चिक राशि:	धनु राशि:	मकर राशि:	कुंभ राशि:	मीन राशि:
हीरा	मूंगा	पुखराज	नीलम	नीलम	पुखराज
					
Diamond (Special)	**Red Coral (Special)**	**Y.Sapphire (Special)**	**B.Sapphire (Special)**	**B.Sapphire (Special)**	**Y.Sapphire (Special)**
10 cent Rs. 4100 20 cent Rs. 8200 30 cent Rs. 12500 40 cent Rs. 18500 50 cent Rs. 23500	5.25" Rs. 1050 6.25" Rs. 1250 7.25" Rs. 1450 8.25" Rs. 1800 9.25" Rs. 2100 10.25" Rs. 2800	5.25" Rs. 30000 6.25" Rs. 37000 7.25" Rs. 55000 8.25" Rs. 73000 9.25" Rs. 91000 10.25" Rs.108000	5.25" Rs. 30000 6.25" Rs. 37000 7.25" Rs. 55000 8.25" Rs. 73000 9.25" Rs. 91000 10.25" Rs.108000	5.25" Rs. 30000 6.25" Rs. 37000 7.25" Rs. 55000 8.25" Rs. 73000 9.25" Rs. 91000 10.25" Rs.108000	5.25" Rs. 30000 6.25" Rs. 37000 7.25" Rs. 55000 8.25" Rs. 73000 9.25" Rs. 91000 10.25" Rs.108000
All Diamond are Full White Colour.	** All Weight In Rati	** All Weight In Rati	** All Weight In Rati	** All Weight In Rati	** All Weight In Rati

* उपयोक्त वजन और मूल्य से अधिक और कम वजन और मूल्य के रत्न एवं उपरत्न भी हमारे यहा व्यापारी मूल्य पर उप्लब्ध हैं।

>> Shop Online | Order Now

श्रीकृष्ण बीसा यंत्र

किसी भी व्यक्ति का जीवन तब आसान बन जाता हैं जब उसके चारों और का माहोल उसके अनुरुप उसके वश में हों। जब कोई व्यक्ति का आकर्षण दुसरो के उपर एक चुम्बकीय प्रभाव डालता हैं, तब लोग उसकी सहायता एवं सेवा हेतु तत्पर होते है और उसके प्रायः सभी कार्य बिना अधिक कष्ट व परेशानी से संपन्न हो जाते हैं। आज के भौतिकता वादि युग में हर व्यक्ति के लिये दूसरो को अपनी और खीचने हेतु एक प्रभावशालि चुंबकत्व को कायम रखना अति आवश्यक हो जाता हैं। आपका आकर्षण और व्यक्तित्व आपके चारो ओर से लोगों को आकर्षित करे इस लिये सरल उपाय हैं, **श्रीकृष्ण बीसा यंत्र**। क्योकि भगवान श्री कृष्ण एक अलौकिव एवं दिवय चुंबकीय व्यक्तित्व के धनी थे। इसी कारण से **श्रीकृष्ण बीसा यंत्र** के पूजन एवं दर्शन से आकर्षक व्यक्तित्व प्राप्त होता हैं।

श्रीकृष्ण बीसा यंत्र के साथ व्यक्तिको दृढ़ इच्छा शक्ति एवं उर्जा प्राप्त होती हैं, जिस्से व्यक्ति हमेशा एक भीड में हमेशा आकर्षण का केंद्र रहता हैं।

यदि किसी व्यक्ति को अपनी प्रतिभा व आत्मविश्वास के स्तर में वृद्धि, अपने मित्रो व परिवारजनो के बिच में रिश्तो में सुधार करने की ईच्छा होती हैं उनके लिये **श्रीकृष्ण बीसा यंत्र** का पूजन एक सरल व सुलभ माध्यम साबित हो सकता हैं।

श्रीकृष्ण बीसा यंत्र पर अंकित शक्तिशाली विशेष रेखाएं, बीज मंत्र एवं अंको से व्यक्ति को अद्‌भुत आंतरिक शक्तियां प्राप्त होती हैं जो व्यक्ति को सबसे आगे एवं सभी क्षेत्रो में अग्रणिय बनाने में सहायक सिद्ध होती हैं।

श्रीकृष्ण बीसा यंत्र के पूजन व नियमित दर्शन के माध्यम से भगवान श्रीकृष्ण का आशीर्वाद प्राप्त कर समाज में स्वयं का अद्‌वितीय स्थान स्थापित करें।

श्रीकृष्ण बीसा यंत्र अलौकिक ब्रह्मांडीय उर्जा का संचार करता हैं, जो एक प्राकृत्ति माध्यम से व्यक्ति के भीतर सद्‌भावना, समृद्धि, सफलता, उत्तम स्वास्थ्य, योग और ध्यान के लिये एक शक्तिशाली माध्यम हैं!

- **श्रीकृष्ण बीसा यंत्र** के पूजन से व्यक्ति के सामाजिक मान-सम्मान व पद-प्रतिष्ठा में वृद्धि होती हैं।
- विद्वानो के मतानुसार **श्रीकृष्ण बीसा यंत्र** के मध्यभाग पर ध्यान योग केंद्रित करने से व्यक्ति कि चेतना शक्ति जाग्रत होकर शीघ्र उच्च स्तर को प्राप्तहोती हैं।
- जो पुरुषों और महिला अपने साथी पर अपना प्रभाव डालना चाहते हैं और उन्हें अपनी और आकर्षित करना चाहते हैं। उनके लिये **श्रीकृष्ण बीसा यंत्र** उत्तम उपाय सिद्ध हो सकता हैं।
- पति-पत्नी में आपसी प्रम की वृद्धि और सुखी दाम्पत्य जीवन के लिये **श्रीकृष्ण बीसा यंत्र** लाभदायी होता हैं।

मूल्य:- Rs. 910 से Rs. 12700 तक उप्लब्द्ध >> Shop Online

श्रीकृष्ण बीसा कवच

श्रीकृष्ण बीसा कवच को केवल विशेष शुभ मुहुर्त में निर्माण किया जाता हैं। कवच को विद्वान कर्मकांडी ब्राहमणों द्वारा शुभ मुहुर्त में शास्त्रोक्त विधि-विधान से विशिष्ट तेजस्वी मंत्रो द्वारा सिद्ध प्राण-प्रतिष्ठित पूर्ण चैतन्य युक्त करके निर्माण किया जाता हैं। जिस के फल स्वरुप धारण करता व्यक्ति को शीघ्र पूर्ण लाभ प्राप्त होता हैं। कवच को गले में धारण करने से वहं अत्यंत प्रभाव शाली होता हैं। गले में धारण करने से कवच हमेशा हृदय के पास रहता हैं जिस्से व्यक्ति पर उसका लाभ अति तीव्र एवं शीघ्र ज्ञात होने लगता हैं।

मूलय मात्र: 2350 >>Order Now

जैन धर्मके विशिष्ट यंत्रो की सूची

श्री चौबीस तीर्थंकरका महान प्रभावित चमत्कारी यंत्र	श्री एकाक्षी नारियेर यंत्र
श्री चोबीस तीर्थंकर यंत्र	सर्वतो भद्र यंत्र
कल्पवृक्ष यंत्र	सर्व संपत्तिकर यंत्र
चिंतामणी पार्श्वनाथ यंत्र	सर्वकार्य-सर्व मनोकामना सिद्धिअ यंत्र (१३० सर्वतोभद्र यंत्र)
चिंतामणी यंत्र (पैंसठिया यंत्र)	ऋषि मंडल यंत्र
चिंतामणी चक्र यंत्र	जगदवल्लभ कर यंत्र
श्री चक्रेश्वरी यंत्र	ऋद्धि सिद्धि मनोकामना मान सम्मान प्राप्ति यंत्र
श्री घंटाकर्ण महावीर यंत्र	ऋद्धि सिद्धि समृद्धि दायक श्री महालक्ष्मी यंत्र
श्री घंटाकर्ण महावीर सर्व सिद्धि महायंत्र (अनुभव सिद्ध संपूर्ण श्री घंटाकर्ण महावीर पतका यंत्र)	विषम विष निग्रह कर यंत्र
श्री पद्मावती यंत्र	क्षुद्रो पद्रव निर्नाशन यंत्र
श्री पद्मावती बीसा यंत्र	बृहच्चक्र यंत्र
श्री पार्श्वपद्मावती ह्रींकार यंत्र	वंध्या शब्दापह यंत्र
पद्मावती व्यापार वृद्धि यंत्र	मृतवत्सा दोष निवारण यंत्र
श्री धरणेन्द्र पद्मावती यंत्र	कांक वंध्यादोष निवारण यंत्र
श्री पार्श्वनाथ ध्यान यंत्र	बालग्रह पीडा निवारण यंत्र
श्री पार्श्वनाथ प्रभुका यंत्र	लधुदेव कुल यंत्र
भक्तामर यंत्र (गाथा नंबर १ से ४४ तक)	नवगाथात्मक उवसग्गहरं स्तोत्रका विशिष्ट यंत्र
मणिभद्र यंत्र	उवसग्गहरं यंत्र
श्री यंत्र	श्री पंच मंगल महाश्रृत स्कंध यंत्र
श्री लक्ष्मी प्राप्ति और व्यापार वर्धक यंत्र	ह्रींकार मय बीज मंत्र
श्री लक्ष्मीकर यंत्र	वर्धमान विद्या पट्ट यंत्र
लक्ष्मी प्राप्ति यंत्र	विद्या यंत्र
महाविजय यंत्र	सौभाग्यकर यंत्र
विजयराज यंत्र	डाकिनी, शाकिनी, भय निवारक यंत्र
विजय पतका यंत्र	भूतादि निग्रह कर यंत्र
विजय यंत्र	ज्वर निग्रह कर यंत्र
सिद्धचक्र महायंत्र	शाकिनी निग्रह कर यंत्र
दक्षिण मुखाय शंख यंत्र	आपत्ति निवारण यंत्र
दक्षिण मुखाय यंत्र	शत्रुमुख स्तंभन यंत्र

श्री घंटाकर्ण महावीर सर्व सिद्धि महायंत्र

(अनुभव सिद्ध संपूर्ण श्री घंटाकर्ण महावीर पतका यंत्र)



घंटाकर्ण महावीर सर्व सिद्धि महायंत्र को स्थापीत करने से साधक की सर्व मनोकामनाएं पूर्ण होती हैं। सर्व प्रकार के रोग भूत-प्रेत आदि उपद्रव से रक्षण होता हैं। जहरीले और हिंसक प्राणीं से संबंधित भय दूर होते हैं। अग्नि भय, चोरभय आदि दूर होते हैं।

दुष्ट व असुरी शक्तियों से उत्पन्न होने वाले भय से यंत्र के प्रभाव से दूर हो जाते हैं।

यंत्र के पूजन से साधक को धन, सुख, समृद्धि, ऐश्वर्य, संततित्ति-संपत्ति आदि की प्राप्ति होती हैं। साधक की सभी प्रकार की सात्विक इच्छाओं की पूर्ति होती हैं।

यदि किसी परिवार या परिवार के सदस्यो पर वशीकरण, मारण, उच्चाटन इत्यादि जादू-टोने वाले प्रयोग किये गयें होतो इस यंत्र के प्रभाव से स्वतः नष्ट हो जाते हैं और भविष्य में यदि कोई प्रयोग करता हैं तो रक्षण होता हैं।

कुछ जानकारो के श्री घंटाकर्ण महावीर पतका यंत्र से जुडे अदद्भुत अनुभव रहे हैं। यदि घर में श्री घंटाकर्ण महावीर पतका यंत्र स्थापित किया हैं और यदि कोई इर्षा, लोभ, मोह या शत्रुतावश यदि अनुचित कर्म करके किसी भी उद्देश्य से साधक को परेशान करने का प्रयास करता हैं तो यंत्र के प्रभाव से संपूर्ण परिवार का रक्षण तो होता ही हैं, कभी-कभी शत्रु के द्वारा किया गया अनुचित कर्म शत्रु पर ही उपर उलट वार होते देखा हैं। **मूल्य:- Rs. 2350 से Rs. 12700 तक उप्लब्द्ध**

>> Shop Online | Order Now

अमोघ महामृत्युंजय कवच

अमोद्य् महामृत्युंजय कवच व उल्लेखित अन्य सामग्रीयों को शास्त्रोक्त विधि-विधान से विद्वान ब्राह्मणो द्वारा **सवा लाख महामृत्युंजय मंत्र** जप एवं दशांश हवन द्वारा निर्मित किया जाता हैं इस लिए कवच अत्यंत प्रभावशाली होता हैं।

>> Order Now

अमोद्य् महामृत्युंजय कवच
कवच बनवाने हेतु:
अपना नाम, पिता-माता का नाम,
गोत्र, एक नया फोटो भेजे

अमोद्य् महामृत्युंजय
कवच
दक्षिणा मात्र: 10900

राशी रत्न एवं उपरत्न



सभी साईज एवं मूल्य व क्वालिटि के असली नवरत्न एवं उपरत्न भी उपलब्ध हैं।

विशेष यंत्र

हमारें यहां सभी प्रकार के यंत्र सोने-चांदि-ताम्बे में आपकी आवश्यक्ता के अनुसार किसी भी भाषा/धर्म के यंत्रो को आपकी आवश्यक डिजाईन के अनुसार २२ गेज शुद्ध ताम्बे में अखंडित बनाने की विशेष सुविधाएं उपलब्ध हैं।

हमारे यहां सभी प्रकार के रत्न एवं उपरत्न व्यापारी मूल्य पर उपलब्ध हैं। ज्योतिष कार्य से जुडे बधु/बहन व रत्न व्यवसाय से जुडे लोगो के लिये विशेष मूल्य पर रत्न व अन्य सामग्रीया व अन्य सुविधाएं उपलब्ध हैं।

GURUTVA KARYALAY
92/3. BANK COLONY, BRAHMESHWAR PATNA, BHUBNESWAR-751018, (ODISHA)
Call us: 91 + 9338213418, 91+ 9238328785
Mail Us: gurutva.karyalay@gmail.com, gurutva_karyalay@yahoo.in,
Shop Online:- www.gurutvakaryalay.com

21 अक्टूबर से 27 अक्टूबर 2018 -विशेष योग

कार्य सिद्धि योग			
23	प्रातः 05:40 से प्रातः 08:48 तक	27	प्रातः 08:21 से अगले दिन प्रातः 05:42 तक
25	प्रातः 05:41 से प्रातः 09:27 तक		
त्रिपुष्कर योग (तीनगुना फल दायक)		**अमृत सिद्धि योग**	
21	प्रातः 05:49 से रात 09:31 तक	27	प्रातः 08:21 से दिन प्रातः 05:42 तक
विघ्नकारक भद्रा			
23	रात 10:36 से अगले दिन प्रातः 10:30 तक (स्वर्ग)	27	प्रातः 07:25 से संध्या 06:38 तक (स्वर्ग)

योग फल :

- कार्य सिद्धि योग मे किये गये शुभ कार्य मे निश्चित सफलता प्राप्त होती हैं, एसा शास्त्रोक्त वचन हैं।
- त्रिपुष्कर योग में किये गये शुभ कार्यो का लाभ तीन गुना होता हैं। एसा शास्त्रोक्त वचन हैं।
- शास्त्रोंक्त मत से विघ्नकारक भद्रा योग में शुभ कार्य करना वर्जित हैं।

दैनिक शुभ एवं अशुभ समय ज्ञान तालिका

	गुलिक काल (शुभ)	यम काल (अशुभ)	राहु काल (अशुभ)
वार	समय अवधि	समय अवधि	समय अवधि
रविवार	03:00 से 04:30	12:00 से 01:30	04:30 से 06:00
सोमवार	01:30 से 03:00	10:30 से 12:00	07:30 से 09:00
मंगलवार	12:00 से 01:30	09:00 से 10:30	03:00 से 04:30
बुधवार	10:30 से 12:00	07:30 से 09:00	12:00 से 01:30
गुरुवार	09:00 से 10:30	06:00 से 07:30	01:30 से 03:00
शुक्रवार	07:30 से 09:00	03:00 से 04:30	10:30 से 12:00
शनिवार	06:00 से 07:30	01:30 से 03:00	09:00 से 10:30

दिन के चौघडिये

समय	रविवार	सोमवार	मंगलवार	बुधवार	गुरुवार	शुक्रवार	शनिवार
06:00 से 07:30	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चल	काल
07:30 से 09:00	चल	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ
09:00 से 10:30	लाभ	शुभ	चल	काल	उद्वेग	अमृत	रोग
10:30 से 12:00	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चल	काल	उद्वेग
12:00 से 01:30	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चल
01:30 से 03:00	शुभ	चल	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ
03:00 से 04:30	रोग	लाभ	शुभ	चल	काल	उद्वेग	अमृत
04:30 से 06:00	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चल	काल

रात के चौघडिये

समय	रविवार	सोमवार	मंगलवार	बुधवार	गुरुवार	शुक्रवार	शनिवार
06:00 से 07:30	शुभ	चल	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ
07:30 से 09:00	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चल	काल	उद्वेग
09:00 से 10:30	चल	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ
10:30 से 12:00	रोग	लाभ	शुभ	चल	काल	उद्वेग	अमृत
12:00 से 01:30	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चल
01:30 से 03:00	लाभ	शुभ	चल	काल	उद्वेग	अमृत	रोग
03:00 से 04:30	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चल	काल
04:30 से 06:00	शुभ	चल	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ

शास्त्रोक्त मत के अनुशार यदि किसी भी कार्य का प्रारंभ शुभ मुहूर्त या शुभ समय पर किया जाये तो कार्य में सफलता प्राप्त होने कि संभावना ज्यादा प्रबल हो जाती हैं। इस लिये दैनिक शुभ समय चौघड़िया देखकर प्राप्त किया जा सकता हैं।

नोट: प्रायः दिन और रात्रि के चौघड़िये कि गिनती क्रमशः सूर्योदय और सूर्यास्त से कि जाती हैं। प्रत्येक चौघड़िये कि अवधि 1 घंटा 30 मिनिट अर्थात डेढ़ घंटा होती हैं। समय के अनुसार चौघड़िये को शुभाशुभ तीन भागों में बांटा जाता हैं, जो क्रमशः शुभ, मध्यम और अशुभ हैं।

चौघडिये के स्वामी ग्रह

शुभ चौघडिया		मध्यम चौघडिया		अशुभ चौघड़िया	
चौघडिया	स्वामी ग्रह	चौघडिया	स्वामी ग्रह	चौघडिया	स्वामी ग्रह
शुभ	गुरु	चर	शुक्र	उद्वेग	सूर्य
अमृत	चंद्रमा			काल	शनि
लाभ	बुध			रोग	मंगल

* हर कार्य के लिये शुभ/अमृत/लाभ का चौघड़िया उत्तम माना जाता हैं।

* हर कार्य के लिये चल/काल/रोग/उद्वेग का चौघड़िया उचित नहीं माना जाता।

दिन कि होरा - सूर्योदय से सूर्यास्त तक												
वार	1.घं	2.घं	3.घं	4.घं	5.घं	6.घं	7.घं	8.घं	9.घं	10.घं	11.घं	12.घं
रविवार	सूर्य	शुक्र	बुध	चंद्र	शनि	गुरु	मंगल	सूर्य	शुक्र	बुध	चंद्र	शनि
सोमवार	चंद्र	शनि	गुरु	मंगल	सूर्य	शुक्र	बुध	चंद्र	शनि	गुरु	मंगल	सूर्य
मंगलवार	मंगल	सूर्य	शुक्र	बुध	चंद्र	शनि	गुरु	मंगल	सूर्य	शुक्र	बुध	चंद्र
बुधवार	बुध	चंद्र	शनि	गुरु	मंगल	सूर्य	शुक्र	बुध	चंद्र	शनि	गुरु	मंगल
गुरुवार	गुरु	मंगल	सूर्य	शुक्र	बुध	चंद्र	शनि	गुरु	मंगल	सूर्य	शुक्र	बुध
शुक्रवार	शुक्र	बुध	चंद्र	शनि	गुरु	मंगल	सूर्य	शुक्र	बुध	चंद्र	शनि	गुरु
शनिवार	शनि	गुरु	मंगल	सूर्य	शुक्र	बुध	चंद्र	शनि	गुरु	मंगल	सूर्य	शुक्र
रात कि होरा – सूर्यास्त से सूर्योदय तक												
रविवार	गुरु	मंगल	सूर्य	शुक्र	बुध	चंद्र	शनि	गुरु	मंगल	सूर्य	शुक्र	बुध
सोमवार	शुक्र	बुध	चंद्र	शनि	गुरु	मंगल	सूर्य	शुक्र	बुध	चंद्र	शनि	गुरु
मंगलवार	शनि	गुरु	मंगल	सूर्य	शुक्र	बुध	चंद्र	शनि	गुरु	मंगल	सूर्य	शुक्र
बुधवार	सूर्य	शुक्र	बुध	चंद्र	शनि	गुरु	मंगल	सूर्य	शुक्र	बुध	चंद्र	शनि
गुरुवार	चंद्र	शनि	गुरु	मंगल	सूर्य	शुक्र	बुध	चंद्र	शनि	गुरु	मंगल	सूर्य
शुक्रवार	मंगल	सूर्य	शुक्र	बुध	चंद्र	शनि	गुरु	मंगल	सूर्य	शुक्र	बुध	चंद्र
शनिवार	बुध	चंद्र	शनि	गुरु	मंगल	सूर्य	शुक्र	बुध	चंद्र	शनि	गुरु	मंगल

होरा मुहूर्त को कार्य सिद्धि के लिए पूर्ण फलदायक एवं अचूक माना जाता हैं, दिन-रात के २४ घंटों में शुभ-अशुभ समय को समय से पूर्व ज्ञात कर अपने कार्य सिद्धि के लिए प्रयोग करना चाहिये।

विद्वानो के मत से इच्छित कार्य सिद्धि के लिए ग्रह से संबंधित होरा का चुनाव करने से विशेष लाभ प्राप्त होता हैं।

- सूर्य कि होरा सरकारी कार्यो के लिये उत्तम होती हैं।
- चंद्रमा कि होरा सभी कार्यों के लिये उत्तम होती हैं।
- मंगल कि होरा कोर्ट-कचेरी के कार्यो के लिये उत्तम होती हैं।
- बुध कि होरा विद्या-बुद्धि अर्थात पढाई के लिये उत्तम होती हैं।
- गुरु कि होरा धार्मिक कार्य एवं विवाह के लिये उत्तम होती हैं।
- शुक्र कि होरा यात्रा के लिये उत्तम होती हैं।
- शनि कि होरा धन-द्रव्य संबंधित कार्य के लिये उत्तम होती हैं।

सर्व रोगनाशक यंत्र/कवच

मनुष्य अपने जीवन के विभिन्न समय पर किसी ना किसी साध्य या असाध्य रोग से ग्रस्त होता हैं। उचित उपचार से ज्यादातर साध्य रोगो से तो मुक्ति मिल जाती हैं, लेकिन कभी-कभी साध्य रोग होकर भी असाध्य होजाते हैं, या कोइ असाध्य रोग से ग्रसित होजाते हैं। हजारो लाखो रुपये खर्च करने पर भी अधिक लाभ प्राप्त नहीं हो पाता। डॉक्टर द्वारा दिजाने वाली दवाईया अल्प समय के लिये कारगर साबित होती हैं, एसी स्थिती में लाभ प्राप्ति के लिये व्यक्ति एक डॉक्टर से दूसरे डॉक्टर के चक्कर लगाने को बाध्य हो जाता हैं।

भारतीय ऋषीयोने अपने योग साधना के प्रताप से रोग शांति हेतु विभिन्न आयुर्वेर औषधो के अतिरिक्त यंत्र, मंत्र एवं तंत्र का उल्लेख अपने ग्रंथो में कर मानव जीवन को लाभ प्रदान करने का सार्थक प्रयास हजारो वर्ष पूर्व किया था। बुद्धिजीवो के मत से जो व्यक्ति जीवनभर अपनी दिनचर्या पर नियम, संयम रख कर आहार ग्रहण करता हैं, एसे व्यक्ति को विभिन्न रोग से ग्रसित होने की संभावना कम होती हैं। लेकिन आज के बदलते युग में एसे व्यक्ति भी भयंकर रोग से ग्रस्त होते दिख जाते हैं। क्योकि समग्र संसार काल के अधीन हैं। एवं मृत्यु निश्चित हैं जिसे विधाता के अलावा और कोई टाल नहीं सकता, लेकिन रोग होने कि स्थिती में व्यक्ति रोग दूर करने का प्रयास तो अवश्य कर सकता हैं। इस लिये **यंत्र मंत्र एवं तंत्र** के कुशल जानकार से योग्य मार्गदर्शन लेकर व्यक्ति रोगो से मुक्ति पाने का या उसके प्रभावो को कम करने का प्रयास भी अवश्य कर सकता हैं।

ज्योतिष विद्या के कुशल जानकर भी काल पुरुषकी गणना कर अनेक रोगो के अनेको रहस्य को उजागर कर सकते हैं। ज्योतिष शास्त्र के माध्यम से रोग के मूलको पकडने मे सहयोग मिलता हैं, जहा आधुनिक चिकित्सा शास्त्र अक्षम होजाता हैं वहा ज्योतिष शास्त्र द्वारा रोग के मूल(जड़) को पकड कर उसका निदान करना लाभदायक एवं उपायोगी सिद्ध होता हैं।

हर व्यक्ति में लाल रंगकी कोशिकाए पाइ जाती हैं, जिसका नियमीत विकास क्रम बद्ध तरीके से होता रहता हैं। जब इन कोशिकाओ के क्रम में परिवर्तन होता है या विखंडिन होता हैं तब व्यक्ति के शरीर में स्वास्थ्य संबंधी विकारो उत्पन्न होते हैं। एवं इन कोशिकाओ का संबंध नव ग्रहो के साथ होता हैं। जिस्से रोगो के होने के कारण व्यक्ति के जन्मांग से दशा-महादशा एवं ग्रहो कि गोचर स्थिती से प्राप्त होता हैं।

सर्व रोग निवारण कवच एवं महामृत्युंजय यंत्र के माध्यम से व्यक्ति के जन्मांग में स्थित कमजोर एवं पीडित ग्रहो के अशुभ प्रभाव को कम करने का कार्य सरलता पूर्वक किया जासकता हैं। जेसे हर व्यक्ति को ब्रहमांड कि उर्जा एवं पृथ्वी का गुरुत्वाकर्षण बल प्रभावीत कर्ता हैं ठिक उसी प्रकार कवच एवं यंत्र के माध्यम से ब्रहमांड कि उर्जा के सकारात्मक प्रभाव से व्यक्ति को सकारात्मक उर्जा प्राप्त होती हैं जिस्से रोग के प्रभाव को कम कर रोग मुक्त करने हेतु सहायता मिलती हैं।

रोग निवारण हेतु महामृत्युंजय मंत्र एवं यंत्र का बडा महत्व हैं। जिस्से हिन्दू संस्कृति का प्रायः हर व्यक्ति महामृत्युंजय मंत्र से परिचित हैं।

कवच के लाभ :

- एसा शास्त्रोक्त वचन हैं जिस घर में महामृत्युंजय यंत्र स्थापित होता हैं वहा निवास कर्ता हो नाना प्रकार कि आधि-व्याधि-उपाधि से रक्षा होती हैं।
- पूर्ण प्राण प्रतिष्ठित एवं पूर्ण चैतन्य युक्त सर्व रोग निवारण कवच किसी भी उम्र एवं जाति धर्म के लोग चाहे स्त्री हो या पुरुष धारण कर सकते हैं।
- जन्मांगमें अनेक प्रकारके खराब योगो और खराब ग्रहो कि प्रतिकूलता से रोग उतपन्न होते हैं।
- कुछ रोग संक्रमण से होते हैं एवं कुछ रोग खान-पान कि अनियमितता और अशुद्धतासे उत्पन्न होते हैं। कवच एवं यंत्र द्वारा एसे अनेक प्रकार के खराब योगो को नष्ट कर, स्वास्थ्य लाभ और शारीरिक रक्षण प्राप्त करने हेतु सर्व रोगनाशक कवच एवं यंत्र सर्व उपयोगी होता हैं।
- आज के भौतिकता वादी आधुनिक युगमे अनेक एसे रोग होते हैं, जिसका उपचार ओपरेशन और दवासे भी कठिन हो जाता हैं। कुछ रोग एसे होते हैं जिसे बताने में लोग हिचकिचाते हैं शरम अनुभव करते हैं एसे रोगो को रोकने हेतु एवं उसके उपचार हेतु सर्व रोगनाशक कवच एवं यंत्र लाभादायि सिद्ध होता हैं।
- प्रत्येक व्यक्ति कि जेसे-जेसे आयु बढती हैं वैसे-वसै उसके शरीर कि ऊर्जा कम होती जाती हैं। जिसके साथ अनेक प्रकार के विकार पैदा होने लगते हैं एसी स्थिती में उपचार हेतु सर्वरोगनाशक कवच एवं यंत्र फलप्रद होता हैं।
- जिस घर में पिता-पुत्र, माता-पुत्र, माता-पुत्री, या दो भाई एक हि नक्षत्रमे जन्म लेते हैं, तब उसकी माता के लिये अधिक कष्टदायक स्थिती होती हैं। उपचार हेतु महामृत्युंजय यंत्र फलप्रद होता हैं।
- जिस व्यक्ति का जन्म परिधि योगमे होता हैं उन्हे होने वाले मृत्यु तुल्य कष्ट एवं होने वाले रोग, चिंता में उपचार हेतु सर्व रोगनाशक कवच एवं यंत्र शुभ फलप्रद होता हैं।

नोट:- पूर्ण प्राण प्रतिष्ठित एवं पूर्ण चैतन्य युक्त सर्व रोग निवारण कवच एवं यंत्र के बारे में अधिक जानकारी हेतु संपर्क करें।

मंत्र सिद्ध कवच

मंत्र सिद्ध कवच को विशेष प्रयोजन में उपयोग के लिए और शीघ्र प्रभाव शाली बनाने के लिए तेजस्वी मंत्रो द्वारा शुभ महूर्त में शुभ दिन को तैयार किये जाते है। अलग-अलग कवच तैयार करने केलिए अलग-अलग तरह के मंत्रो का प्रयोग किया जाता है।

❖ क्यों चुने मंत्र सिद्ध कवच? ❖ उपयोग में आसान कोई प्रतिबन्ध नहीं ❖ कोई विशेष निति-नियम नहीं ❖ कोई बुरा प्रभाव नहीं

मंत्र सिद्ध कवच सूचि

राज राजेश्वरी कवच Raj Rajeshwari Kawach ……..……………………	11000	विष्णु बीसा कवच Vishnu Visha Kawach ……..…………………...	2350
अमोघ महामृत्युंजय कवच Amogh Mahamrutyunjay Kawach …………………….	10900	रामभद्र बीसा कवच Ramabhadra Visha Kawach ……..…………………	2350
दस महाविद्या कवच Dus Mahavidhya Kawach ……..…………………..	7300	कुबेर बीसा कवच Kuber Visha Kawach ……..………………………	2350
श्री घंटाकर्ण महावीर सर्व सिद्धि प्रद कवच Shri Ghantakarn Mahavir Sarv Siddhi Prad Kawach..	6400	गरुड बीसा कवच Garud Visha Kawach ……..……………………….	2350
सकल सिद्धि प्रद गायत्री कवच Sakal Siddhi Prad Gayatri Kawach …………………...	6400	लक्ष्मी बीसा कवच Lakshmi Visha Kawach ……..……………………	2350
नवदुर्गा शक्ति कवच Navdurga Shakiti Kawach ……..…………………….	6400	सिंह बीसा कवच Sinha Visha Kawach ……..……………………….	2350
रसायन सिद्धि कवच Rasayan Siddhi Kawach ……..……………………..	6400	नर्वाण बीसा कवच Narvan Visha Kawach ……..……………………..	2350
पंचदेव शक्ति कवच Pancha Dev Shakti Kawach ……..…………………	6400	संकट मोचिनी कालिका सिद्धि कवच Sankat Mochinee Kalika Siddhi Kawach ……..……	2350
सर्व कार्य सिद्धि कवच Sarv Karya Siddhi Kawach ……..…………………..	5500	राम रक्षा कवच Ram Raksha Kawach ……..………………………	2350
सुवर्ण लक्ष्मी कवच Suvarn Lakshmi Kawach ……..…………………….	4600	नारायण रक्षा कवच Narayan Raksha Kavach ………………………...	2350
स्वर्णाकर्षण भैरव कवच Swarnakarshan Bhairav Kawach ……..……………	4600	हनुमान रक्षा कवच Hanuman Raksha Kawach ……..………………..	2350
कालसर्प शांति कवच Kalsharp Shanti Kawach ……..…………………..	3700	भैरव रक्षा कवच Bhairav Raksha Kawach ………………………….	2350
विलक्षण सकल राज वशीकरण कवच Vilakshan Sakal Raj Vasikaran Kawach ……..……	3250	शनि साड़ेसाती और ढैया कष्ट निवारण कवच Shani Sadesatee aur Dhaiya Kasht Nivaran Kawach …..	2350
इष्ट सिद्धि कवच Isht Siddhi Kawach ……..………………………….	2800	श्रापित योग निवारण कवच Sharapit Yog Nivaran Kawach ……..………………	1900
परदेश गमन और लाभ प्राप्ति कवच Pardesh Gaman Aur Labh Prapti Kawach ……..…..	2350	विष योग निवारण कवच Vish Yog Nivaran Kawach ……..…………………	1900
श्रीदुर्गा बीसा कवच Durga Visha Kawach ……..………………………..	2350	सर्वजन वशीकरण कवच Sarvjan Vashikaran Kawach ……..………………	1450
कृष्ण बीसा कवच Krushna Bisa Kawach ……..……………………..	2350	सिद्धि विनायक कवच Siddhi Vinayak Ganapati Kawach ……..………..	1450
अष्ट विनायक कवच Asht Vinayak Kawach ……..……………………..	2350	सकल सम्मान प्राप्ति कवच Sakal Samman Praapti Kawach ……..……………	1450
आकर्षण वृद्धि कवच Aakarshan Vruddhi Kawach ……..……………….	1450	स्वप्न भय निवारण कवच Swapna Bhay Nivaran Kawach ……..……………..	1050

वशीकरण नाशक कवच Vasikaran Nashak Kawach ……..…………………….	1450	सरस्वती कवच (कक्षा +10 के लिए) Saraswati Kawach (For Class +10) …………………..	1050
प्रीति नाशक कवच Preeti Nashak Kawach ……..………………………..	1450	सरस्वती कवच (कक्षा 10 तकके लिए) Saraswati Kawach (For up to Class 10) ……………..	910
चंडाल योग निवारण कवच Chandal Yog Nivaran Kawach ……..…………………	1450	वशीकरण कवच (2-3 व्यक्तिके लिए) Vashikaran Kawach For (For 2-3 Person) …………….	1250
ग्रहण योग निवारण कवच Grahan Yog Nivaran Kawach ……..…………………..	1450	पत्नी वशीकरण कवच Patni Vasikaran Kawach ……………………………...	820
मांगलिक योग निवारण कवच (कुजा योग) Magalik Yog Nivaran Kawach (Kuja Yoga) …………	1450	पति वशीकरण कवच Pati Vasikaran Kawach ……………………………….	820
अष्ट लक्ष्मी कवच Asht Lakshmi Kawach ……..…………………………...	1250	वशीकरण कवच (1 व्यक्ति के लिए) Vashikaran Kawach (For 1 Person) ……………………	820
आकस्मिक धन प्राप्ति कवच Akashmik Dhan Prapti Kawach ……..………………..	1250	सुदर्शन बीसा कवच Sudarshan Visha Kawach ……..……………………...…...	910
स्पे.व्यापार वृद्धि कवच Special Vyapar Vruddhi Kawach ……..………………	1250	महा सुदर्शन कवच Mahasudarshan Kawach ……..…………………...………….	910
धन प्राप्ति कवच Dhan Prapti Kawach ……..…………………………...	1250	तंत्र रक्षा कवच Tantra Raksha Kawach …………………………………	910
कार्य सिद्धि कवच Karya Siddhi Kawach ……..……………………….…	1250	वशीकरण कवच (2-3 व्यक्तिके लिए) Vashikaran Kawach For (For 2-3 Person) …………….	1250
भूमिलाभ कवच Bhumilabh Kawach ……..…………………………….	1250	पत्नी वशीकरण कवच Patni Vasikaran Kawach ……………………………...	820
नवग्रह शांति कवच Navgrah Shanti Kawach ……..………………………..	1250	पति वशीकरण कवच Pati Vasikaran Kawach ……………………………….	820
संतान प्राप्ति कवच Santan Prapti Kawach ……..………………………....	1250	वशीकरण कवच (1 व्यक्ति के लिए) Vashikaran Kawach (For 1 Person) ……………………	820
कामदेव कवच Kamdev Kawach ……..………………………………	1250	सुदर्शन बीसा कवच Sudarshan Visha Kawach ……..……………………...…...	910
हंस बीसा कवच Hans Visha Kawach ……..…………………………….	1250	महा सुदर्शन कवच Mahasudarshan Kawach ……..…………………...………….	910
पदौन्नति कवच Padounnati Kawach ……..…………………………….	1250	तंत्र रक्षा कवच Tantra Raksha Kawach …………………………………	910
ऋण / कर्ज मुक्ति कवच Rin / Karaj Mukti Kawach ……..………………………	1250	त्रिशूल बीसा कवच Trishool Visha Kawach ……..…………………………...	910
शत्रु विजय कवच Shatru Vijay Kawach …………………………………..	1050	व्यापर वृद्धि कवच Vyapar Vruddhi Kawach ……………………………...	910
विवाह बाधा निवारण कवच Vivah Badha Nivaran Kawach ………………………..	1050	सर्व रोग निवारण कवच Sarv Rog Nivaran Kawach …………………………....	910
स्वस्तिक बीसा कवच Swastik Visha Kawach ……..………………………….	1050	शारीरिक शक्ति वर्धक कवच Sharirik Shakti Vardhak Kawach ..……………………...	910
मस्तिष्क पृष्टि वर्धक कवच Mastishk Prushti Vardhak Kawach ……………………	820	सिद्ध शुक्र कवच Siddha Shukra Kawach …………………………………	820

वाणी पृष्टि वर्धक कवच Vani Prushti Vardhak Kawach	820	सिद्ध शनि कवच Siddha Shani Kawach	820
कामना पूर्ति कवच Kamana Poorti Kawach	820	सिद्ध राहु कवच Siddha Rahu Kawach	820
विरोध नाशक कवच Virodh Nashan Kawach	820	सिद्ध केतु कवच Siddha Ketu Kawach	820
सिद्ध सूर्य कवच Siddha Surya Kawach	820	रोजगार वृद्धि कवच Rojgar Vruddhi Kawach	730
सिद्ध चंद्र कवच Siddha Chandra Kawach	820	विघ्न बाधा निवारण कवच Vighna Badha Nivaran Kawah	730
सिद्ध मंगल कवच (कुजा) Siddha Mangal Kawach (Kuja)	820	नज़र रक्षा कवच Najar Raksha Kawah	730
सिद्ध बुध कवच Siddha Bhudh Kawach	820	रोजगार प्राप्ति कवच Rojagar Prapti Kawach	730
सिद्ध गुरु कवच Siddha Guru Kawach	820	दुर्भाग्य नाशक कवच Durbhagya Nashak	640





उपरोक्त कवच के अलावा अन्य समस्या विशेष के समाधान हेतु एवं उद्देश्य पूर्ति हेतु कवच का निर्माण किया जाता हैं। कवच के विषय में अधिक जानकारी हेतु संपर्क करें। *कवच मात्र शुभ कार्य या उद्देश्य के लिये >> **Shop Online** | **Order Now**

Gemstone Price List

NAME OF GEM STONE		GENERAL	MEDIUM FINE	FINE	SUPER FINE	SPECIAL
Emerald	(पन्ना)	200.00	500.00	1200.00	1900.00	2800.00 & above
Yellow Sapphire	(पुखराज)	550.00	1200.00	1900.00	2800.00	4600.00 & above
Yellow Sapphire Bangkok	(बैंकोक पुखराज)	550.00	1200.00	1900.00	2800.00	4600.00 & above
Blue Sapphire	(नीलम)	550.00	1200.00	1900.00	2800.00	4600.00 & above
White Sapphire	(सफ़ेद पुखराज)	1000.00	1200.00	1900.00	2800.00	4600.00 & above
Bangkok Black Blue	**(बैंकोक नीलम)**	100.00	150.00	190.00	550.00	1000.00 & above
Ruby	(माणिक)	100.00	190.00	370.00	730.00	1900.00 & above
Ruby Berma	(बर्मा माणिक)	5500.00	6400.00	8200.00	10000.00	21000.00 & above
Speenal	(नरम माणिक/लालडी)	300.00	600.00	1200.00	2100.00	3200.00 & above
Pearl	(मोति)	30.00	60.00	90.00	120.00	280.00 & above
Red Coral (4 रति तक)	(लाल मूंगा)	125.00	190.00	280.00	370.00	460.00 & above
Red Coral (4 रति से उपर)	(लाल मूंगा)	190.00	280.00	370.00	460.00	550.00 & above
White Coral	(सफ़ेद मूंगा)	73.00	100.00	190.00	280.00	460.00 & above
Cat's Eye	(लहसुनिया)	25.00	45.00	90.00	120.00	190.00 & above
Cat's Eye ODISHA	(उडिसा लहसुनिया)	280.00	460.00	730.00	1000.00	1900.00 & above
Gomed	(गोमेद)	19.00	28.00	45.00	100.00	190.00 & above
Gomed CLN	(सिलोनी गोमेद)	190.00	280.00	460.00	730.00	1000.00 & above
Zarakan	(जरकन)	550.00	730.00	820.00	1050.00	1250.00 & above
Aquamarine	(बेरुज)	210.00	320.00	410.00	550.00	730.00 & above
Lolite	(नीली)	50.00	120.00	230.00	390.00	500.00 & above
Turquoise	(फ़िरोजा)	100.00	145.00	190.00	280.00	460.00 & above
Golden Topaz	(सुनहला)	28.00	46.00	90.00	120.00	190.00 & above
Real Topaz	(उडिसा पुखराज/टोपज)	100.00	190.00	280.00	460.00	640.00 & above
Blue Topaz	**(नीला टोपज)**	100.00	190.00	280.00	460.00	640.00 & above
White Topaz	(सफ़ेद टोपज)	60.00	90.00	120.00	240.00	410.00& above
Amethyst	(कटेला)	28.00	46.00	90.00	120.00	190.00 & above
Opal	(उपल)	28.00	46.00	90.00	190.00	460.00 & above
Garnet	(गारनेट)	28.00	46.00	90.00	120.00	190.00 & above
Tourmaline	(तुर्मलीन)	120.00	140.00	190.00	300.00	730.00 & above
Star Ruby	(सुर्यकान्त मणि)	45.00	75.00	90.00	120.00	190.00 & above
Black Star	(काला स्टार)	15.00	30.00	45.00	60.00	100.00 & above
Green Onyx	(ओनेक्स)	10.00	19.00	28.00	55.00	100.00 & above
Lapis	(लाजर्वत)	15.00	28.00	45.00	100.00	190.00 & above
Moon Stone	(चन्द्रकान्त मणि)	12.00	19.00	28.00	55.00	190.00 & above
Rock Crystal	(स्फ़टिक)	19.00	46.00	15.00	30.00	45.00 & above
Kidney Stone	(दाना फ़िरंगी)	09.00	11.00	15.00	19.00	21.00 & above
Tiger Eye	(टाइगर स्टोन)	03.00	05.00	10.00	15.00	21.00 & above
Jade	(मरगच)	12.00	19.00	23.00	27.00	45.00 & above
Sun Stone	(सन सितारा)	12.00	19.00	23.00	27.00	45.00 & above

Note : Bangkok (Black) Blue for Shani, not good in looking but mor effective, **Blue Topaz** not Sapphire This Color of Sky Blue, For Venus

GURUTVA KARYALAY

	YANTRA LIST	EFFECTS
	Our Splecial Yantra	
1	12 – YANTRA SET	For all Family Troubles
2	VYAPAR VRUDDHI YANTRA	For Business Development
3	BHOOMI LABHA YANTRA	For Farming Benefits
4	TANTRA RAKSHA YANTRA	For Protection Evil Sprite
5	AAKASMIK DHAN PRAPTI YANTRA	For Unexpected Wealth Benefits
6	PADOUNNATI YANTRA	For Getting Promotion
7	RATNE SHWARI YANTRA	For Benefits of Gems & Jewellery
8	BHUMI PRAPTI YANTRA	For Land Obtained
9	GRUH PRAPTI YANTRA	For Ready Made House
10	KAILASH DHAN RAKSHA YANTRA	-
	Shastrokt Yantra	
11	AADHYA SHAKTI AMBAJEE(DURGA) YANTRA	Blessing of Durga
12	BAGALA MUKHI YANTRA (PITTAL)	Win over Enemies
13	BAGALA MUKHI POOJAN YANTRA (PITTAL)	Blessing of Bagala Mukhi
14	BHAGYA VARDHAK YANTRA	For Good Luck
15	BHAY NASHAK YANTRA	For Fear Ending
16	CHAMUNDA BISHA YANTRA (Navgraha Yukta)	Blessing of Chamunda & Navgraha
17	CHHINNAMASTA POOJAN YANTRA	Blessing of Chhinnamasta
18	DARIDRA VINASHAK YANTRA	For Poverty Ending
19	DHANDA POOJAN YANTRA	For Good Wealth
20	DHANDA YAKSHANI YANTRA	For Good Wealth
21	GANESH YANTRA (Sampurna Beej Mantra)	Blessing of Lord Ganesh
22	GARBHA STAMBHAN YANTRA	For Pregnancy Protection
23	GAYATRI BISHA YANTRA	Blessing of Gayatri
24	HANUMAN YANTRA	Blessing of Lord Hanuman
25	JWAR NIVARAN YANTRA	For Fewer Ending
26	JYOTISH TANTRA GYAN VIGYAN PRAD SHIDDHA BISHA YANTRA	For Astrology & Spritual Knowlage
27	KALI YANTRA	Blessing of Kali
28	KALPVRUKSHA YANTRA	For Fullfill your all Ambition
29	KALSARP YANTRA (NAGPASH YANTRA)	Destroyed negative effect of Kalsarp Yoga
30	KANAK DHARA YANTRA	Blessing of Maha Lakshami
31	KARTVIRYAJUN POOJAN YANTRA	-
32	KARYA SHIDDHI YANTRA	For Successes in work
33	• SARVA KARYA SHIDDHI YANTRA	For Successes in all work
34	KRISHNA BISHA YANTRA	Blessing of Lord Krishna
35	KUBER YANTRA	Blessing of Kuber (Good wealth)
36	LAGNA BADHA NIVARAN YANTRA	For Obstaele Of marriage
37	LAKSHAMI GANESH YANTRA	Blessing of Lakshami & Ganesh
38	MAHA MRUTYUNJAY YANTRA	For Good Health
39	MAHA MRUTYUNJAY POOJAN YANTRA	Blessing of Shiva
40	MANGAL YANTRA (TRIKON 21 BEEJ MANTRA)	For Fullfill your all Ambition
41	MANO VANCHHIT KANYA PRAPTI YANTRA	For Marriage with choice able Girl
42	NAVDURGA YANTRA	Blessing of Durga

	YANTRA LIST	EFFECTS
43	NAVGRAHA SHANTI YANTRA	For good effect of 9 Planets
44	NAVGRAHA YUKTA BISHA YANTRA	For good effect of 9 Planets
45	• SURYA YANTRA	Good effect of Sun
46	• CHANDRA YANTRA	Good effect of Moon
47	• MANGAL YANTRA	Good effect of Mars
48	• BUDHA YANTRA	Good effect of Mercury
49	• GURU YANTRA (BRUHASPATI YANTRA)	Good effect of Jyupiter
50	• SUKRA YANTRA	Good effect of Venus
51	• SHANI YANTRA (COPER & STEEL)	Good effect of Saturn
52	• RAHU YANTRA	Good effect of Rahu
53	• KETU YANTRA	Good effect of Ketu
54	PITRU DOSH NIVARAN YANTRA	For Ancestor Fault Ending
55	PRASAW KASHT NIVARAN YANTRA	For Pregnancy Pain Ending
56	RAJ RAJESHWARI VANCHA KALPLATA YANTRA	For Benefits of State & Central Gov
57	RAM YANTRA	Blessing of Ram
58	RIDDHI SHIDDHI DATA YANTRA	Blessing of Riddhi-Siddhi
59	ROG-KASHT DARIDRATA NASHAK YANTRA	For Disease- Pain- Poverty Ending
60	SANKAT MOCHAN YANTRA	For Trouble Ending
61	SANTAN GOPAL YANTRA	Blessing Lorg Krishana For child acquisition
62	SANTAN PRAPTI YANTRA	For child acquisition
63	SARASWATI YANTRA	Blessing of Sawaswati (For Study & Education)
64	SHIV YANTRA	Blessing of Shiv
65	SHREE YANTRA (SAMPURNA BEEJ MANTRA)	Blessing of Maa Lakshami for Good Wealth & Peace
66	SHREE YANTRA SHREE SUKTA YANTRA	Blessing of Maa Lakshami for Good Wealth
67	SWAPNA BHAY NIVARAN YANTRA	For Bad Dreams Ending
68	VAHAN DURGHATNA NASHAK YANTRA	For Vehicle Accident Ending
69	VAIBHAV LAKSHMI YANTRA (MAHA SHIDDHI DAYAK SHREE MAHALAKSHAMI YANTRA)	Blessing of Maa Lakshami for Good Wealth & All Successes
70	VASTU YANTRA	For Bulding Defect Ending
71	VIDHYA YASH VIBHUTI RAJ SAMMAN PRAD BISHA YANTRA	For Education- Fame- state Award Winning
72	VISHNU BISHA YANTRA	Blessing of Lord Vishnu (Narayan)
73	VASI KARAN YANTRA	Attraction For office Purpose
74	• MOHINI VASI KARAN YANTRA	Attraction For Female
75	• PATI VASI KARAN YANTRA	Attraction For Husband
76	• PATNI VASI KARAN YANTRA	Attraction For Wife
77	• VIVAH VASHI KARAN YANTRA	Attraction For Marriage Purpose

Yantra Available @:- Rs- 325 to 12700 and Above…..

सूचना

- पत्रिका में प्रकाशित सभी लेख पत्रिका के अधिकारों के साथ ही आरक्षित हैं।
- लेख प्रकाशित होना का मतलब यह कतई नहीं कि कार्यालय या संपादक भी इन विचारो से सहमत हों।
- नास्तिक/ अविश्वासु व्यक्ति मात्र पठन सामग्री समझ सकते हैं।
- पत्रिका में प्रकाशित किसी भी नाम, स्थान या घटना का उल्लेख यहां किसी भी व्यक्ति विशेष या किसी भी स्थान या घटना से कोई संबंध नहीं हैं।
- प्रकाशित लेख ज्योतिष, अंक ज्योतिष, वास्तु, मंत्र, यंत्र, तंत्र, आध्यात्मिक ज्ञान पर आधारित होने के कारण यदि किसी के लेख, किसी भी नाम, स्थान या घटना का किसी के वास्तविक जीवन से मेल होता हैं तो यह मात्र एक संयोग हैं।
- प्रकाशित सभी लेख भारतिय आध्यात्मिक शास्त्रों से प्रेरित होकर लिये जाते हैं। इस कारण इन विषयो कि सत्यता अथवा प्रामाणिकता पर किसी भी प्रकार कि जिन्मेदारी कार्यालय या संपादक कि नहीं हैं।
- अन्य लेखको द्वारा प्रदान किये गये लेख/प्रयोग कि प्रामाणिकता एवं प्रभाव कि जिन्मेदारी कार्यालय या संपादक कि नहीं हैं। और नाहीं लेखक के पते ठिकाने के बारे में जानकारी देने हेतु कार्यालय या संपादक किसी भी प्रकार से बाध्य हैं।
- ज्योतिष, अंक ज्योतिष, वास्तु, मंत्र, यंत्र, तंत्र, आध्यात्मिक ज्ञान पर आधारित लेखो में पाठक का अपना विश्वास होना आवश्यक हैं। किसी भी व्यक्ति विशेष को किसी भी प्रकार से इन विषयो में विश्वास करने ना करने का अंतिम निर्णय स्वयं का होगा।
- पाठक द्वारा किसी भी प्रकार कि आपत्ती स्वीकार्य नहीं होगी।
- हमारे द्वारा पोस्ट किये गये सभी लेख हमारे वर्षो के अनुभव एवं अनुशंधान के आधार पर लिखे होते हैं। हम किसी भी व्यक्ति विशेष द्वारा प्रयोग किये जाने वाले मंत्र- यंत्र या अन्य प्रयोग या उपायोकी जिन्मेदारी नहिं लेते हैं।
- यह जिन्मेदारी मंत्र-यंत्र या अन्य प्रयोग या उपायोको करने वाले व्यक्ति कि स्वयं कि होगी। क्योकि इन विषयो में नैतिक मानदंडों, सामाजिक, कानूनी नियमों के खिलाफ कोई व्यक्ति यदि नीजी स्वार्थ पूर्ति हेतु प्रयोग कर्ता हैं अथवा प्रयोग के करने मे त्रुटि होने पर प्रतिकूल परिणाम संभव हैं।
- हमारे द्वारा पोस्ट किये गये सभी मंत्र-यंत्र या उपाय हमने सैकडोबार स्वयं पर एवं अन्य हमारे बंधुगण पर प्रयोग किये हैं जिस्से हमे हर प्रयोग या मंत्र-यंत्र या उपायो द्वारा निश्चित सफलता प्राप्त हुई हैं।
- पाठकों कि मांग पर एक हि लेखका पूनः प्रकाशन करने का अधिकार रखता हैं। पाठकों को एक लेख के पूनः प्रकाशन से लाभ प्राप्त हो सकता हैं।
- अधिक जानकारी हेतु आप कार्यालय में संपर्क कर सकते हैं।

(सभी विवादो केलिये केवल भुवनेश्वर न्यायालय ही मान्य होगा।)

FREE
E CIRCULAR

गुरुत्व ज्योतिष साप्ताहिक ई-पत्रिका

21 से 27 अक्टूबर-2018

संपादक

चिंतन जोशी

संपर्क

गुरुत्व ज्योतिष विभाग

गुरुत्व कार्यालय

92/3. BANK COLONY,
BRAHMESHWAR PATNA,
BHUBNESWAR-751018,
(ODISHA) INDIA

फोन

91+9338213418, 91+9238328785

ईमेल

gurutva.karyalay@gmail.com,
gurutva_karyalay@yahoo.in,

वेब

www.gurutvakaryalay.com

www.gurutvajyotish.com

www.shrigems.com

http://gk.yolasite.com/

www.gurutvakaryalay.blogspot.com

हमारा उद्देश्य

प्रिय आत्मिय

बंधु/ बहिन

जय गुरुदेव

जहाँ आधुनिक विज्ञान समाप्त हो जाता हैं। वहां आध्यात्मिक ज्ञान प्रारंभ हो जाता हैं, भौतिकता का आवरण ओढे व्यक्ति जीवन में हताशा और निराशा में बंध जाता हैं, और उसे अपने जीवन में गतिशील होने के लिए मार्ग प्राप्त नहीं हो पाता क्योकि भावनाए हि भवसागर हैं, जिसमे मनुष्य की सफलता और असफलता निहित हैं। उसे पाने और समजने का सार्थक प्रयास ही श्रेष्ठकर सफलता हैं। सफलता को प्राप्त करना आप का भाग्य ही नहीं अधिकार हैं। ईसी लिये हमारी शुभ कामना सदैव आप के साथ हैं। आप अपने कार्य-उद्देश्य एवं अनुकूलता हेतु यंत्र, ग्रह रत्न एवं उपरत्न और दुर्लभ मंत्र शक्ति से पूर्ण प्राण-प्रतिष्ठित चिज वस्तु का हमेंशा प्रयोग करे जो १००% फलदायक हो। ईसी लिये हमारा उद्देश्य यहीं हे की शास्त्रोक्त विधि-विधान से विशिष्ट तेजस्वी मंत्रो द्वारा सिद्ध प्राण-प्रतिष्ठित पूर्ण चैतन्य युक्त सभी प्रकार के यन्त्र- कवच एवं शुभ फलदायी ग्रह रत्न एवं उपरत्न आपके घर तक पहोचाने का हैं।

सूर्य की किरणे उस घर में प्रवेश करापाती हैं।

जीस घर के खिड़की दरवाजे खुले हों।

GURUTVA KARYALAY

92/3. BANK COLONY, BRAHMESHWAR PATNA, BHUBNESWAR-751018, (ODISHA)
Call Us - 9338213418, 9238328785
Visit Us: www.gurutvakaryalay.com | www.gurutvajyotish.com | www.gurutvakaryalay.blogspot.com
Email Us:- gurutva_karyalay@yahoo.in, gurutva.karyalay@gmail.com

GURUTVA KARYALAY * BHUBANESWAR *

GURUTVA JYOTISH

Weekly 21-27 OCT-2018